CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श	दिनकालेश	
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	३।।	१
कालवे	कालवे	उद्वेगवे	अमृतवे	रोगवे	लाभ	शुभवे	३।।	२
लाभवे	शुभवे	चरवेला	कालवे	उद्वेगवे	अमृत	रोगवे	३।।	३
अमृत	रोगवे	लाभवे	शुभवे	चरवेला	काल	उद्वेगवे	३।।	४
कालवे	उद्वेगवे	अमृतवे	रोगवे	लाभवे	चरवे	शुभवे	३।।	५
शुभवे	चरवेला	कालवे	उद्वेगवे	अमृतवे	रोगवे	लाभवे	[illegible]	६
रोगवे	लाभवे	शुभवे	चरवे	कालवे	उद्वेग	अमृत	३।।	७
उद्वेगवे	अमृतवे	रोगवे	लाभवे	शुभवे	चरवे	कालवे	३।।	८
सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श	रात्री	
शुभरा	चररात्री	कालरात्री	उद्वेगरा	[illegible]	रोगरा	[illegible]	३।।	१
[illegible]	रोगरा	लाभरा	शुभरा	चररा	काल	उद्वेग	३।।	२
[illegible]	कालरा	उद्वेगरा	[illegible]	रोगरा	लाभ	शुभरा	३।।	३
रोगरा	लाभरा	शुभरा	चररा	कालरा	उद्वेग	अमृतरा	३।।	४
कालवे	उद्वेगरा	[illegible]	रोग	लाभ	शुभ	चर	३।।	५
[illegible]	[illegible]	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	३।।	६
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	शुभ	चर	काल	३।।	७
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	रोग	लाभ	३।।	८

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशाय नमः॥ अथशीघ्रबोधवा[illegible] लिक मूल
भासयंते जगद्भासा नत्वा भास्वंतमव्ययं॥ क्रियते काशि
ग्रहः॥ १॥ टीका॥ काशीनाथजो है आचार्यने सूर्यको न[illegible]
है सूर्य जिनकी आभा जो है संसार सो प्रकाशित है वड़ा रके[illegible]
कहिये अविनाशी जिनको नाही है विनाशकाल॥ ऐसे[illegible]
रि॥ ज्योतिष शास्त्र के अनेक ग्रंथांतरन को [illegible] लेकरि [illegible]
यह करते है॥ १॥ मूल॥ रोहिण्युतरेवते [illegible] स्वातिमृगो[illegible]
वहलश्च वीवाहे मंगलप्रदा॥ २॥ [illegible] हुणी उत्तरा [illegible] नी
स्वाति मृगशिर मघा अनुराधा हस्त ये ग्यारह नक्षत्र विवा[illegible] मंगलके दा
ता है॥ २॥ इति विवाहनक्षत्राणि॥ मूल॥ माघे धनवती कन्या फाल्गुने शुभगा
भवेत्॥ वैशाखे च तथा ज्येष्ठे पत्युरत्यंत वल्लभा॥ ३॥ टीका॥ माघमास में वि
वाह करे तो कन्या धनवती होई॥ फाल्गुन में सौभाग्यनी होई वैशाख तथा
जेष्ठ में विवाह है तो॥ अपने पतन को अत्यंत प्यारी होई॥ ३॥ मूल॥ आषाढे कु

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्री·टी॰ लग्नदिग्धादंभेमासाश्चवर्जिताः॥ मार्गशीर्षमपि च्छंति विवाहे केपि कोविदाः॥ ४॥टीका॥ जो आषाढमासमें विवाह करैतो कुलकी वृद्धि होइ॥ इन मासका हियेः॥ औरजो महीने है विवाहमें वर्जित है॥ और मार्गशीर्षजो है अगहन सो कोउ एक दुई आचार्य विवाह को शुभ कहत है॥ ४॥ [illegible]
मास॥ मूल॥ अमावस्या चरिक्ता चवारवेला [illegible] रमारा
श्च वर्जनीयाः प्रयत्नतः॥ ५॥ टीका॥ [illegible] श्री रिल [illegible] ४
।५।१४॥ वारवेला श्री रजन्मको नक्षत्र [illegible] वार॥ सं
रगांडांत मूलये विवाहको यत्न पूर्वक वर्जे
रिक्ता पूर्णाश्च तिथयः क्रमात्॥ वारत्रयं समा
है॥ टीका॥ नंदा भद्रा जया रिक्ता पूर्णा च नाम तिथि
कहियै॥ १।६।११॥ भद्रा कहियै॥ २।७।१२॥ जयासंज्ञा
॥ ५।१०।१५॥ प्रतिपदा से गनिये॥ इति तिथिनाम॥ मूल॥
योमंगलमिनंदने॥ चंद्रपत्रेपंचमश्च टेवा चाप्यै [illegible] थाह

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लाकहतेहै रविवारकौ ४ याममें अर्द्धयाम औ॰ मूल
धगुरवारकौ ८ याममाई ७ ॥ मूल ॥ ईसप्रभृत्तनीयःकौ [illegible]
हार्द्धं शुभे कार्यं वारवेला चक्रम्याते ॥ ८ ॥ [illegible] ॥ इकौ [illegible]
इसप्रकारसौ इनयामनके अर्द्धयाममें वारवेला [illegible] चक्र [illegible] के
[illegible] तहै ॥ इकौ मकौ ठके च[illegible]ले [illegible] शुभमा[illegible]
वेला ॥ मूल ॥ मद्यु[illegible]
दग्धातिथिंच [illegible] ॥ मीन[illegible]
का ॥ भद्रा [illegible] वारमी[illegible]
[illegible]त्यम घंटक योग [illegible] दग्धातिथि [illegible]तनद्द [illegible]
लिकयोग इतने दोषये विवाहमैं वर्जित है ॥ ९ ॥ मूल ॥ दशम्यां च तृ[illegible]
[illegible]पत्ते परे दले ॥ सप्तम्यांच चतुर्दश्यां विष्टिः पूर्वे दले स्मृता ॥ १० ॥ एकादश्यां
चतुर्थ्यां च शुक्ले पक्षे परे दले ॥ अष्टम्यां पूर्णिमायां च विष्टिः पूर्वे दले स्मृता ॥
११ ॥ टीका ॥ अब कृष्ण शुक्लपक्षकी जौनसी तिथिनमें पूर्वदल अथवा परदल

अथ वारवेला चक्रं

४	७	२	५	८	३	६	याम
३॥	३॥	३॥	३॥	३॥	३॥	३॥	घटी
र॰	चं॰	मं॰	बु॰	वृ॰	शु॰	श॰	वार

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

टी॰टी॰ विषेविष्टीजाभद्राहोतीहै॥ सोचक्रमैंविषैंसमफलीजियै॥ १०।११॥ मूल॥

...अथभद्रापर्वदलतिथिचक्र			
कृष्णपक्ष	३	१०	पराह्नतिथिः
कृष्णपक्ष	७	१४	पूर्वाह्नतिथिः
शुक्लपक्ष	४	११	पराह्नतिथिः
शुक्लपक्ष	८	१५	पूर्वाह्नतिथिः
इतिभद्रातिथिचक्रम्			

मेषवृषमकरवषककर्कटस्वर्गेकंमामिथुनमलाध

नलागे॥ कुंभमीनस्त्रलिके... स्तुविंशतिभद्रावि

भुवनमध्ये॥ १२॥ टीका॥ येभद्रावागोले... चंद्रमा

स्तुलोक... पाताल... करताहै

मेष... श्री... माने...

लोकमैंजानि... वार॥ ...

भद्रापाताललोकमैं ... कुंभमीन वृश्चिकजै

मैंवासकरतेजानियै॥ १२॥ मूल॥ स्वर्गेभद्रा...

स्तुलोकेयदाविष्टिः सर्वकार्यविनाशिनी॥ ...

तौशुभकार्येकोंकरै श्रीपातालमैंहोय...

कमैंहोयतौसर्वकार्यविनाशकरै॥ १३॥ मूल॥ ...

स्वर्गेधोमध्ये॥ ऊर्ध्वस्था स्वर्गोमाभद्रासन्मुखेन शाष

प ३

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

[illegible]
[illegible]
मध्यन

लोकमेभद्राहोयतोसन्मुखकीहुये पातालमे ओर [illegible]
इनमेजोसन्मुखभद्राहोयजोमस्तकीदाताहोय [illegible]
सोरात्रौभद्रायदादिने ॥ तदाविष्टियदादोषं [illegible] संकी [illegible]
जोकृष्णपक्षमेसप्तमीचौदशकी ॥ ओरशुक्लपक्ष [illegible] के
वेदलादिवासंज्ञकहे ॥ सोरात्रिमेंजानिये के चाले [illegible]
मे ॥ ३ ॥ ११ पहिलीपरदलभद्रारात्रिसंज्ञकहे ॥ सो [illegible]
येभद्रासुखकीदाताहे ॥ १५ ॥ इतिभद्रा [illegible] ॥ मीन [illegible]
धोवषकुंभयोः ॥ मेषककर्केदयोषष्ठी [illegible] वाष्टमी [illegible] मी [illegible] घन २
केसिंहेद्वादशीमकरेतुले ॥ एतास्तिथयोदग्धाशुभेन [illegible] जेयेत ॥ १६
टीका ॥ मीनकेधनकेसूर्येनमेद्वितीया २ वृषकेकुंभकेसूर्येन [illegible] चौथ ४
मेषककर्केकेसूर्येनमे छठि ६ मिथुनकेसूर्येनमे अष्टमी [illegible] वृश्चिककेसिंहके
सूर्येनमेदशमी १० ॥ मकरतुलकेसूर्येनमेद्वादशी १२ इनसंक्रांतिनमे ॥ ज्ञाना
तिथैंदग्धाजानिये ॥ येशुभकर्मकेविषेवर्जितकरीहे ॥ १६ ॥ इतिदग्धातिथयः ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मूल॥ मासांते दिनमेकं तु तिथ्यंते घटिकाद्वयं॥ घटिकात्रयं च भांते च विवा
हे परिवर्जयेत्॥१८॥ इति॥ टीका॥ मासांत कहिये संक्रांत के अंत का एक दिन
तिथ्यंत कहते है तिथिके अंत की द्वयं घरी भांत ३ [illegible] हे नक्षत्र के [illegible]
विवाह में वर्जित है॥१८॥ मूल॥ मासांते म्रियते कन्या तिथ्यंते स्याद्दरिद्रिणी
नक्षत्रांते च वै धर्मे विधवा भवेत्॥१९॥ टीका॥ मा[illegible] भाम
परे तो भाम [illegible] कहते है॥ कं[illegible] होई तिथ्यं[illegible]
ई नक्षत्र के अंत में विधवा होई॥ नक्षत्र[illegible] ह होय तो
मृत्यु होय॥१९॥ मूल॥ सूर्ये च सप्तमी सोमे षष्ठ[illegible] मे च[illegible]
दे वेज्ये तृतीया भृगुनंदने॥२०॥ द्वितीया वर्जनीया[illegible]
का [illegible]हियोगो यं विवाहादौ न शस्यते॥२१॥ टीका॥ [illegible]
सो चक्र में समझ लीजिये॥ इन वारन को इन तिथिन को [illegible]
लिक योग होता है॥२१॥ इति कुलिक योग॥ [illegible]
[illegible] विडाल[illegible]वर्गकः॥ [illegible]नामा[illegible]

सप्तमीं रविवारे [illegible] संवर्त्तक
दग्धे २

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गोवृक्करस्मृताः॥२२॥टीका॥ अवर्गादि अष्टावर्ग [illegible]
ये कौन कहत है जाके नाम का जो अक्षर पहिलो कुं [illegible]
ये॥ तिनमें अ इ उ ए ये अक्षर अवर्ग है॥ [illegible]
ङ ये बिलावर्ग॥ चछजझञ सिंहवर्गो॥ टठडढण [illegible]
सर्पो [illegible] श्वानवर्ग [illegible] गो पिपवर्गो मूषककस्मृताः॥ [illegible]
वर्गो मेष निश्रितः॥२३॥टीका॥ तथदधन [illegible]
वर्गः॥ यरलव मृगावर्ग॥ शषसह मेष [illegible] २॥मूल॥ [illegible]
आत्मस्थै मित्र संज्ञकः॥ उदासीने [illegible] यश्च वर्गो भेदाश्च [illegible]
का॥ अपने वर्ग सों पांचई वर्ग तिसे जानिये चौथ सों शिक्षता आप तो सरी
वर्ग सों उदासीनता है॥२४॥ इति अष्टकवर्ग॥मूल॥ अश्विनी मृग रेवत्यो
हस्तपुष्यपुनर्वसू॥ अनुराधाश्रुतिस्वातिकण्ठे देवतागणाः॥२५॥
टीका॥ अश्विनी मृगशिर रेवती हस्त पुष्य पुनर्वसु अनुराधा श्रवण
शतभिषा ये देवतागण कहिये॥२५॥मूल॥ तिस्रः पूर्वा उत्तराश्च तिस्रो

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

शी॰ग्री॰ द्वौ च रोहिणी ॥ भरणी च मनुष्याख्यो गणो शोकथितो बुधैः ॥ २६ ॥ टीका
स्वातीनो ३ उत्तरातीनो ३ आर्द्रा रोहिणी भरणी इन मैं जन्म होय तौ म
नुष्यगण जानियै ॥ २६ ॥ मूल ॥ कृत्तिका च मघा श्लेषा विशाखा शतता
रका ॥ चित्रा ज्येष्ठा धनिष्ठा च मूलं रक्षोगणः स्मृताः ॥ २७ ॥ टीका ॥ कृत्तिका
मघा श्लेषा विशाखा शतभिषा चित्रा धनिष्ठा ज्येष्ठा मूल ... राक्षसग
णः ॥ २७ ॥ मूल ॥ स्वगणे परमा प्रीतिर्मध्यमा देवमानु... नुष्यराक्ष
योर्मृत्युः कलहो देवराक्षसे ॥ २८ ॥ टीका ॥ ... स्त्रीपुरु...
तौ अधिक प्रीति होइ देवमनुष्य होय तौ मध्यम प्री...
ह राक्षसगणसौ मृत्यु होइ ॥ और देवगण अरु रा...
२८ ॥ मूल ॥ षट्के स्त्रीपुंसयोर्वैरं मृत्युस्यादष्टमे ध्रुवं ॥ द्वि...
मे पंचमे कली ॥ ३० ॥ टीका ॥ स्त्री की रासि ते पुरुष की रा...
जानियै ॥ और स्त्री पुरुष ते आठवे राशि ... तौ मृत्यु...
रुष होय तौ शुभ है और दूसरे बारहे होय तौ ॥ दारिद्र होइ

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पांचवेंपहोयतौकलहहोय॥३०॥इतिराशिमेलनं॥ [illegible]
रविप्राः राशिमेषोहरिर्धनुः॥शूद्रायुग्मंतुलाकुं [illegible]
३१॥टीका॥मीन वृश्चिक कर्क येराशैब्राह्मणवर्णज [illegible]
त्रीवर्णहै मिथुन तुलाकुंभ येशूद्रवर्णहै कन्यावृष [illegible]
है॥३१॥मूल॥नोतमामहहेतकमाब्राह्मणीचाविशे [illegible]
णश्चब्राह्मणामहशोयदि॥३२॥विप्रवर्णि [illegible] योना [illegible]
धुवंभवंतिवैधव्यंशुक्रमहृष्ठितायदि [illegible] ॥टीका॥ [illegible]
होयतौ॥अनउहवहीनवर्णहोयतौ [illegible] निश्चैम [illegible] उत्तम
वर्णकन्यातैविवाहवर्जितहः॥ [illegible] ब्राह्मणी विशेषक [illegible] हः॥३२॥
अतजोब्राह्मणवर्णकन्यासो शूद्रवर्णवरकोविवाहहोयतौ जोशुक्रह
कीकंन्याहोयतौ सोवीनिश्चयकरविधवाहोय॥३॥मूल॥पौष्णादिकं [illegible]
५२ मणिविपर्वामाद्रादिवंचौदशमध्यमाः॥पौरंदराद्यंनवकुमवजंपंचम
गंगणाकोविदराधाः॥३४॥टीका॥रेवतीनक्षत्रआदिदेषहहैनक्षत्रपूर्वभाग

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

शी॰टी॰ काहियै औरआर्द्रादि दैकै१२द्वादशनक्षत्रमध्यभागकेहैं श्लेषादिदैकै
षनक्षत्रपरभागकाहियेहै॥२४॥मूल॥पूर्वभागेपति [illegible] मध्यभागेचकन्यका
परभागेचनक्षत्रेद्वयोःप्रीतिर्भवेद्यदि॥२५॥टीका॥पूर्वभागीपतिहोइ औरम
ध्यभागीस्त्रीहोइतौपतिश्रेष्ठकाहियै॥जोमध्यभागीस्त्रीऔरपरभागीपुरुष
होयतौस्त्रीश्रेष्ठकाहियै॥औरजो[illegible]दोनौपरभागीहोय[illegible]आपसमें
अधिकप्रीतिहोय॥२५॥मूल॥सिंहो[illegible]:सर्वेद्वि[illegible]
मत्स्याजलचरास्तेषांमध्यानेसरीसृपाः॥२[illegible]टीका॥सि[illegible]म
सबहै॥औरजीवपर्यंतएकसिंहनाहीहः॥द्वि[illegible]औरम
नुष्यकेसबवसहै॥औरजलकेजीवजोहःतेमनुष्यके
भक्ष्येविहूसौंडरतीहै॥२७॥मूल॥मकरस्यपूर्वभागोमेष
तुष्पदाःकीटसंज्ञाकर्कसर्पश्चवृश्चिकः॥२८॥तुलाद
धनुषोच्यते॥द्विपदहैतेमृगार्धेतुकुंभमीनौजलाश्रितौ
शिकोपाहलाआधाभाग उत्तराषाढकेतीनिचरणक

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

एपर्यंतको चंद्रमाः॥ अजमेष अजासिंह॥ अरुश्वा धी...
ऋष्यद चौपाइको संज्ञा जानिये॥ श्रीरश्च... ...राशावी...
संज्ञाह॥ २५॥ श्रीरतला मिथुन कंन्या॥ ...अथाधी...
द्रजानिये॥ कुंभमीनजलचरजानिये॥ २६॥ इति राशिचक्र

अश्वि	रे.	पु.	रो.	आ	पूफा	स्वा	जे.	चि.	उफा	श.	अभि	पुन	उफा	योनि
ध.	म.	कृ.	मृ.	मृ.	उफा	ह.	अनु.	वि.	प्रा	पूफा	जि	श्ले	उषा	
०	०	०	०	०	म.	०	०	०	०	०	ते	०	[illegible]	
घोटु	गज	केरी	नाग	स्वान	पूष	भेसा	हिरन	व्याघ्र	वानर	सिंह	बिलाव	नकुल		योनि

नीचं... रत्नो... को... मृगाः॥ ...द्रा...

पिस्वानमूषकःफाल्गुनीमघा॥ माजीरोदितिरश्लेषा गौ...तरावयं
म॥ महिषो स्वातिहस्तौ च मचो ज्येष्ठानुराधिका॥ व्याघ्रौ चित्राविशाखे च
श्रुत्वाषाढौ च मर्कटौ॥ २२॥ शतभाद्रपदासिंहो नकुलश्चाभिजित्स्मृतः॥
योनयः कीर्तिता भांनां वैरमैत्री विचार्यतां॥ २३॥ टीका॥ इन चारो श्लोको
का अर्थ योनिचक्रमें समझलेना॥ चौदह योनिकौ इनके सनुवद सबके॥ ज

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

६

शी॰टी॰ पने अपने कोंष्ट कलहहोइ॥ इतियोनिविचारनिर्णय॥ अथयोनिवैरं
मल॥ गोव्याघ्रगजसिंहमुष्कमहिषं वैरं चव मभ्दा[illegible]वैरवानरमेष
कंचसमहतद्विडौलोवैरं॥ लोकानांव्यवहारतो [illegible] रंपरस्परो
न्नपमस्यपौरपिसदावर्ज्यं शुभमत्पयोनिः॥ ४४॥ टीका॥ गाईमेंडियासे
वैर हाथीसिंहकोवैर नवलस[illegible]कोवैर वानरमेढाकोवैर [illegible]नावम
बकसोवैर ऐसेवैरभावत्यागिके [illegible]नीतिविचा[illegible]॥
स्त्रीपुरुष॥ औरस्वामीसेवकसो॥ औरसब [illegible]कलोकि[illegible]
लनिर्वाहहेतुमेंजरूरहै॥ ४४॥ इतियोनि[illegible]
जोऽष्वसंख्याहीनवपंचम॥ वरस्यपंचमेकंन्या[illegible]
तत्रिकोण[illegible]या[illegible]पुत्रपौत्रसुखावहं॥ षडाष्टकेम[illegible]
विचारयेत॥ ४६॥ टीका॥ जोपुरुषकीराशितें कं[illegible]
९।५ पतौतिसवरकेपिताकीमृत्युहोई औरजो[illegible]
मा॰१ कीराशि५ पंचईहोयतौ ताकीमाताकीमृत्युहोय

श्वेतांबर
न्यदापचना
न्याडयना
द्विदं २

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राशिले ५ पंचई राशिकन्याकोहोय॥ कंन्याकोराशिते॥
यतो यह त्रिकोणशुभ है॥ पुत्रपौत्रकेशुभहै सवकी
आठवेंहोयतोमत्युहोय तातेयत्नकरवि चारिये॥ ४६
ल॥ वरस्यमा‍कन्यवलंकंन्यायांच गुरोर्वलं॥ दयोः
नान्यथा भवेत्॥ ४७॥ टीका॥ वरकोसूर्यवल चाहिये
तिकावलचाहिये॥ औरवरकंन्याको चंद्रमाकावल
अष्टमेचचतुर्थेच नादशे च दिवाकरे॥ वि तोवरोम
शयः॥ ४८॥ टीका॥ जोवरकोसूर्य होयतो
होय यामेंसंशयनाही॥ मूल॥ जन्मन्यथो तीयेवापंचमे मेपिवा
नवमेचदिवानाथे पूजयापाणिपीडनं॥ ४९॥ एकादशेतृतीयेवाषष्ठे
वादशमेपिवा॥ वरस्यशुभदो नित्यंविवाहेदिननायकः॥ ५०॥
जोवरकीराशितेसूर्य॥ १॥ ५॥ ९॥ होयतो यो परिहारवाकोसो॥ सूर्य
कीपूजादानजपादिक करकेविवाहशुभहै॥ ४९॥ औरजो॥ ११॥ ३॥ ६

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१०॥ रविहोयतौ विवाह शुभकाहियै कल्याणकोदाताहै॥५०॥ इतिरवि
वलं॥ मूलं॥ ग्रुष्टमेद्वादशेवापि चतुर्थैवा बृहस्पतौ॥ प्रजातवृनकते
कांविवाहे प्राणनाशक॥५१॥ मूलं॥ षष्ठेजन्मनि[illegible]सप्तलाये दशमे
पिवा॥ भरिप्रज्ञाप्रजितस्या[illegible]शुभकारकाः॥ ५४॥ टीका॥ जो
कन्याको बृहस्पति॥ ८॥ ४॥ १२॥ १०॥ वर्षे प्रजादानाहि देवा[illegible]कोजियै
तौशुभहै॥ ५२॥ मूलं॥ एकादशे[illegible]पंचमे[illegible]नवमे
चधराचार्येकन्यायाः शुभकारकः॥ ५३॥ [illegible]का॥ जो[illegible]नि

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

षोवरोहली॥ दशवर्षेभवेत्कन्यातत्ऊर्ध्वं रजस्वल
वर्षेमेगोरीकोअवस्थाजानियै॥ औरनववर्षेमेरोहि

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संज्ञाजानियै॥ ताकेउपरांतराजत्वलाकहतेहै॥ ५
रौ वैलं [illegible] यंरोहिणीभाक्करस्य च॥ कंन्याचंद्रबलं [illegible]
५५॥ टीका॥ गोरीकोवृहस्पतिकाबलदेवे रोहि [illegible]
यै॥ औरकंन्याकोचंद्रबलमत्र्येहः॥ ५५॥ मूल॥ श्र [illegible]
लमनस्तोषंद्वितीयके॥ तृतीयेधनसंपत्ति चतुर्थे [illegible]
हानवृद्धिस्त्रषष्ठेसंपतिसत्तमे॥ सप्तमेराजसन्मान [illegible]
५७॥ नवमेधर्मलाभंच दशमेमानसंए [illegible] ॥ एका [illegible]
हानिमेवच॥ ५८॥ टीका॥ श्रवक [illegible] औरखरव [illegible] नकहे
हैताकोरसचक्रमैलमकलीलिये॥ ५६॥ ५७॥ ५८ [illegible] धान मतेन वि
शेषण॥ मूल॥ गुरुविंदुर्बलात्गोरी [illegible] नविंदुबलात्गौ [illegible] ॥ रविविंदु
बलजाकन्याश्रोदाल [illegible] नवला [illegible] ता॥ ५८॥ टीका॥ गोराजोहैताकोबृ
हस्पतिचंद्रमाएतेतीनहूकोबलविचारियेतोशुभहै॥ ५९॥ मूल॥ जी
वौजीवायदोताचंद्रबलहालाचचंद्रमाः॥ तेजदाता [illegible] मिदाता

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शी·टी· महीसुतः॥ ६४॥ जीवहीन सतोकन्या सूर्येहीन सतोवरः॥ चंद्रहीनगता
लक्ष्मी स्थानहानिकुजं विना॥ ६१॥ टीका॥ वृहस्पतिजीवकी रक्षाके
दाताहै चंद्रमाधनके दाताहै सूर्यतेजके दाताहै मंगलभूमिके दाताहै
६० वृहस्पतिहीन होयतौकन्याकी मृत्यु होय॥ जोसूर्यहीन होयतौवर
की मृत्यु होय चंद्रमाहीनहोयतौ लक्ष्मी नाशहोय मंगल[illegible]हीनहोय
तौस्थानहानिकरै॥ ६१॥ मूल॥ [illegible] नागलोके [illegible]
ददैत॥ कन्यादद्यान्मृत्युलोके रौरवं[illegible] जस्वला[illegible]
दानकरैतौ पाताललोकके सुखकोप्राप्तहोय॥ [illegible]
वैकुंठवासपावै जोकन्याकरैतौ मृत्युलोकके सु[illegible]
मूल॥ संप्राप्ते द्वादशेवर्षे कन्यायोनविवाहिता॥ मासेमा[illegible] मूल
तस्याः पिबति शोणितं ६३॥ टीका॥ जोबारहेवर्षे[illegible]पित
तौ महीनामहीना प्रति जो रजस्वला होय उसक[illegible]
ष्माताकोदानकरनेकनाहोताहै॥ ६२॥ मूल॥ [illegible] सर्व[illegible]

जातिद

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रुद्धिर्नजायते॥ प्रजाभिः सकुनेवोपितस्यात्स्नातं हदवतिरे॥ गौरी [illegible]
का॥ जो नारहै वारह वर्षकी कंन्याहोयतो वहस्मा [illegible]
लगनविचारके प्रजादानकरके विवाहकीजे॥ ६४॥ [illegible] वल [illegible]
ताचेवजेष्ठ भ्रातातथैवच॥ त्रयस्थनरकं यांति दृष्ट्वा [illegible]॥ [illegible]
६५॥ टीका॥ जो रजस्वलाकन्याको देषै मातापिता [illegible] रवनी
नरकके अधिकारी होते है॥ ६५॥ अथनाडीविचार [illegible]
तकेवापि श्रुतमध्यानि भानिच॥ आपिलात [illegible] मेत्ति [illegible] लि
रेवत्॥ ६६॥ ऊर्द्धंगावेद्दरे रवौ [illegible] देशे [illegible] लिवे
चक्रं९ ज्ञानीनाडी चक्रं वदेद्बुधः॥ ६७॥ नाडीदोषस्तु विप्राणां [illegible] मंश्चनाप्ये
यः॥ गणदोषस्तु वैश्येषु योनि [illegible] पादजैः॥ ६८॥ टीका॥ आदिमध्यश्रु
त अंतमध्यआदि यापकार अश्विनीते रेवती पर्यंत मानिये॥ ६६॥ चारेर
खावडी और दशरेखा तिरछी याही प्रकार सलाइ सको जाको नाडीचक्र
पंडितजनकहतेहः॥ ६७॥ नाडीको विचार ब्राह्मणको चाहिये क्षत्रीगण को

९

शी॰टी॰ वैश्यकोयोनि शूद्रकोविचारविशेषकरवैचाहिये ॥ ६८ ॥ मूल ॥ एकनाडी
चर [illegible]नक्षत्रेदंपत्योर्मरणंध्रुवं ॥ सेवायांचभवेद्धानिर्विवाहेचाशुभंभवेत् ॥
६९ ॥ टीका ॥ जोवरकन्याएकनाडीकेनक्षत्रनविषै[दो]नोकाजन्महोयतो
दोनोकीमृत्युहोय ॥ औरएकनाडीकेवेधमेसेवाचाकरीकरतोहानिहो
य ॥ ६९ ॥ मूल ॥ आदिनाडीवरंहंतिमध्यनाडीचकन्यका ॥ अंत्यनाडीद्वयो
मृत्युःनाडीदोषंत्यजेद्बुधैः ॥ ७०

अ	आ	पु	उ	ह	ज्ये	ऊ	श	रे	आदि
भ	मृ	पु	पू	चि	ऽनु	[illegible]	ध	उ	मध्य
कृ	रो	श्लो	म	स्वा	वि	[illegible]	[illegible]	[illegible]	अंत

टीका ॥ जोआदिनाडीकावेधहो
यतोवरकोमारिडारतहै ॥ औरम
ध्यकोवेदहोयतोकन्याकोदूषि
ततहै ॥ अंतनाडीकावेधलगैतोदोनोकीमृत्युहोय ॥ ७[illegible] ॥ मूल ॥ एक
नक्षत्रजातानांनाडीदोषोनगण्यते ॥ अन्यदैपतिवर्गे [illegible] पिच
दा ॥ १ ॥ टीका ॥ जोवरकन्याएकहीनक्षत्रकोजन्म[illegible] ॥ [illegible]
षमानियै ॥ औरहीऔरनक्षत्रजन्महोयहोतोविवाहसर्व[illegible]

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

७२॥ इति नाडीत्रिवेधः॥ मूलं॥ पंचोर्ध्वरेखाः प्रलिखेद्रेखाः पंचतिर्य... ॥ मैत्र...
द्वयोश्च कोणयोर्वेधे चक्रं पंचशलाककं॥ ७३॥ ...
मादृग्मा निर्मानि च॥ यहाः लेप्वदातव्याये च यत्र ... वल...
सन्निकटेया च गतामवति प्राणीमा॥ तत्र तत्र स्थितस्त्र...॥ ...
कोत्र मे:॥ ७४॥ टीका॥ पांच रेखा ऊर्ध्व कीजे और पांच रेखा ... तिरछी
परेखा कोनन मै धरै तिसको पंचसलाका चक्र कहते हैं ... रे
कै कृतिका आदि नक्षत्र धरिये क्रम सर्वेसों॥ ७४॥ जो
लग्नके निकट पूनो होय॥ तिस नक्षत्र पर चंद्रमा च
रियै॥ इस प्रकार उत्तम मार्गक जो पंडित है सो कहते
हैं॥ ७४॥ मूलं॥ लत्तापातो युतिर्वेधो यामित्रं बुध
पंचकं॥ एकार्गलो यग्रहो च क्रांतिसाम्यं निगद्यते॥
७५॥ दग्धा तिथिश्च विज्ञेया दशदोषा महाबला॥ ए
एतान्दोषान्परित्यज्य लग्नं संशोधयेद्बुधः॥ ७६॥

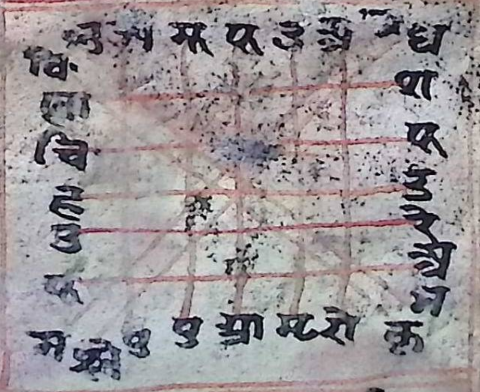

अथ पंचशलाकाचक्रम्

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शी॰ टी॰ ॥टीका॥ शुभदोषकहतेहै लत्ता१ पात२युति३वेध४यामित्र५युध्यपंचक६
एकार्गल७उपग्रह८क्रांतिसाम्य९ दग्धातिथि१० येदशदोषमहाबलवान
है॥ इनसेंव चायकैलग्नसोधियो॥७५॥मूल॥ नदग्धतारार्कशंमानः तृतीयंल
तयाकुजः॥ षष्ठंजीवोऽष्टमंमंदो हंतिदृष्टिगणनःसदा ७६ पामेनसप्तमंचां
दीनवमंसिंहिकासुतः॥ हंतिमंचपंचमंपुत्रोपागविंशंपदा॰ ... ७७॥टी
का॥ जौनदत्रकीलातनहोय तहिनदत्रतेदाहुनेगनै ... सूर्य सौम गुरु शनि
ये चारग्रहयाप्रकारलातमारतेहै और ३ मीमें ... शनि ...
है ७८॥ औरवामभागहोकैसातवेनदत्रकोबुधलात ... अव
इ ९ याववेकोशुक्र५ औरवाईसनदत्रको २२ ...
॥मूल॥ रविलत्ताहरेविंतकु जस्पकुरुतेमतिं॥ वृहस्पतिे ... भागं ...
कुलदय॥७७॥ बुधस्पकुरुतेनाशंलत्तामाहोविनाश ...
नित्यंत्रासदासकलानिघे॥७८॥टीका॥ सूर्यकीलातस ...
मकीलातलगैतोमत्युकरै॥ वृहस्पतिकीलातलगै ...

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शनिकीलातलगैतौकुलकौक्षयकरै ॥ राहकीलाततौ [illegible] मह
लातदुखदायकहै ॥ चंद्रमाकीलातत्रासदायकहै ॥ [illegible]
रै ॥ ७८ ॥ [illegible] ॥ मूल ॥ मृगेयुक्ताचनक्षत्रा [illegible] ३ ॥ [illegible]
षाश्लेषाचित्राचस्वातिराधाचरेवती ॥ ७९ ॥ ध्रुवलोप [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ अश्विनीमघाधिककल्याणमेलग्नभा [illegible] ॥ [illegible] रे ॥ [illegible]
[illegible] केसमयेहोई उसीनक्षत्रमेंके [illegible] पर तो पात [illegible] ३
वा चित्रा १५ राधा रेवती मृगशिर [illegible] संयोग [illegible]
तिकेपातकहतेहै ॥ प्रथमसमयेके [illegible] देखो [illegible] ॥ जेनक्षत्र
पातक हेहैतेछोडकरिये ॥ फिर अश्विनी आदिदेके [illegible] लोगनि
ये ॥ ८० ॥ जोबोईनक्षत्रमेंतिन [illegible] होयतौपातदोषलगै ॥ इतिपातचक्रं
मूल ॥ पावकःपवमानश्च विकारःकलहोपरः ॥ [illegible] यश्च विशेयोपात
[illegible] ॥ ८१ ॥ टीका ॥ अथछहभाँतिकेपातनामलक्षण ॥ पावक १ प
वमान २ विकार ३ कलह ४ [illegible] ५ [illegible] ६ येछहोंपात [illegible] तेहै ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२१॥ मूल॥ पातेन पतितो वृक्षा पातेन पतितो हरिः॥ पातेन पतितः
शंभुः तस्मात्पातं विवर्जयेत्॥ २२॥ टीका॥ पात ने वृक्षा को पतन करौ
और विष्णु को पतन करौ॥ तातें विवाह में पात दोष विशेष कर कें वर्जे
है॥ २२॥ मूल॥ चित्रांगते पातः विचित्रदेशे मेवे मध्यमालवके निषिद्धः
पौष्णस्तु ति चोत्तरदेशजातः सर्वत्र वर्ज्य भुजंगपातः॥ २३॥ टीका॥
चित्रा नक्षत्र को पात विचित्र देश में वर्जित है॥ मूल मघा का पात मा
लव देश में निषिद्ध है॥ अश्लेषा का पात सर्वत्र निषिद्ध॥ म [illegible]
सो मालव देश में वर्जित है॥ और रेवती जो है [illegible]
उत्तर देश में निषिद्ध है॥ इति पात निर्णय॥ मूल॥ यत्र गृह [illegible] हीय [illegible] की
त्र यदा भवेत्॥ यु ति दोष स्तदा ज्ञेयो विना शुक्रं सु [illegible] पर
जो हीन नक्षत्र का चंद्रमा होय॥ और उसी नक्षत्र की [illegible]
तो तिसको युति दोष कहते हैं॥ अकेले शुक्र ना होय [illegible]
शुभ॥ २४॥ मूल॥ रविनाशयुतो हानि मौ मेव [illegible]

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मूलनाशं च राज्यकेतुपनिष्यवै ॥ २५ ॥ टीका ॥ जो ... मास
यतो हानि करै ॥ सौम होयतौ मस्तकरै और राज्यके ... न
लनाश करै ॥ २५ ॥ मूल ॥ वर्गोत्तमगतेचंद्रेसोच्चे वामि ... हहोयते
स्खलनं भवेदं ... सोप्रेयसोमदा ॥ २६ ॥ टीका ॥ जो चंद्रमा ... जो न
वर्गोत्तम होयतो अथवा उच्च का होय वा मित्र ... धस्त्री ॥ २६ ॥ स
बकानाश करै २ खोप दुष्ट दोनो सम खो रहे ॥ इति ... भका ...
रेखोस्थितिर्वैधो ... दिमिये हैः ॥ ... तै ...
यो ८ दाचनः ॥ २७ ॥ टीका ॥ जो नक्षत्र ... और ... सो
स्य ... होयतो ... कहिये ॥ तो ... पीछे ए
कमहीनाके ॥ अंतमै मस्तकरै ॥ २७ ॥ मूल ॥ ... वोफाल्गुण्यो म
रण्यो चालिमाधयोः ॥ अभिजि ... रोहिण्यां कृत्तिकाच विशाखया ॥ २८
... पुनर्वसुमूलेनलयाचुषा
... ॥ २८ ॥ घनिष्ठायांतथा ... तरोत्तरा ॥ रेवत्युत्तर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शी.टी. कालऽस्पोहलेनोत्तमोद्भपात ॥ ८० ॥ वामाशलसिवाकिसाचत्रायांपूर्वेम
इपातू ॥ विद्यामेतालिवर्जोनिविवाहेमान्दकोविदैः ॥ ८१ ॥ टीका ॥ स्त्रीपुरुष
लेजोरखोकालमनामेएकरेखाहे सेसेजोदोनोकोरएकरेखाहोयतोवेध
कहिये ॥ सैसेहीसूत्रपाईसन ऽत्रनकोजानिये येवेधपंचशलाकाचक्रमे
समझलेना ॥ ८२ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ मूल ॥ रविवेधेचवैधव्यंकुजावेधेकुलक्षयम् ॥
बुधवेधेभवेद्वंध्याप्रव्रज्यागुरुवेधनः ॥ ८२ ॥ ... पुत्रीशुक्रवेधेचशौरेचंद्र
चद्रः विना ॥ परपुरुषरतानाहोवेतो ... ॥ ८३ ॥ टीका ॥ जो
सूर्यकोवेधलगेतोविधवाहोई ॥ मंगलकोवेधलगेतो ... य
बुधकीलातलगैतोवंध्याहोय ॥ गुरुवेधलगैतो ... होय ॥ ... की
लगैपुत्रनाशहोय ॥ शनिचंद्रमाकीलगैतोदुखीहोय ॥ ... परपु
रुषगामिनीहोई ॥ ८३ ॥ इतिवेधफलम् ॥ मूल ॥ शनि ...
जन्मदासंस्थिताः ॥ विवाहितावयाकमासार्कमावि ...
का ॥ शनिराहुभौमसूर्यइनमैकोऊग्रहविवाहसमै ... प ...

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

तौकंमाविधवाहोय॥५४॥मूल॥ चलेदृशं चनत्तत्रेयामि ... मम
शुभयुक्तेनदृष्टेतिपापयुक्तंचवर्जयेत्॥५५॥टीका॥ ... त
चौरहैनक्षत्रपरकोऊग्रहहोयतौयामित्रकहियै। जो ... मंगलहहोयतौ
शुभहै ५५॥मूल॥ चंद्रचांद्रीमंगलजीवोयामित्रेशुभकारकाः ...
नर्मदामयामित्रेनशुभप्रदा॥५६॥टीका॥ जोचंद्रमा ... बुध ... रहस्प
ति औरशुक्रजेग्रहलग्नकेचौरहैनक्षत्रपर ... होयतौशुभकारी
औरजोसूर्यशनिराहुकेतुहोयतौ ... यतौअशुभहै॥
५६॥मूल॥ चंद्राद्वालग्नतोवापि ... सप्तमे ... स्थिताग्रहान्नूनं
व्याधिवैधव्यकारकाः॥५७॥टीका॥ चंद्रमातेवालग्न ... नक्षत्रतेसातवेके
ऊपरग्रहहोयतौव्याधिकरै विधवा ... करै॥५७॥इतियामित्रदोषः॥मूल॥ या
म्योतिथिर्मास॥१५॥१२॥१०॥८॥४॥ दशाष्टवेदासंख्यातितौयातिदिनैशुभे
ज्यागृहेविभक्तायदिपंचकसपाद्रोगात्तयाग्निर्नृपचौरमृत्यु॥५८॥टीका॥
यवपंचककहतेहै तिथिकहियै १५ मासकहियै १२ दश १० ... ८ वेद ४

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शी·टी· संक्रांतिके जो दिन गये होय ॥ तिनको युक्त करके ९ नवको भाग [illegible] जिये जो
पांच शेष बचै तो पंचक जानिये ऐसे हि पांचो पंचक विचारिये रोग पंचक है ५५
अग्नि पंचक बारहमे १२ राज पंचक दशमे १० चोर पंचक ८मे मृत्यु पंचक
४मे ॥ ९८ ॥ मूल ॥ यदा के वारे [illegible] रोग पंचके सोम्य वारे राज पंचक तिज्जो अग्निदो
९ नि ४ षः ॥ शौरी च मृत्यु स्मरमंत्र चोरो विना हकाले परिवर्जनीया ॥ ९९ ॥ टीका ॥ र
विवारको जो रोग पंचक लगै तो सोमको राज पंचक लगै [illegible] मंगलको अग्नि
क शनिश्चरको मृत्यु पंचक गुरुवारको चोर पंचक [illegible] सैत है ॥
९९ ॥ मूल ॥ रोगं चोरं त्यजेद्रात्रौ दिवा राज्याग्नि पंचके [illegible]
मध्य काले न निंदिता ॥ १०० ॥ टीका ॥ रोग पंचक चोर [illegible] का दे
अशुभ है ॥ १०० ॥ और राज अग्नि पंचक दिनमें न [illegible] ओर मृ
त्यु पंचक निंदित है: ॥ और समें मैं न हि वर्जित है: ॥ [illegible] ॥
मूल ॥ सर्वे मासं च मे विद्युन्नृत्तत्रं शूल मष्टमे ॥ चतुर्द [illegible]
दशे तथा ॥ १ ॥ ऊनविंशे भवेदुल्का निर्घातश्चैव द्विविंशते ॥ [illegible]

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पंचविंशतिवज्रकः॥ २॥ टीका॥ सूर्यके नक्षत्रते पंद्र [illegible]
ईयह होयतौ विद्युदोपलगेश्चोर ८ आठवे भूकंप [illegible]
१४ समपातलो अठारहे पर १८ केतकादोपलो [illegible]
सप्तरनिर्घात तेईसपरकंप पच्चीसपरवज्रदोषलगे॥ [illegible] शील [illegible]
शाकरी विद्युत्पत्सुफलो विनाशकः॥ शनैःपातो वंशाया [illegible] ॥ [illegible] ॥
कः॥ ३॥ द्रुमनाशकरी चोल्कानिर्घातो वंधुना [illegible]
वज्रे ही विभिचारिणी॥ ४॥ टीका॥ विद्युदोषके [illegible] निर्घा
त आताको घातकरै कंपनिसहीकंपावै॥ वज्रदोषलगेतौही विभचारि
णी दोष॥ ५॥ मूल॥ योगांके विश्वैतेको देयो शांविंशतिसमे॥ संवैकृत्वा
इमीपर्वैभकर्मभर्तृद्वियते॥ ५॥ टीका॥ जोयोगाके [illegible] विषमहोयतौए
कजोरिये॥ औरसमसंख्यकहोयतौ अठाईसजोरिये तौ आधेकरियेअष्टि
नीतेरवेकै जोसंख्यहोयसोमर्तृपरलिखिये॥ ६॥ मूल॥ विष्कुंभेचाश्वि
नीदेयाप्रीतौस्वातिर्निगद्यते॥ सौभाग्ये च विशाखायाः [illegible] यामानुराधा॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शी.टी. युतः॥ ६-६॥ शौभने कृतिका द्वय श्रवन गाधा वां उके॥ रोहिणी च मृगमो-
रवो च यतौ ज्येष्ठा द्रकीर्तिताः॥ ७॥ गंडे मूललेष्मगो मूलेव छो चाष्ट्रो निग द्यते॥
पूर्वोषाढा धकवे श्री का व्याघाते च पुनर्वसु॥ ८॥ रुहेरो चोत्तरा षाढा वज्रे उ
ञो प्रकीर्तिताः॥ श्रभिजिच्च त आर्द्राश्लेषा च व्यतिपातके॥ ९॥ वरिया
न स्मृतिर्दैयाघरिघे च मघा तथा॥ शिवे धनिष्ठा हस्तश्च सिद्धे पूर्वो च फा
ल्गुनी॥ १०॥ साध्ये शत भिषा द्वय ... चोत ... ॥ सर्वो भाद्रपदा
शुक्ले हस्तो व्र सन्म कीर्तिताः॥ ११॥ उत्तरा भाद्रपद ... चित्रा ...
युतो॥ स ये चंद्रमसो र्यो मे भवे देकार्गलं तत्र॥ १२॥ ...
को याम ... भिस्मृतं॥ योगां के आश्लन दवे त्रेय मे का ... का दे
का॥ एकार्गल चक्र की रखा ते ता नि ये खाति ... का ... ते
है॥ योग के अंक और जैन नक्षत्र कहे है ते ... यं चंद्र ... ॥
यतो एकार्गल दोष कहिये विष्कुंभ योग को और ...
एसे हाक म सो चक्र लिखिये यो टीका इनमातो ...

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१०८॥१०९॥ ११०॥१११॥११२॥११३॥ इति श्रर्गलानिर्णयः॥ मूल॥ [illegible]

[illegible]तिसो मध्ये मानलि लिवुधः॥ सूर्येंदुमेसी हिषे क्रांति [illegible]

मीन कन्य [illegible] युक्तो मेषसिंहेन संगमः॥ मकरे [illegible]

नेनच॥ २३॥ कर्कैनवृश्चिको वे धो वघस्तुल्लकुंभ [illegible]

द्गनजीवतिक दाचनः॥ २४॥ टीका॥ तीन रेखा [illegible] [illegible]

के मध्या की रेखा पर मीन कन्या तिरछी पर [illegible]

कै क्रमसो सब लग्नन को धरिकै चक्र बनाइयै [illegible] रेखा पर [illegible]

यै [illegible] क्रांतिसाम्य दोषकहियै॥ मीन मेष [illegible] जानियै॥ ऐसे

ही सब राशिनसौ वेधचक्रमे [illegible] जियै तुलकुंभसो कर्क वृश्चिकसो

मिथुन धनसो मकर वृषसो [illegible]सो॥ इन राशिन [illegible] मकरक

[illegible] जियै॥ विवाहादिक [illegible] अनेक कार्ज वर्जै है॥ २३॥ मूल॥ क्रांति

साम्य [illegible] होय यदि पाणिग्रहो भवेत्॥ कन्या [illegible] यांति ईशास्य द

हिमायदि॥ २५॥ टीका॥ जो क्रांतिसाम्यमे विवाह होयतो कन्या विधवा

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

होजाय॥ ईशकहियेमहादेव तिनकीपूजाहोयतोहं॥ १५॥ इतिक्रांतिसाम्यम्
मूल॥ मर्मवेधकंटकश्चशल्यंछिद्रं चलर्थकं॥ लग्ने धं चतुर्थकंचपरिसाजपत्र
यत्नतः॥ १८॥ टीका॥ अबपांचदोषकहतेहै मर्मवेधः १ कंटकः २ शल्यं ३
छिद्र ४ इनदोषनकोयत्नकरत्याग्यै॥ यहाग्रंथकजनकीआज्ञाहै॥ १८
मूल॥ लग्नेपापेमर्मवेधःकंटकेनचपंचमे॥ चतुर्थेदशमेशल्यंछिद्रंन
वतिसप्तमे॥ १९॥ टीका॥ लग्नकोपापग्रहहोयतो मर्मवेधकहिये औ
रचौथे ४ दशमे १० पापग्रहहोयतो शल्यदोषकहते... औ...
नमेंपापग्रहहोयतो छिद्रदोषजाननानवम ...
यतो कंटकदोषकहिये॥ मूल॥ मरणंमर्मवेधस्या ... कादे
यं॥ शल्यंचवन्हपतेभीतिः पुत्रनाशश्चछिद्रके॥ २० ... का ... माहे
मेंविवाहहोयतोमृत्युजानो॥ औरकंटकमेहो ...
औरशल्यदोषलगैतोराजकाभयहोय॥ जो ...
नाशकरै॥ २०॥ इतिदोषः॥ मूल॥ जन्ममासेजन ... वन

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पुच ॥ ज्येष्ठेन ज्येष्ठगर्भस्य विवाहं कारयेत्क्वचित् ॥ २ [illegible]
सम्ग्रः जन्मकान तत्र जन्मका दिन सों प्रथम [illegible]
वाह विषेव र्जित करै है ॥ २५ ॥ परंतु जो मासे के विषै [illegible]
कमतां तरतेषा धामहै ॥ २१ ॥ मूल ॥ नकन्या वरयो [illegible]
डनं ॥ द्वयोरेकतरे ज्येष्ठेन ज्येष्ठे दोषमावहेत् ॥ २२ ॥ टी [illegible]
तौ प्रथम गर्भ होय तौ ज्येष्ठ मास मै विवाह विशेष [illegible]
एक ज्येष्ठा होय एक नहि होय ॥ तौ ज्येष्ठ के महीने मै [illegible] विवाह करे [illegible]
है ॥ २२ ॥ मूल ॥ सिंहस्थगते कार्येन विवाहं कदाचनः । मेषस्थिते द्विवानाः
थे सिंहे ज्येष्ठ शुभप्रदाः ॥ २३ ॥ टीका ॥ सिंह की बृहस्पति मै विवाह नहि क
रना केवल मेष के सूर्य मै कारे तौ शुभफल दायक है ॥ २३ ॥ मूल ॥ रवौ
सार्द्धत्रयो भागाः पंच चंद्रे गुरौ त्रयः । वेदे भृगुरेंदु पुत्र स्याद्विष्वाभणाग्रदायिनी
२४ ॥ प्रत्येकं सार्द्धभागाश्च मंदमंगलराहुषु ॥ यहा बलयुताविष्वा प्रयच्छंति
न दुर्वेला ॥ २५ ॥ टीका ॥ सूर्य के ३ ॥ भाग ॥ चंद्र के पांच भाग ५ ॥ गुरु के ३ ॥ भृगु

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शी·टी· के ४ ॥ बुधके ४ ॥ येइनभागनके [illegible] शुभहै ॥ २४ ॥ श्रोरशनिमंगलराहुके
लइनगृहनकोडेढ १॥ डेढविश्वा भागएवैक ॥ जोलोवलिष्ठ रहैतोलोशु
भहै जवक्षीण होयतवनिर्मलहै ॥ २५ ॥ इतिवि[illegible]वकफलं ॥ मूलं ॥ केंद्रे
सप्तमहीने चाष्टत्रिकोणेशुभाःशुभं ॥ पापाः शुभप्रदाःकेंद्रे पापाःषष्ठेच शोभने
२६ ॥ तृतीयैकादशेसर्वे सौम्याः पापाः शुभप्रदाः ॥ तेसर्वे सप्तमस्थानेकष्टदा
यकामताः ॥ २७ ॥ टीका ॥ केंद्रस्थान [illegible] हियेलग्न नोमे ॥ ४ ॥ [illegible] ॥ १ ॥ लग्नच
तुर्थसप्तमदशम ॥ जोइनस्थाननविषेंशुभग्रहहोयतो [illegible] है ॥ सकेले सा
तवेस्थान ७ शुभहै शुभग्रहकारकेवुधशुक्रवहस्पति [illegible]
कृष्णपक्षकीपंचमीपर्यंतकाचंद्रकाश्रेष्ठवलीहोताहै [illegible] का [illegible]
र ४ शुभग्रहहै श्रोरसूर्यराहु शुक्लाष्टिमीयाते १० [illegible] का [illegible]
यहजानिये ॥ भौमशनिकेलककृष्णपक्षमीते ३० तारि [illegible]
लग्नते २ स्थानचंद्रमाशुभग्रहः पापग्रहलग्नते ३ ॥ ६ [illegible]
श्रोर ३ ॥ ११ ॥ तीसरेग्यारहैस्थानसर्वग्रहशुभहै श्रोरसे [illegible]

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्यानने शुहै ॥ २८ ॥ इतिफल द्वा ग्रह प्र लि ॥ मूल ॥ शु [illegible]
दुलग्नेष्टमे रिपौ ॥ कुजे लग्नेष्टमे चालेग्नुक्रे च्यूने [illegible]
सैंहिकेयो लग्ने सूर्ये च सप्तमे ॥ बुधेष्टमे चयामित्रे दि [illegible]
२९ ॥ क्रूरयोरंतरे लग्ने चंद्रं च परिवर्जयेत् ॥ वरं इति [illegible] शील [illegible]
श्चकमर्का ॥ ३० ॥ टीका ॥ शनि सूर्य जो सप्तम होय सो [illegible] ॥
और भौम ॥ १ ॥ ८ ॥ गुरु शुक्र ॥ ७ ॥ चं ॥ बृहस्पति [illegible]
बुध ॥ ८ ॥ ७ ॥ ये ग्रह इतने स्थान मै विवाह दिये [illegible] शक [illegible] हारे
है ॥ क्रूरग्रह मध्य चंद्रमा होय तौ [illegible] ताबि हि लग्न [illegible] यतौ वर्जनीक है
वरको शाघ्रही मृत्युको दाता है ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ इति [illegible] मा [illegible] ग्रह हानि ली
य ॥ मूल ॥ तुला च मिथुनं कन्या [illegible] चं [illegible] धनु [illegible] ॥ एते लग्न प्रमानि
तं मध्यमा श्वापरे स्मृताः ॥ ३१ ॥ टीका ॥ तुला मिथुन कन्या व [illegible] धनकाए
वौ है इतना लग्न शुभ है ॥ और लग्न मध्यम है ॥ ३१ ॥ मूल ॥ लता मालव के
देशे [illegible] जांगले ॥ एका [illegible] च वा [illegible] सर्वेषु वर्जयेत ॥ ३२ ॥ टी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

का॥ लता दोष मालव देश मे वर्जनीक है॥ पात दोष कुरु जांगल देश मे॰
निषिद्ध है॥ एकार्गल दोष काश्मीर देश मे मने है॥ और वेधध्व दोष सव

१	म	मे	वृ	मि	क	सिं	कं	तु	वृ	ध
२	वृ	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	सिं	कं
३	मि	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि
४	क	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कुं	मी
५	सिं	मे	वृ	मि	क	सिं	कं	तु	वृ	ध
६	क	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	सिं	कं
७	तु	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि
८	वृ	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कुं	मी
९	ध	मे	वृ	मि	क	सिं	कं	तु	वृ	ध
१०	म	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	सिं	क
११	कुं	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि
१२	मी	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कुं	मी

देश मे वर्जित है॥ ३३॥ मूल॥ मेष
नवांशा मे [illegible] वृषे च मकरादि
का॥ [illegible] पुनर्भू मे वृक को
[illegible] मे [illegible]॥ ३४॥ गोतुला
[illegible]
ता॥ [illegible]
मे च म ध [illegible]
राशि [illegible]
[illegible]
कोनवांश [illegible]
३४ नवांश [illegible]

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सिंह धन॥ इनतीनोकापहिलानवांशमेषतेनवयेधन [illegible]
मामकर॥ इनतीनकानवांशामकरआदिदेकैमा [illegible] ॥ [illegible]
तुलाकुंभ॥ इनतीनकानवांशातुलाआदिमिथुनपर्यंत [illegible] इ [illegible]
कमीन॥ इनतीनकानवांशाकर्कआदिपर्यंतगनिये॥ [illegible] गो [illegible]
यै॥ मेषतुलमिथुनकंन्या इनकानवांशाशुभहै श्री रघन [illegible] ॥ [illegible] अवल
शुभामिश्रितहै॥ श्री रनवांशाजोहै॥ विवाहमैमध्यमहै॥ [illegible] तो [illegible]
वंशास्पपतिर्रशंश्वेन्न मित्रंवाशुभेपिवा॥ पपैतदाशुभी [illegible] पनि
ष्फला:॥ ३६॥ अंशकापतिजोहः नवां [illegible] मीसे [illegible] ॥ [illegible] वास्या
मीकामित्रहोयवाश्री रशुभग्रहहोयलानपर॥ अथगा इनकोदेहकीदृष्टिल
ग्नपरहोयतो श्री रदोषनकोनि [illegible] लकरै॥ ३६॥ [illegible] शुक्लाष्टमीसमारं
भफाल्गुणस्यदिनाष्टकं॥ एताँमामा [illegible] केहलासाकुंभहोलाष्टकंवुधैः॥ ३८
शतद्रुवि [illegible] पाशायांमेरावत्यां [illegible] रे॥ होलाष्टकेविवाहादौत्पाज्यमन्यत्र
शोभने॥ ३८॥ टीका॥ फाल्गुण [illegible] शुक्लपक्षकीअष्टमीते एताँमानकहेल

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१८ दिवांधलग्नेविधवा पुनरंधलग्ने धनाय...
वधिरैचकुबुपकिं दुजिवेनाहि दा वसा ... पुनयाचि वा हु ...

शी॰टी॰ ... कहीते है ॥ ३७ ॥ सोशतरुद्रुनदीकेतीर ॥ श्रोरपिपाशानदीकेतीर श्रोररोवत
नदीकेतीर श्रोरपुष्करनदीकेतीर श्रोरदेशहैतिनदेशनविषे विवाहादिकजो
उत्तमकार्यहैसोवर्जितहै ॥ ३८ ॥ इति ... ॥ दिनेशदांधावृषमेष
सिंहारात्रौ च कन्यामिथुनंकुलीर ... मगालिलालिवेधिरोपरात्हेसंध्यासकु
जाघटधन्वमीना ॥ ३९ ॥ टीका ॥ दिनमेंयेअंधेलग्नहे वृषमेष ... रात्रिके
अंधे कन्या मीन कर्के अपरान्हमेंवहरे मकर ... संध्यामेंकुम्भ
धन कुंभ मीन ॥ ३९ ॥ मूल ॥ दिवांधोवरहंमाचरात्र्यां ... नाशक ॥ कुब्ज
दोवधिरोलग्नंकुजोवंशविनाशक ॥ ४० ॥ टीका ॥ दिन ...
होयकेतोवरकीहानिहोय ॥ रात्रिकेअंधेमेंश्रामरेहोय ...
श्रोरवहरेलग्नमेंपाणिग्रहहोयतोदुखदायकहै ॥ श्रो ... कुब्ज ...
यतोवंशनाशहोय ॥ ४० ॥ मूल ॥ यत्रचैकादशोचंद्रो ...
धूलिकःसविज्ञेयोशेषाधूलिमुखोमता: ॥ ४१ ॥ टी ...
माहोय श्रथवाहसरेतासरेहोय सोउत्तमगोधूलिका ...

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कहते है॥ ४१॥ मूल॥ कुलिकौ तत्र समासंच लग्नानि षष्ट [illegible]
कल्याज्य: पंच दोषेन दुष्टितः॥ ४२॥ टीका॥ कुलिक [illegible]
लग्नानको अष्टम है आठवे चंद्रमा होयतो गोधूलि [illegible] है
रना लग्न ५ दोषकर दूषित है॥ ४२॥ मूल॥ यदा नास्ति [illegible] गोधू [illegible]
परितंन म:॥ सर्वे मंगलकार्येषु गोधूलिस्प्रशस्यते॥ ४ [illegible] टीका [illegible]
सूर्ये शुद्ध लग्न ना होय॥ श्री गणपती की बुध न की घ [illegible] काश [illegible]
य॥ सो वह घरी सकल उत्तम कार्यनिविषे मंगलकी दाता है॥ तिसको गोधूली
कहते है॥ ४३॥ मूल॥ अष्टमे जीव भौमे च बुधा [illegible] मे॥ लग्न षष्टा
ष्ट मे चंद्रे तदा गोधूलि नाशक:॥ ४४॥ टीका॥ जो लग्नते [illegible] आठये मे
भौम गुरु बुध शुक्र ये ग्रह होय [illegible] लग्नको [illegible] आठवे ॥ ६ ॥ ८॥
चंद्रमा होयतो॥ वह गोधूली नाशक दोष है ता मै सर्व कार्ये वर्जित है॥ ४४॥
इति गोधूली॥ मूल॥ लग्नादेका [illegible] ग्रह:॥ तृतीये चाष्ट
मे सूर्ये सूर्ये पुत्र शुभो मते॥ ४५॥ चंद्र धने तृतीये च कुज षष्टे तृतीयके॥ ३

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शी॰टी॰ धेजीनवषट्द्विंत्रिचतुःपंचदशास्थितौ॥ ३६॥ शुक्रंद्वित्रिचतुःपंचधर्मेकर्मे
तनुस्थिते॥ राहुद्देशाष्टषट्पंचत्रिनवकाउशेशुभः॥ ४७॥ टीका॥ लग्नतेरा
रहैस्थानमर्वेग्रहशुभहः पहकतेहैः श्रीरउ मदवेसूरु टशनि॥ ३॥ ५॥ श्रीच
द्रमा॥ २॥ ३॥ श्रीरमौम॥ ३॥ ६॥ श्रीबुध वृहस्पति॥ [illegible] २॥ ५॥ ७॥ ५॥ १०॥ श्री
रशुक्र॥ २॥ ३॥ ४॥ ५॥ ९॥ १०॥ ११॥ इनस्थानमेशुभहः॥ श्रीरराहुकेतु॥ १०॥ ६॥
२॥ ५॥ ३॥ ९॥ १२॥ इतनेस्थाननमेशुभफलदायककहेः॥ ३६॥ इतिरआद
योशुभकरायहा॥ मूल॥ छायापादैरसोपेतैः एकाविंशतिमजेत्॥ लब्धाके
घटिकाज्ञेयाशेषांकेचपलास्मृताः॥ ४७॥ टीका॥ अवाईननापवे [illegible]
तहः॥ अपनीछायाडीलकी अपनेपाउकरनापिये॥ जे [illegible] छाया [illegible]
मे ६ औरमिलावे फिरएकसेइकईसमे॥ २१ तलनेकोमा [illegible]
येसोघरीदिनजाने॥ जोबढतहोयतौवढताजाने औ [illegible]
वचै तिनभागप्रमाण अंकनपरफैलाइके पलक [illegible]
४८॥ इतिदिनघटिकापलाज्ञान॥ मूल॥ पदौबाव्यन [illegible]

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रेवती। विशाखाच्च यदाम त्रिलदा स्यादहमोदय ॥ ... ॥ ...
एंसप्तहीनं च शेषकं ॥ द्विगुणं च द्विहीनं च गतातारा त्रिगुण ... ॥ ...
के मृगाशीर्षं च मूले च नवमोदय: ॥ अन्यमन्त्र यदाम त्रि ...
५१ ॥ टीका ॥ अब रात्रि गत शेष निर्णय प्रवोधात ... ...
ती। विशाखा इन नक्षत्र मे कोउ नक्षत्र माथे पर होय तो ... वे नक्षत्र उद
य जानिये ॥ ५५ ॥ और जो ने नक्षत्र का सूर्य होय ... जो नक्षत्र शिर पर होय ता
को गनिल जे ॥ पुनि सात का भाग दीजे शेष बचे हूने ... तामे द्वय और घटाई
ये ॥ जो रात्रि गत गत वा भोग्य जानिये ॥ ५० ॥ और मृगाशिर आ मूल माथे पर होय तो
नवये नक्षत्र का उदय जानिये ॥ और जो कहे तिन मे ... के का कहिये ॥ ५१ ॥ इति
रात्रिज्ञानं ॥ मूल ॥ किं कुर्वंति ग्रहा: सर्वे यस्य केंद्रे बृहस्पति: ॥ मत्त मातंग यूथानां
शतं हंति च केशरी ॥ ५२ ॥ टीका ॥ जो और सकल ग्रह अरिष्टकर होय तो का करस
कते हैं ॥ जो केंद्र स्थान बृहस्पति ... होय ॥ १ ४ ७ १० इन भावन मे तो जै
से सैकडो हाथी का समूह मे ॥ सिंह ... मोह लिडार ऐसे और ग्रहजनित अरिष्ट

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

शी॰टी॰ नकोनाशकरै ॥ ५२ ॥ मूल ॥ शुक्रो दश सहस्राणि बुधो दश शतानि च ॥ लग्नमेकं
लदोषाणां गुरुर्लग्ने अपोहति ॥ ५३ ॥ टीका ॥ जो लग्न में शुक्र होय दश हजार दो
षनको हनै ॥ श्री बुध तै हजार गुरु तैं लाख दोष हरै ॥ ५३ ॥ मूल ॥ परिघार्द्धं व्यती
पातं वै धृतिं सकलं त्यजेत् ॥ विष्कुंभे घटिका पंच शूले सप्त प्रकीर्तिता ॥ ५४ ॥ षट् गं
डे चातिगंडे च नव व्याघात वज्रयोः ॥ [illegible] जो लग्न मे सदा वर्जयेः ॥
टीका ॥ अब नव योग निषिद्ध है तिनकी [illegible] नव जो है परिघ की घडी ३० व्य
तिपात वैधृत संपूर्ण त्याग करै विष्कुंभ की ५ शूल की घरी ७ त्याग करिये ६ और
गंड अतिगंड की घरी ६ व्याघात की ९ वज्र की ९ [illegible] ॥ मूल ॥
व्यतीपाते भवेन्मृत्युः गंडांते मरणं ध्रुवं ॥ अग्निदाघो भवे[illegible] ॥
के ॥ ५६ ॥ वैधृत्यां वैधृतौ चैव विष्कुंभे कामचारिणी ॥ [illegible]
मृतवत्सका ॥ परिघे च भवेद्दासी मघामांसरता सदा ॥ ५७ ॥ [illegible]
वाह करै तो मृत्यु होय ॥ अतिगंडांत मूल मै करै तो व्है [illegible]
गंड मे रोग होइ ॥ ५७ ॥ वैधृत मे वैधव्य होय विष्कुंभ मे क[illegible]

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धाऌत्तयहोय॥ आघातमै मृतवत्सा होय॥ बालकमा. [illegible]
राईदासीहोय॥ अतमांसमधिहा ह्रिकसेवनकरै॥ ५८॥ [illegible]
पद्माकारं लिखेचक्रं मष्टकोणसमन्वितं॥ यस्मिन्नृक्षे [illegible]
मत्रयं॥ ५९॥ त्रयत्रयश्च सर्वत्र ततः पूर्वोदितो लिखेत्॥ [illegible] तो [illegible]॥
क्षयविनाशनं॥ ६०॥ पूर्वस्थाने भवेल्लक्ष्मी धनधान्यसम [illegible]॥ आग्नेय [illegible]
वेन्मृत्युः नारीकुलविनासिनी॥ ६१॥ दक्षिणे दुर्भ [illegible] नारी दारिद्र्यं मृत्यु [illegible]
तू॥ नैऋते पुत्रलाभश्च स्वसौभाग्यमेवच॥ ६२॥ पश्चिमे [illegible] धवाकेन्या वायव्ये
व्यभिचारिणी॥ उत्तरे धनधान्यानां ईशा [illegible] पर॥ ६३॥ मंगलं सर्वकार्ये
षु पद्माचक्रं विचारयेत॥ गर्गाचार्यैः [illegible] सर्वसिद्धिदायकं॥ ६४॥ टीका
पद्माचक्र सूर्य के नक्षत्रते दिनके नक्षत्र लौ गनिये ३ मध्यके कोठामै ३ धरि
यै ऐसे क्रमतें पूर्वादि दिशानमें तीन तीन ३ नक्षत्र आठौ दिशानमें धरिये
जो न दिशानमें दिनकौ नक्षत्र परै ताको फल कहियै पूर्वे होय तो लक्ष्मी धन
धान्य होय १ आग्नेयमें मृत्यु कुलविनाश २ दक्षिणमें [illegible] मृत्युः ३ नै० पुत्रला

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शी॰टी॰ नसौभाग्यसुख ४ प॰ वैधव्य होय ५ बा॰ अग्निकारण ॥ ६ उ॰ धन धान्य सुख ७ ई॰
सुखसंपदा होय॥ ॥ ५॥ प॥ ६०॥ ६१॥ ६२॥ ६३॥ ६४॥ इति श्रीकाशीनाथकृतौ शीघ्र
बोधविवाहप्रकरणं॥ ४॥ मूल॥ धान्यतुर्मे हयाग्नेयंश्रुतियुग्मंकरत्रयं॥ पुन
र्वसुद्वयंपूषामूलंचाप्युत्तरात्रयं॥ १॥ विषमेवत्सरेमासे मार्गेमेषस्थफाल्गुणे॥ म
करेमिथुनेमानेलग्नकन्यातुलाधनः॥ २॥ भौमार्किवर्जितावाराः स्थितचाद्विरा
गमे॥ ॥ २॥ षष्ठीरिक्तामादशीच अष्टमावास्या वर्जिताः॥ ३॥ टीका॥ रो॰म॰ध्वि॰ऽ
न॰श्र॰ध॰ह॰चि॰स्वा॰पुन॰पुष्य॰मूल॰उ॰३ इतनेनक्षत्रनद्विरागमनकोश्रेष्ठहै॥ औ
रविवाहतेऊनवर्षेमार्गहनफाल्गुण॥ वैशाखयेमासहः मकर मिथुन [illegible]
न्या तुला धन॥ येलग्नश्रेष्ठहै शुक्रमंगलशनिवार॥ रिक्ता [illegible] येवर्जि
तिद्विरागमनं॥ मूल॥ श्राद्रोत्रयंमाद्वयुग्मंमत्ताःपद्माप्रा [illegible] स॥ मूल [illegible]
तःसूर्योभौमेरिक्ताविनातिथिः॥ ४॥ श्राद्धचयेत्रयेमासेल [illegible]
चापेपुंसवनंकुर्यात्सीमंतंचाष्टमेतथा॥ ५॥ टीका॥ श्राद्रो [illegible]
म॰रे॰ह॰मृ॰पु॰षा॰उ॰षा॰ इतनेनक्षत्रनमेसीमंतजो [illegible]

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

घातनयहोय ज्याघातमैमनवस्ता होय वालकमहि...
रविमंगलवृहस्पतितिथेरिक्ता॥४॥९॥१४॥येवांजेलहै...
३॥मासस्वीय॥२॥५॥११॥१२॥येलग्नलीजे॥स्वक्ष्या मैदे...
ननदानस्थिरतानिमितकीजे॥श्रीरस्त्रीमंतन...मा...कीजे॥५॥इ
मवनसीमंतकर्मविल्लप ज्ञा॥मूल॥शुभैत्रिकोणकेंद्र...येषहै त्रि
दे॥टीका॥जोत्रिकोण॥९॥५॥केंद्र॥१॥४॥७॥१०॥इनस्थानमैसोम...२॥
३॥६॥११॥इनमैपापग्रहहोयतौ॥जोस्त्रीसेपुर्संगकरैतौसंतानन होई॥४॥
त्रीकी संघील नेव जो है॥६॥इतिगर्भाधानम्॥मूल॥पुनर्वैस्वयेहस्तत्रयं
मैत्रेद्वयंमृगो॥मूलोत्तराधनिष्टास्युः द्वादशे वाद्शे दिने॥७॥ग्रमत्राषिशुभे
योगेवारेवृधशशांकयोः॥मानोगुरो स्थिरेलग्ने बालना मकृतः शुभः॥८॥टी
का॥पुन॰पुष्य॰ह॰चित्रा॰स्वातिः॰अनु॰ज्ये॰मूल॰उत्तरा॰३॰ध॰॥येनक्षत्र श्रीर॥११॥
१२॥दिन॥चं॰बु॰वृ॰श॰॥येवारस्थिरलग्नमैवालककोनामधरियै॥८॥इतिना
मकरणम्॥मूल॥मैत्रत्रयेहरिकैचित्रार्द्रे दितिकद्ये॥स्वातिहस्तोत्तराषाढे

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

शी-टी- पक्षार्ध महयेष्वच ॥ ९ ॥ सिंहत्रयेष्टलग्ने मासयोः श्च चलयोर्यो ॥ यात्रातिथौ
च निष्कासस्त्व शिशुनैवा [illegible] के भौमयोः ॥ १० ॥ टीका ॥ ऽन-जे-म-भ-ध-रो-कु-पु
[illegible]-स्वा-ह-ऊ-षा-रे-मू-षा गष्टि ॥ इन नक्षत्रमे ॥ सिंह कुंभ तुल कुंभ ॥ श्रीरस्ती
सरे चौथे मासमें शुभतिथै ॥ येयात्रा तिथि कहीहै ॥ तिनमे बालक कोन क्षत्र दर्शी
नकरावै भौमशनिवार वर्जितकरेहै ॥ [illegible] इति बालनिष्कासनम् ॥
ज्या पुनर्वसु हस्तयं चित्रा विशाखा मूल एवं ॥ मूलश्चा [illegible] हयाश्रवणोत्तमा
स्तथा ॥ ११ ॥ सोमशुक्र बुध [illegible] प्रसूती स्नान कर्मणि ॥ रेवत्यातिपदा षष्ठी नवमा
वर्तिथि लयः ॥ टीका ॥ पु-पुष्य-चि-वि-म-हू-मू-[illegible] येली [illegible] भ-ध [illegible]
रे-श्र-येवर्जित है ॥ श्री स्नोम शुक्र बुध शनि येवर्जित [illegible] ॥ [illegible]
श्रिष्टहै ॥ इन मै प्रसूति स्नान नहि करना ॥ इति प्रसूति [illegible]
स्तादित्यं च केष्ठ [illegible] धनिष्ठायां च रेवती ॥ [illegible] शुक्रे बुधे [illegible]
वर्ष ॥ ३ ॥ लग्ने मीनश्च कन्यायां मिथुने च वृषभे शुभः ॥ पुष्य [illegible]
रमेशुभः ॥ १४ ॥ टीका ॥ ह-चि-स्वा-वि-ऽन-ऽष्टि-ध-रे-पु [illegible]

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ध यग शुक्र लग्न मीन कन्या मिथुन वृष॥ एतेमुहूर्ते [illegible]
स्त्रधारणकरावैतोश्रेष्ठहै॥ २४॥ इति श्रीवस्त्रधारण [illegible]
रेवत्योमूलंत्वाप्तानराधयोः॥ धनिष्ठा चत्रयोपवे [illegible]
एतेयत्रगतामानिग्रसूतिस्नानकोविदैः॥ वारे भौमार्के [illegible]
मदेवहि॥ २६॥ टीका॥ अथप्रसूतिस्नानविशेषणंचपु [illegible] स्ती [illegible]
दिपडनमहूर्तेकहतेहैः॥ रे॰उ॰३॰रे॰म॰स्वा॰ऽन॰ [illegible] ॥ २५॥ [illegible]
त्रताणीकिजेवाकी रहेतेलीजियै॥ और भौम शनि रवि गुरु येवारशुभहै॥ प्र
सूतीस्नानकराइयै॥ विशेषकरके शुभहै॥ २६॥ इति प्रसूतीस्नान॥ मूल॥ मू
लादिलिद्धयंग्रासंख्यवणंश्च मृगाः कर॥ [illegible] यानहैयाशुक्रमंदाकम
मि [illegible] २७॥ टीका॥ मृ॰पु॰पुष्य॰श्र॰म॰ [illegible]॥ धनलत्रवर्जितकरि जो रहेसोनक्ष
त्र और शुक्रशनिभौमवार इनविषैप्रसूताकीकूपकापूजनउत्तमै॥ २७॥ मू
ल॥ नवान्नभोजनेश्याहांवत्रेप्रोक्तंमृशेषलं॥ वारायकौ [illegible] मौनक्षत्र श्रव॰
णोमृगाः॥ २८॥ टीका॥ नयेअन्नकेभोजन [illegible] यकी येशानि [illegible]

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शी॰टी॰ विवाहकोवर्जैहः॥ श्रवण मृगशिर नक्षत्र रविसोमवारयेवस्त्रके मुहूर्तेतेन
वान्नभोजनकोअधिकलियेहै॥२८॥इतिनवान्नभोजनं॥ अथवस्त्रधारण
मुहूर्तम्॥मूल॥ आद्यान्नप्राशनेप्रोक्तो नक्षत्रोद्भवहस्तोयमः नक्षत्राणिपरिसु
ज्यवारेभौमार्केनेदने॥२९॥ द्वादशीमष्ट ... रिक्तापर्वे ... चवर्जिता॥लग्नेवृच
कन्यामेवृषककन्याचमन्मथः॥३०॥शुक्लपक्षेशुभेयोगेसंख्याशुभचंद्रमाः॥
मासेषष्ठाष्टमेपुंसांस्त्रीणांमासपञ्चपंचमे॥३१॥टीका॥ अथबालककेअन्नप्राशन
कामुहूर्ते॥हस्तनेनक्षत्रादिकवर्जितकहेहै ए॰३॰ ... शनि भौमवारे १
५ ... ॥१२॥०॥ ... ॥१४॥ ... ॥१६॥३१॥ येतिथे ... तिपातयोग इनमें ...
मीन मिथुन वृष कन्या इननेलग्नलीजे॥ और शुक्लपक्ष ... शुभ ...
में अरुशुभचंद्रमाहोय पुत्रकूअन्नप्राशनछठेहै ... ॥ ... के मासे
पांचवेमहीनामेंकीजिये॥३१॥३०॥इतिप्रथमान्नप्राशन ... नं
योजेष्ठाम्लोच श्रवणत्रये हस्तत्रयेच रेवत्यां शुक्लपक्षे ...
गो ... धनः कुंभेमकरे मन्मथ तथा॥सोमवारेशुभयोः ...
... तिथ्यां ...

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२३ ॥टीका॥ श्रवणं इनको मुहूर्त्त कहते हैं ॥ पुनर्वसु पुष्य मृ [illegible]
धनिष्ठा हस्त चित्रा स्वाति रेवती येनक्षत्र शुभ पुष्टपत्र [illegible] ॥ [illegible]
में ॥२२॥ और वृष कन्या कुंभ धन मकर मिथुन येलग्न [illegible] १ [illegible]
र ॥ इतनेसुग्रामवशुभ हैं ॥ और जन्मको मास रिक्ता [illegible] मे [illegible] सब [illegible]
वर्जै हैं ॥इतिचूडाकर्म॥मूल॥ हस्तत्रये हरिरंदे वै पूर्वो [illegible] चलै ॥मूलेपौ
षे चन क्षत्रे वुधे [illegible] गुरु शुक्रयोः ॥२४॥ देवोत्थाने मीने चा [illegible] लिवर्षे च [illegible]
विद्यारंभे त्रिवर्गे श्रवणहि नाध्याय रिक्तका ॥२५॥टीका॥ [illegible] द्यारंभका मुहूर्त्त
कहते हैं ॥ ह. चि. स्वा. श्र. ध. पू. ३ मू. श्रा. पु. पुष्य. रे. [illegible] र. वार. बु. गु. शु. ॥ ये
शुभ हैं ॥२५॥मूल॥ रिक्तायां च सुमाव [illegible] विपक्ष [illegible] चेत् ॥ बुधेकैवासरेम
[illegible] शनि भौमे मृतप्रदः ॥२६॥टीका॥ [illegible] ॥ ३० ॥ १ ॥ ५ ॥ ६ ॥ १४ ॥ ये तिथि वर्जित है ॥
और बुध चंद्रवार मे विद्या करै तो मूर्ख होई ॥ शनि भौमवार मे करै तो मृत्यु होई
२६ ॥मूल॥ विद्यारंभे गुरुः श्रेष्ठो मध्यमे रवि भार्गवौ ॥ बुधेंदु कष्टप विद्याया शनि
भौमपरित्यजेत् ॥टीका॥ विद्यारंभको गुरुवार श्रेष्ठ है ॥ शुक्र रविवार मध्यम है

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शी॰टी॰ बुधसोमगुरु विद्यारंभकोकहतेहै शनिभौमवर्ज्जेहै ॥ २७ ॥ इतिविद्यारंभ ॥
मूल ॥ पूर्वाषाढाश्विनी हस्तत्रयेचश्रवणत्रये ॥ ज्येष्ठामांगम्लो पुष्येरेवत्यांचो
त्तरायणे ॥ २८ ॥ द्वितीयायांतृतीयायांपंचम्यां दशमीत्रये ॥ सूर्येगुरुसराचार्ये
वारेष्टेतथासिते ॥ २९ ॥ लग्नेवृषधनुःसिंहेकन्यामिथुनयोरपि ॥ व्रतबंधस्तु
मेयोगेव्रतदत्तविशीर्णभवेत् ॥ ३० ॥ पापौ भौम शनिकेतुः क्रूर ग्रहाः रविस्तथा ॥
सौम्यसोमबुधश्चैव गुरुस्तुशुक्रोतथैवच ॥ ३१ ॥ टीका ॥ श्रवण [illegible] पर्वतका कहते
कहतेहैः ॥ पू॰षा॰ अश्वि॰ ह॰ चित्रा॰ स्वा॰ श्र॰ ध॰ श॰ [illegible] पु॰ [illegible] मू॰ मा॰ म॰ पुष्य॰
रे॰ ॥ उत्तरायणसूर्यमें गुरुः शुक्र ॥ २ ॥ ३ ॥ ५ ॥ १० ॥ ११ ॥ १ [illegible] तिथ [illegible] है औ
र रविगुरुशुक्रयेवारशुभहै ॥ शुक्लपक्षश्रेष्टहै ॥ औ [illegible] सौमथ
नयेलग्नश्रेष्टहै ॥ इनशुभयोगहोइ इनमेंब्राह्मणचाहि [illegible] लग्न
कोयज्ञोपवीतदीजिये औरवृहस्पतिमेंचारिहैवेस्त [illegible]
रहै ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ इत्युपनयणं ॥ मूल ॥ श्रुतिश्रवे [illegible]
रे ॥ नगोविधियुगेमूलेपूर्वाश्वोसौम्यवारके ॥ ३२ ॥ दिलत्रं ॥ [illegible] त्यगर्य [illegible]

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रशास्यते॥ चैत्रपोषहरिचापंवर्षेचयुग्मंलंलजेत्॥ टीका॥ [illegible] ॥ मृग॥ [illegible]
मृ॰घ॰श॰पुन॰पुष्य॰चित्र॰ह॰उ॰३ प॰ मू॰रे॰ येनक्षत्रमृ॰ [illegible] पुष्य
है॥ और मिथुन कर्क धन कुंभ मीन चैत्र और पोष आषाढ [illegible]
मेंहै॥ ३३॥ इतिकर्णवेध॥ मूल॥ पूर्वाषाढोश्रुतिर्द्वे [illegible] ॥ [illegible]
फाल्गुनीहस्तत्रयंमूलंचरेवती॥ ३४ मेषाश्विनी चलानोष [illegible] टीका॥
मिथुनंमकरोयासोवालुकमीणंकोविदैः॥ प३प॥ श्रावणं [illegible] कार्तिक
फाल्गुणंतथा॥ मासेषुमार्गशीर्षेष्वबालुकमीणशस्यते॥ ३ [illegible] वज्रव्याघातशूल
निव्यतिपातश्चगंडकैः॥ विष्कुंभपरिघोवर्ज्योवारेभौ [illegible] ॥ ३७॥ टीका॥ पू
र्वाषाढपुनवृष्य॰रो॰म॰श्र॰ध॰श॰उ॰त॰फा॰ह॰ [illegible] मुमेंहै॥ सिंह
कंन्या कुंभ वृश्चिक मिथुन मकर येलग्न॥ ३८॥ श्रावण [illegible] कार्तिक फाल्गुन
येमासशुभहैं॥ ३६॥ वज्रव्याघात शूलव्यतिपात अतिगंड विष्कुंभ परिघ येयोगव
र्जितहै॥ मं॰श॰येवारवर्जेहै यामुहूर्तमेंमकानकीनीवधरिये॥ ३९॥ इतिबालुक
मे॥ मूल॥ आर्द्राशतभिषाश्लेषाविशाखाभरणीतथा॥ स्वात्यैचद्वादशीरिक्ताष

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शी॰टी॰ स्थिरं द्वन्तयोः रूमी ॥ ३८ ॥ इति पञ्च तिथौ वारो त्याज्यौ शनिकुजौ तथा ॥ मूर्तिदेवप्रतिष्ठायां
स्थिरलग्ने नारायणे ॥ ३९ ॥ टीका ॥ अब वापीकूप तडाग बागको मुहूर्त कहते हैं ॥
और कूपादिकनकी प्रतिष्ठाको यह मुहूर्त है ॥ अ॰ श॰ ज्ये॰ वि॰ म॰ कृ॰ येन क्षत्र
... कायेन विषे वर्जे है ॥ १ ॥ ४ ॥ ९ ॥ १४ ॥ ६ ॥ ३० ॥ ८ ॥ १ ॥ ये तिथि वर्जी है ॥ शनि भौम वार द
वर्जि देवालयादिक प्रतिष्ठा माही कर्तव्य है ॥ स्थिर लग्न और उलरायण सूर्य नमें की
प्रतीष्ठा जिये ॥ ३९ ॥ इति देवालय वापी कूप तडागादि ... प्रतिष्ठा ॥ मूल ॥ विशाखोमैर
... रोहिण्या श्लेषा पंचम घान्तथा ॥ अमावास्या च रिक्ता ... भौम रविस्तथा ॥ ४० ॥ गृह
प्रवेशे चैव स्यु पूर्वाषाढ त्रकीर्तिताः ॥ अश्विनश्च ॥ स्थिर लग्ने ... पद्मे बुधैः स्मृतः ॥
टीका ॥ अब प्रवेशको मुहूर्त कहते हैं ॥ वि॰ म॰ ज्ये॰ म॰ येन क्षत्र ... ॥ अमावा
स्या रिक्ता तिथि मंगल रविवार ये दो ऊ वर्जित है ॥ और ... और वृष
सिंह वृश्चिक कुंभ ये स्थिर लग्न में श्री ... उत्तम ... कार्य ॥
गृहप्रवेशः ॥ मूल ॥ सौम्य राधा च ... ममघादि तिथी ... तिथि ...
त्याम लग्न त्रयं ॥ ४२ ॥ गोष्ठी उष्ट्र हलेकार्ये हेयाः सूर्य शनि कु ... ॥ ... तथा ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

द्वितीयाद्वयपर्वंच ॥ ४३ ॥ त्रिभित्रिभित्रिभिपंचाभ्रिभिपंचत्रिभिर्द्वयं ॥ सूर्यभा ॥ [illegible]
त्संजातुहानिवृद्धिहलचक्रमात् ॥ ४४ ॥ टीका ॥ रे॰ उ॰ मृ॰ [illegible] म॰ श्र॰ पुष्य
श्रव॰ रो॰ म॰ रे॰ उ॰ ३ येन त्तत्र हलकर्मकों श्रेष्ठ है ॥ और सूर्य के [illegible] दान [illegible]

अथ हलचक्रम्			
३	३	२	
[illegible]	५	५	
	३	३	३

लोकमते हल चक्र मे सम फल जाय ॥ [illegible]
और ६ ॥ ४ ॥ ८ ॥ १४ ॥ १२ ॥ २ ॥ ३० ॥ ४३ [illegible] और व्यतिपात
योग इतने सर्व वर्जित है प्रथम हानि [illegible] फिर हानि
याही प्रकार गनिये ॥ ४४ ॥ अथ हलयात्राका मुहूर्त मूल ॥ श्र
वणाधात्रयं हस्त ह्युगा [illegible] चादितिद्वयं ॥ यात्रायां रेवती नि शास्ता
दान्याम सणीद्वयं ॥ मघान्तराविशाखा च सर्पो [illegible] ॥ षष्ठी रिक्ता द्वादशी
चपर्वणी च पर्व वर्जयेत् ॥ ४६ ॥ लग्ने कन्या मन्मथ श्रम मकर [illegible] लघर ॥ यात्रां च
हुफले कार्य शकुनं च विचारयेत् ॥ ४७ ॥ टीका ॥ अब यात्रा का मुहूर्त कहते हैं ॥
रे॰ उ॰ मृ॰ ह॰ म॰ श्र॰ पु॰ पुष्य॰ रे॰ येन त्त्र शुभ है और ६ ॥ ४ ॥ ८ ॥ १४ ॥ १२ ॥ ३० ॥ १५
ये तिथ वर्जित है और व्यतिपात त्याग के ॥ क॰ मि॰ तु॰ म॰ ये लग्न शुभ है चंद्रबलस्य

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रुसगुणविचारकैयात्राकरियै ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ अथदिशाशूलनिषेधं ॥ मूल ॥ शनौचं
द्रेसजेन्नरवौदक्षिणस्यां दिशांगुरौ ॥ सूर्येशुक्रेपश्चिमायांबुधभौमेतथोत्तरे ॥ ४८ ॥
टीका ॥ शनिसोमवारकोपूर्वमेंदिकशूलहै ॥ ताकोसनमुखनचलियै औरगुरुवा
रकोदक्षिणमे रविशुक्रवारकोपश्चिममे औरमंगलबुधवारकोउत्तरमेदिशाशू
लजानियै ॥ मूल ॥ सर्वादिग्गमनेहस्तपुष्याश्विन्यनुराधाम्रगः ॥ सर्वसिद्धिकरःपुष्यो
विद्यार्थांचगुरोर्यथा ॥ ४९ ॥ टीका ॥ अवसववारिसनके चलिवे [illegible]सर्वदिशाकोकह
तेहै ॥ अश्वि॰अ॰ह॰रे॰म॰पुष्य॰ येनक्षत्रसकलसिद्धिकेदा
तारै ॥ जैसोविद्याकोवृहस्पतिसमानगुरुः ॥ ४९ ॥ इतिसर्व
दिग्गमननक्षत्राणि ॥ मूल ॥ प्रतिपत्सुनवम्यां चपूर्वस्यां
दिशियोगिनी ॥ आग्नेकोणेतृतीयायां [illegible]कादश्यांतदास्म
ता: ॥ ५० ॥ त्रयोदश्यांच पंचम्यां दक्षिणस्यांशिवप्रियां ॥ द्वा
दश्यांच चतुर्थ्यांचनैऋतकोणगामिनी ॥ ५१ ॥ चतुर्दश्यां
षष्ठ्यांच [illegible]श्चिमायांच योगिनी ॥ पूर्णिमायांचसप्तम्यांवायु[illegible]

॥ [illegible] ॥ ३ ॥ ११	॥ पू॰ ॥ १ ॥ ९ ॥	॥ अ॰ ॥ ३ ॥ ११
॥ [illegible] ॥ २॥ [illegible]	[illegible] योगिनी चक्र [illegible]	॥ द॰ ॥ ५ ॥ १३
[illegible] ८	॥ वा॰ ॥ १५ ॥ ७	॥ [illegible] ॥ ४ ॥ १२
[illegible]	३० ॥ ६ ॥ १४	[illegible]

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कोणे च पार्वती ॥ ५२ ॥ दशम्यां च द्वितीयायां मृत्तरस्यां शि[illegible] श्रीचंद्र प्रम[illegible]
वाष्टम्यां योगिनी निम्रुदाहृता ॥ ५३ ॥ टीका ॥ ग्रवयोगि[illegible] पौ दिवके[illegible]
स्याठे दिशान में वास होता है सचक्र मे समझली जिये ॥ ५[illegible] ॥ ५[illegible] ॥ [illegible] ३ ॥
योगिनी सुखदा वामे पृष्टे वांछित दायिनी ॥ दक्षिणे धनहंत्री [illegible] मे वा[illegible]
या ॥ ५४ ॥ टीका ॥ यात्रा में बाई योगिनी शुभ है सुख करे श्री[illegible] होय मन
वांछित पूरी करे ॥ जो दाहिने होय तो धन की हानि करे जो [illegible] होय तो मृत्यु
करे ॥ इति यात्रायां योगिनी फलम् ॥ मल ॥ मासस्य प्रतिपत् श्रेष्ठा द्वितीया· दा
कार्यकारिणी ॥ आरोग्यदा तृतीया च चतुर्थी कलहप्रदा ॥ [illegible]मी च प्रिया नित्यं
षष्ठी कलहकारिणी ॥ मद्यपानसमायुक्ता स[illegible] सदा ॥ ५६ ॥ अष्टमी व्या
धिदा नित्यं नवमी मृत्युदा स्मृता ॥ दशमी [illegible] [illegible]कादशपि है सदा ॥
द्वादशी प्राणसंदेहा सर्वसिद्धा त्रयोदशी ॥ शुक्लाया यदि वा ह[illegible] वर्जनीया
चतुर्दशी ॥ ५८ ॥ पौर्णमास्यां च मावस्यां प्रस्थानं नैव कारयेत् ॥ तिथि त्रये च मा·
संते गृहाणां ते दिन त्रयम् ॥ ५९ ॥ टीका ॥ इसमें पांच श्लोक न वे[illegible] अर्थ सरल है ॥ ग

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शी॰टी॰ मनको अशुभ पशुभ तिथेक ही है॥ दिनकाफल समझलीजिये तिथिक्षयमें मासांतमें औरसंतति रविचंद्रग्रहणमें तीन दिन मानिये॥ ऐसे अशुभयोगमें गमन न कीजे॥ ५५॥ ५६॥ ५७॥ ५८॥ ५९॥ इति यात्रायां निषेधः॥ मूल॥ अ

अथ दिवसे प्रत्यहं दिवा सञ्चलत्येव घटिका राहु								
दिशा	पू०	वा०	द०	ई०	प०	अ०	उ०	नै०
घटी	३॥	१॥	१५	१५	१२॥	२४॥	२६॥	३०
यावत्	यावत्	यावत्	यावत्	यावत्	यावत्	यावत्	यावत्	यावत्

[illegible]

…हार्धे शुभप्रथमार्धे… [illegible] पूर्वस्यां वामतो राहु… [illegible] दिशां व्रजेत्॥ या… [illegible] दक्षिणे राहुयोगिनी… मतः शुभः॥ [illegible] यमाख्या… ते चंद्रमा सन्मुखे शुभः॥ ६१॥ टीका॥ अब चौघटी राहुकी घ[illegible] दिशाको राहु दिनप्रति चलत है॥ इसी चक्रमें सम… मझलीजे॥ जो चार पहर दिनका क्रम है॥ सोई रात्रको जानिये॥ ६०॥ यात्रामें राहु दाहिने शुभ है॥ योगिनी वाईं शुभ

अथ रात्रौ चलत्येव घटिका राहु [illegible]								
दिशा	पू०	वा०	द०	ई०	प०	अ०	उ०	[illegible]
घटी	३३॥	३०॥	४४॥	४५	४८॥	५२॥	५६॥	
यावत्	यावत्	यावत्	यावत्	यावत्	यावत्	यावत्	यावत्	

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

हः॥ श्रोरपीठिदाहिनेकोप्रशुभहः॥ युद्धादिककूरकर्मविषै श्रोत्रचंद्रप्रशुभ[illegible]
कर्मकेविषैसन्मुखदाहिनेप्रशुभहः॥ ६३॥ मूल॥ चंद्रश्च[illegible]र्वादिक्रमेण
चलत्यं॥ मेषादिकेषुयात्रायांसन्मुखेदक्षिणेशुभः॥ ६२॥ टीका॥ [illegible]चंद्रमा

	पू.	द.	प.	उ.
मे. १	वृ. २	मि. ३	क. ४	
सिं. ५	क. ६	तु. ७	वृ. ८	
धा. ९	म. १०	कुं. ११	मी. १२	

जोहैचारोदिशाकुचलता[illegible] मेषादि[illegible]को
सन्मुखदाहिनेसदाशुभमे[illegible]॥ ६२॥ मूल॥ मेष
चसिंहेधनपूर्वभागेवृषेचकन्यामकरेतु
याम्ये॥ मिथुनेतुलेकुंभेपश्चिमायांकर्कोऽथ
लीमीनच उत्तरस्थ॥ टीका॥ मेषकेचंद्रमापूर्व
दिशामैवसतहै॥ वृषकेचंद्रमादक्षिणमैं मिथुनकेचंद्रमापश्चिममे कर्क
केचंद्रमा उत्तरमैवासकरतहै॥ याहीभांतितीनीनितानिआवतेफिरतेहै॥ इति
चंद्रवासचक्रोदाहरण॥ मूल॥ सन्मुखे[illegible]थैलाभाय दक्षिणेसुखसंपदाः॥
पृष्ठतोमरणंचैववामेचंद्रोधनक्षयः॥ ६४॥ टीका॥ सन्मुखचंद्रमाधनलाभक
रै पीठपाछैमृत्युकरै॥ दाहिनेसुखकरै बायेधनकीहानकरै॥ ६४॥ मूल॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शी·टी· यामयुग्मे च रात्रौ च वामे पूर्वादिगो रविः ॥ यात्रास्मिन्दक्षिणो वामे प्रवेशे·
रष्टकेदर्य ॥ ६५ ॥ टीका ॥ पहर रातिरहे तैर पहर दिन चढे लो सूर्य पूर्वदिशा·
रहता है ॥ पहर भर उपरांत दो पहर तक तीन पहर दिन चढे तलक दक्षिण
दिशामे रहत है ॥ तीन पहर उपरांत २ पहर पश्चिममे रहते है फिर पाच पह
र उपरांत वै पहर उत्तर दिशामे रहत है ॥ ऐसे प्रकार सूर्य चारौ दिशामे चल
त है ॥ यो यात्रामे वाम दक्षिण शुभ है ॥ औ प्रवेशमे पीठ सन्मुख शुभ है ॥ इति
रविविचार ॥ मूल ॥ मनुः १४ भानु १२ दिशा १० सप्पैः ८ रस ६ वेदा ४ स्वनर
क्रमात् ॥ रविवारान्मुहूर्तोयं कुलिको निंदितः शुभे ॥ ६५ ॥ टीका ॥ सुवकु
लिक योग कहते है ॥ रविवारको चौदहो १४ मुहूर्त कुलिक [illegible] हुये है सो
मवारको बारहो १२ भौमवारको दशवो १० बुधवारको [illegible] वार
कौ छठौ ६ शुक्रवारको चौथेमे ४ शनिवारको २ दूसर [illegible]
ये ॥ मुहूर्त प्रमाण दुई घडीको कहत है ॥ सो प्रातकालते [illegible]
शुभकार्यमे वर्जित है ॥ ६६ ॥ मूल ॥ गतानाड्यादिगुणिता [illegible]

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शेषसाऽंशयुतश्चैको सप्तशेषेप्रमस्थितं ॥ ६६ ॥ कालहो [illegible] मा
सौम्यफलप्रदः ॥ सूर्यशुक्रबुधश्चंद्रो मंदजीवबुधक्रमा [illegible] जस्य
ज्ञातव्यादिगणायेतत्क्रमात् ॥ शुभेयहस्यशुभदो मह्हतैर्निष्ट [illegible] ॥ ६७ ॥ टी
का ॥ प्रथमसातवारजेहै सोएकएकवारमैभोग्यहोतहै ता [illegible] ल [illegible] कहि
तहै ॥ सोजैसेशुभाशुभकार्यकौजोवारप्रशस्थहोइतिसका [illegible] दिलीजे
यै ॥ सूर्योदयसोजेताघरीगतभईहोई तिनकौद्विगुणीकीजैताभैपभागदी
जे शेषबचेतौघटाइकैतामेंएकओरमिलायवै ॥ फिरउसमैं सातकोभागदीजि
यै ॥ जोअंकबाकीबचेतोवर्तमानदिनसोसीधेक्रमसोंगनियै ॥ तौनहोरावर्ता
होयैजैसेरविवारकौएकबचेतौसूर्यकी [illegible] शु·श·७ याहीप्रका
रवर्तमानदिनसोआदिदैकैगनियै याप्रकारकरिपहिलेसूर्योदयतेघरी २
पल २५ पर्यंतपहिलेवारकौफिरघडीचार ४ पल ८ यावत छठयेवारकौफि
रघरी ७ पल २० यावत् तासांछट्येक्रमसौ सू·शु·बु·चं·श·बृ·मं· जैसेभोग्य·
मानहोतहै सोसमझलीजियै ॥ इतिमुहूर्तेदेवताकालहोरानिर्णयः ॥ ६८ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शी॰ टी॰ ॥ इदं ॥ अथ उद्धवाद्यादि प्रयोजनसर्वांक मुहूर्तम् ॥ मूल ॥ तिथिवारं च न
क्षत्रं नामाक्षरसमन्वितम् ॥ त्रिचलमिश्रितं रससप्ताष्टभाजितम् ॥ इष
श्चादिशून्ये भवेद्धानि मध्यशून्ये रिपोर्भयं ॥ अंतशून्ये भवेन्मृत्युः सर्वांके वि
जयी भवेत् ॥ ७० ॥ टीका ॥ पक्षकी परिवासें तिथि गानें जो तिथि होय ताको अंक
लीजिये ॥ और वारको अंक रव्यादि गनिकें लीजियें और अश्विनीते गनिकें न
क्षत्रांक लीजे और राजाको मुहूर्त विचारियें ॥ ताको उकारादि नामके प्रगट नामके
अंक लेकरि सब अंक एकत्र कीजे ॥ ताहि पिंडको त्रिगुणो करिकें छह दे को
भाग दीजे ॥ और उसी पिंडकों त्रिगुणो करिकें सातको भाग दीजे ॥ और ताही पिंड
कों चौगुणो करिकें ॥ आठको भाग दीजे जो पहिले भागमें [illegible] आवे तो शत्रुते
अंक परे तो कछु हानि होई ॥ और मध्य पिंडमें भाग शून्य [illegible] तो शत्रुते भय हो
य ॥ और अंतके पिंडमें भाग शून्य परे तो मृत्यु भय [illegible] करे ॥ औ
र आदि मध्य अंत तीनो भागनमें शेष अंक बचे तो सिद्धि [illegible] जय [illegible]
को दाता है ॥ ७० ॥ इति सर्वांक निर्णयः ॥ मूल ॥ शशिप्रवां [illegible] शेषादि [illegible]

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

येप्रवाहेनहिकिंचनापि॥प्रवृजेयस्पाद्वयमानमारो[illegible]प्रव॥वि[illegible]
मतं॥७१॥टीका॥यात्रामेंचंद्रमाकास्वरहोयतौशुभ[illegible]होई॥औ
रसूर्यकौहोयतौविलंवहोयकार्यमै॥औरदोनौस्वरहो[illegible]भाव॥हये
तामैकार्यनाहोय वायोस्वरचंद्रको दाहिनोसूर्यकोसोजोपृछक व[illegible]औरसुष्मनास्वर
एकहोयतौचंद्रमाकोकार्यसिद्धिहोयशीघ्रही॥औरजैसेसूर्य[illegible]तौकार्यनाहो
य॥औरपृछककपीठपीछेहोयकैजोपूछैतौशुभहे॥औरदा[illegible]नेशुभहै॥७१॥
मूल॥दक्षिणेतुवदाशुक्रोसन्मुखेहंतिलोचने॥वामेएछेशुभेनित्यंरोचयेचा
लगाशुभः॥७२॥टीका॥अवशुक्रकाविचारकहतेहैं॥जा[illegible]केसमयेदाहि
नेशुक्रहोयतौसुखकादाताहै॥सन्मु[illegible]सन्मुखहोयतौनेत्रोमेंपीडाहोय॥औरजो
बांयेअरुपीठपीछेहोयतौकार्यसिद्धिहोय॥औरजोशुक्रकेउदयअस्तमेयात्रा
करेतौशुभहै॥७३॥इतियात्राविचार॥मूल॥पुष्येनाहूपदायुग्मंमैत्रेश्र
वणाचाश्विनी॥हस्तोत्तरामघाःस्वातीतथाश्लेषाचरेवती॥७४॥ग्राह्यानिमा
निचैतानिक्रयविक्रयणोवुधैः॥चंद्रमागेवजीनाश्चवाराशकुनीमत्तमं॥७५

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

टीका॥ पुष्य. पूर्वाभा. उत्तराभा. अनु. श्र. ह. म. रो. उत्तरा. अश्वि. श्ले. रे. येन
नक्षत्रनमें लेवेको पंडितन शुभ कहे है निश्चै कर कैं॥ और सोम शुक्र गुरु और
उत्तम शकुनी विचारकै सकल वस्तु लीजे बेचिये गाई भैंस घोडा इत्यादि समेत॥ ७४॥ इतिक्रयविक्रयः॥ मूल॥ धनिष्ठार्द्ध क्वचेत्साऽन्त्य एकाद्यादिसंयदि
त्याज्या दक्षिणादिग्यात्रा गृहाणां छादनं तथा॥ ७५॥ टीका॥ धनिष्ठा आदि दे
पाँच नक्षत्रको पंचक होत है॥ तामें तृण काष्ठादिकको संग्रह ... ताको जे॥ और
दक्षिणदिशाको नाच लिये ना घर बनावे न छावे॥ ७५॥ मूल॥ तैलाभ्यंगे रवौ
तापः सोमे सोमा कुजे मृतिः॥ बुधे धनं गुरौ हानिः शुक्रे दुःख ... सवं॥ ७६॥ र
वौ पुष्यं शनैः पूर्वा भौम वारे च मृत्तिका॥ गोमयं शुक्रवारे च ... मोन दोषभा
क॥ ७७॥ टीका॥ जो रविवारको तेल लगावै तो संताप होय ... सो मा
भौमको कष्ट होय बुधको धनलाभ होय शुक्रको दुःख ...
व पावै गुरुवारको हानि होय रविको तेलमें फूल डालिकें ... र दान ...
मंगलको मृत्तिका शुक्रको गोबर के योग कर तेल लगावै ... ए. १४॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इति तैलाभ्यंगः ॥ मूल ॥ हस्तत्रये चित्रस्वयुगे मघार्या पुष्ये ध्रु... वर २७ ...
मूलाानुराधा हय रेवती षु स्थिरे षु लग्ने षु वधूप्रवेशः ॥ ... ॥ २८ ... ॥
टी० ह० म० पुष्य० घ० श्र० उ० ३ मू० अनु० श्वि० रे० इन नक्षत्रनमें ...
शक राशये स्थिर लग्नो के विषै ॥ २८ ॥ इति वधूप्रवेश ॥ मूल ... थवा
तिरोहिणी च पुनर्वसुः ॥ रोहिणी ॥ रोगी स्नानं रेवती चवर्ज्यं ... त्रयं ॥ ७९ ॥
रिक्तातिथौ चरे लग्ने वारे च रवि भौमयोः ॥ स्नानं च रोगी ... ब्राह्मण द्विज भोज
नं समर्पयेत् ॥ ८० ॥ टीका ॥ श्ले० म० स्वा० रो० पुन० उ० ३ इन नक्षत्र मे रोगी को स्नान व
र्जित करै ॥ ७९ ॥ और रिक्ता तिथि और चर लग्न और रवि ... मवार ॥ ६ ॥ ८ ॥ १२
इन चंद्रमा में रोगी को स्नान करावै तो बहुत श्रेष्ठ है ब्राह्मण को भोजन करावै
८० ॥ इन मुहूर्त ग्रंथन ते शुध करि लग्न ... यह दिखा दिये ॥ इति रोगी स्नानं
मूल ॥ आनंदः कालदंडश्च धूम्रा ध्वांक्षो थ प्रजापतिः ॥ सौम्य ध्वांक्षो ध्वजश्चापि
श्रीवत्सो मुसलो ... ॥ ८१ ॥ छत्र मित्रं मानसाख्यं पद्मा लुंबक स्तथा ॥ उ
त्पात मृत्यु काणाश्च सिद्धश्चापि शुभो मृतः ॥ ८२ ॥ मुसलं गद मातंग राक्षसश्च

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

शी॰टी॰ चरस्थिरः॥ वर्द्धमानश्चविज्ञेयाश्चराधंशतिभिस्तमी॥ ८३॥ फलत्वनामस
दृशोयोगोदैवज्ञभाषिताः॥ अश्विनीरविवारेचयोगोह्यानंदसंज्ञकः॥ ८
४॥ मृगशीर्षेशीतरश्मिश्लेषायांक्षितिनंदने॥ बुधेहस्तेगुरौधाचदेवरा
जपुरोहितः॥ ८५॥ भार्गवेचोत्तराषाढौशनौशतभिषातथा॥ तदानंदाख्य
योगास्यात्कालदंडादयःक्रमात्॥ ८६॥ टीका॥ आनआनंदादियोगादिकक
हेहैसोवारऔरनक्षत्रमिलकरकेहोतहै॥ अश्विनीऔररविमिलकेआ
नंदयोगहोतेहै॥ मृगशिरऔरसोमवारको श्लेषाऔरमंगलवारकोहस्त
बुधवारकोगुरुवारअनुराधासो शुक्रवारउत्तराषाढसे औरशतभिषाश
निवारको इसीभांत आनंदयोगहोतहै॥ इसीरीतसेसब [illegible] लीजेजैस
नामजिसयोगहोतहैसोईफलजानियै॥ उत्तमममध्यमफ [illegible] जानाहै॥ अ
बआनंदादियोगसंज्ञा॥ आनंद१ कालदंड२ धूम्र३ [illegible] तिः४ सौ
म्य५ ध्वांक्ष६ ध्वज७ श्रापि८ श्रीवत्स९ वज्र१० मुद्गर११ छत्र१२ मित्र
१३ मानस१४ पद्म१५ लुंबक१६ उत्पात१७ मृत्यु१८ काण१९ सिद्ध२०॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

आय २१ शुभ २२ अमृत २३ मुशल २४ गद २५ राक्षस २६ चर २७ स्थि[illegible] २८
व इन अठाईस जे विशेष करि प्रधान है सो कहत है ॥ २१ ॥ २२ ॥ [illegible] २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६
वारे मूल ॥ हस्तसूर्येमृगोसोमेभौमेत्याश्विनी ॥ बुधेमैत्रंगुरौपुष्ये [illegible] भृगुनंदने ॥
भौमे २७ ॥ रोहिणीरविपुत्रश्च सर्वसिद्धिप्रदायकः ॥ अमावस्ता [illegible] द्यायोगाःप्रो-
क्ताः पुरातने ॥ २८ ॥ टीका ॥ अब अमृतसिद्धयोग कहते है [illegible] फलकार्य सि-

वार	र॰	चं॰	मं॰	बु॰	बृ॰	शु॰	श॰
नक्ष	ह॰	मृ॰	अश्वि॰	अनु॰	पु॰	रे॰	रो॰
सिद्धि	अम॰	अम॰	अम॰	अम॰	अम॰	अम॰	अम॰

द्धि शीघ्र सिद्धिकारक है [illegible] श्लोक की उक्ति माफिक या चक्र मे समझ लीजिये ॥ २७ ॥ २८ ॥ मूल ॥ मघादित्ये विशाखेंदु भौमे चार्द्रानलं गुरौ ॥ बुधे मूलं विधे शुक्रे यमघंटः शनैकरे ॥ २९ ॥ टीका ॥ रविवार को मघा नक्षत्र होय तो यमघंट योग कहिये ॥ सोम को विशाखा भौम को आर्द्रा बुध को मूल गुरु को कृत्तिका शुक्र को रोहिणी शनि को हस्त होय तो यमघंट योग कहिये तामें शुभ कार्य वर्जित है ॥ ३० ॥ मूल ॥ नंदा सूर्ये च भौमे च भद्रा भार्गव चंद्रयोः ॥ बुधे जया

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शी.टी. गुरौ रिक्ता शनौ पूर्णा च मृत्युदाः ॥ ५० ॥ टीका ॥ रविभौमवारको नंदा तिथि
होय तौ मृत्युयोग जानिये ॥ शुक्रसोमवारको भद्रा तिथि होय तौ मृत्युयोग हो
यता है ॥ बुधवारको जया तिथि ॥ गुरुवारको रिक्ता शनिवारको पूर्णा तिथि हो
यतौ मृत्युयोग जानिये ॥ शुभकार्य के विषे मृत्यु को दाता है ॥ ५० ॥ मूल ॥ अंध्र
चाक्षचिपटाक्ष काणा तो दिव्यलोचन ॥ गणयेद्रोहिणी पू[illegible]ः सव्यवार
मक्रमात् ॥ ५१ ॥ म ॥ टीका ॥ अंध चिपट काने सुलोचन चार भांति के
नक्षत्र होय है ॥ रोहिणी आदि दे क्रमते सो ख्याल जानिये ॥ जो किसी की वस्तु जा
ती रही है ताके विचार मे कहे है सो चक्र धरा है तामें समझ लीजिये ॥ ए ॥ मूल

रो.	पु.	उ.	वि.	पू.	ध.	रे.	अंधेलोचन
मृ.	श्ले.	ह.	स्वा.	उ.	श.	अ.	चिपट
आ.	म.	चि.	ज्ये.	अ.	पू.	भ.	कानेलोचन
पु.	पू.	वि.	मू.	श्र.	उ.	कृ.	सुलोचन

अंधे चलमते [illegible] मेदे चैव दिन
त्रयम् ॥ काणे [illegible] मासमेकं तु सु
नेत्रे नैव दृश्यते ॥ ५२ ॥ टीका ॥ जो
अंधे नक्षत्र मे वस्तु जाय तौ जल्दी
मिले दिव्यलोचन मे जाय तौ उ[illegible]

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नमे मिले॥ इत्यं धादिनक्षत्राणं॥ जो काने मे जायतो ३ दिन मे दिन मे मिले स
लोचन मे जायतो नाही मिले॥ १॥ मूल॥ पुनर्वसु मघा हस्ता अष्टमे त्रक स
लथा॥ पूर्वाषाढोतथा ज्येष्ठा मूलं दक्षिणचारिणः॥ ५३॥ ... रोहिणीपुष्यो
चित्राश्लेषा चरेवती॥ शतं धनिष्ठा श्रवणो नवमध्यमचा... ॥ ५३॥ अश्वि
नी भरणी स्वाती विशाखा फाल्गुनी द्वयम्॥ मघा भाद्रपदा ... नव चोत्तरचा
रिणः॥ ५४॥ टीका॥ पुन॰ म॰ अ॰ ज्ये॰ ऽन॰ ह॰ पू॰ षा॰ उ॰ षा॰ मू॰ ये अष्टउनक्षत्रप
वे दिशा ते दक्षिण को चलते है॥ ऽश्वि॰ भ॰ स्वा॰ वि॰ पू॰ फा॰ उ॰ फा॰ म॰ पू॰ भा॰ उ॰ भा॰
ये नव पूर्व ते उत्तर को चलते है॥ ५५॥ इति नक्षत्रचार मूल॥ भ्रमती द्वादिशो
वत्सो मासानां च त्रिकं त्रिकं॥ भाद्रो भाद्रपदं कृत्वा सर्वतो दिक्चतुष्टयं॥ ५६
यात्रा विवाहसंबंधं गारंचारहहमे यो॥ भ्रमते गिलनं यरुर्ववत्सस्याभि मुखं त्य
जेत्॥ ५७॥ टीका॥ इंद्रदिशा जो है पूर्व ताहि जादि देवत्स क हत है॥ वत्स के
रूप यो ग तीन महीना एक दिशा मे रहत है॥ भादो के महीने ते तीन महीना पहि
ले पूर्व दिशा मे रहत है॥ औ अगहनते ३ महीना दक्षिण मे रहत है याभांति क

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३३

टी॰टी॰ असो विशाखा सजानिये॥ वत्सयोगके सन्मुख यात्रा स्त्री विवाद संबंध घर
का घर आरोपण राजासे मलाकात करनी. स्त्री रयुरुद्दत नेकार्य नाकीजे॥
वाये स्त्री रुपी ठपरुषु मेहः॥ ५७॥ ५८॥ मूल॥ त्रयंत्रयमेश्वे दानो घटा विधो पंच
मगात्रयं॥ एकमाद्रौ वनदंत्रे चत्वारि च पुनर्वसौ॥ ५५॥ पुष्ये त्रयं स्मृतः सार्प्ये म
घायां भानि पंच च॥ १॥ चित्रास्वातौ रेकमेकं [illegible] चहिदैवते॥ त्रयं मैत्रे रनु
राधा च ज्येष्ठायां च त्रयं स्मृताः॥ २॥ मूले [illegible] च [illegible] तथोत्तरे॥
त्रयं चाभिजित श्रोत्रे श्रवणे च त्रयं तथा॥ ३॥ धनिष्ठायां च चत्वारः शतं शत भि
षां स्मृच॥ द्वयं द्वयं भाद्रयोश्च वा विंशे द्विपिचोतके॥ ४॥ टीका॥ अव ग्रह से मन्द
रजो जितने जितने नक्षत्र केरुंड मो उदय अश्वा काश में सो [illegible] समझलीजि

अ	भ	कृ	रो	मृ	आ	पु	पु	श्ले	म	पू	उ	ह	चि	स्वा	वि	अनु	ज्ये	मू	पू	उ	[illegible]	श्र	ध	श	पू	उ	रे
२	३	५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३	३	११	४	[illegible]	[illegible]	६	६	१०	२	२	२२

ये॥ ५॥ घातन नक्षत्र चारा॥ मूल॥ लग्नेष्टमे व्यये मूर्ये दोत्र [illegible] भाग॥ आकाशे टे
वी चंद्रे लग्ने षष्टेष्टमे व्यये॥ ५॥ द्वादशी दशमे भौमे डाकिनी [illegible] स्मृताः॥ वज दोषो

[illegible] प्र

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नवद्दोषोद्वादशेसप्तमेबुधः॥६॥यामित्रेद्वादशेजीवेदेवदे [illegible] निमाश्च [illegible]॥ष्ट्रेति
ष्ठयेदैसप्तजेजलदेव्याश्चदर्षणं॥७॥शनैश्चरेष्ठयेचाटे [illegible] समादामवातय:
यामित्रेद्वादशेराहौकुगातिज्ञातिदूषणं॥८॥पित्रदोषोभवे [illegible] क्षुधाहानिति
वर्णितं॥वृषेगानदेव्याश्चज्वरकुक्षनेत्ररुक॥९॥मिथुन [illegible] महामायादो
षोवेलाज्वरोनिलः॥कर्कैचशाकिनीदोषोहास्यरोदनमे [illegible]॥१०॥सिंहेजा
तेप्रेतदोषोदिवाशीतिज्वरोरुचिः॥ग्रहदोषश्चकन्यायांक्रोधालस्यचतुर्थ्यै
या:॥११॥क्षेत्रपालभवेदोषोतुलेसंतानपीडनं॥वृश्चिकेनागदोषश्चज्वाला
देहकुचिंता:॥१२॥चापेदेहभवेदोषोज्वरकोशोको [illegible]॥मकरेचंडि
कादोषोदेहभंगोज्वरोनिलः॥मलिनप्रेतदोषश्चकुंभेदेहस्यपीडनं॥मीने
चापिगानादोषोज्वरोजंजालदर्शनं॥१४॥[illegible] मेत्तृतीयेचषष्ठेपापग्रहेयु
दा॥हतोगारेजलशस्त्रेगारेस्थेयेस्ववंशजः॥१५॥शनौजलेकुजेशस्त्रेयतेसूर्ये
स्ववंशजः॥राहुविक्रमतोनष्टःशांतिपूजाद्विजार्चनैः॥१६॥स्वदेशेगोत्रदोषोपि
परदेशेपरोजवः॥शत्रुक्षेत्रेशत्रुदोषोमित्रक्षेजलसंभवः॥१७॥टीका॥जोस

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शी॰टी॰ येलग्नमें होय अथवा ॥८॥१२॥ होयतौ क्षेत्रपालको दोषजानिये। जवशरी
रमें व्यथापावे तव क्षेत्रपालकापूजनकरै तौ शांत होय। औरजोजन्मकाल
में चंद्रमा॥१॥६॥८॥१२॥ होयतौ आकाशदेवीतें दोषकरिकैहोय॥५॥ औरजन
मकालविषैजो मंगल॥१०॥१२॥ होयतौ डाकिनीदोषकहिये औरजोवुध
७॥१२॥ होयतौ वनदेवी दोषजानिये॥१०॥६॥ जोवृहस्पति॥७॥१२॥ होयतौ
देवदोषजानिये औरजो शुक्र॥७॥१२ होयतौ जलदेवीकादोषहोय॥८॥ जो
शनिश्चर॥७॥१२॥ होयतौ ग्रामवामकोकरे औरजो राहु॥७॥१२॥ होयतौ कु
गतिहोय अपनी जातहीसे दोषउपजै॥१०४॥ औरजो मेषलग्नमें जन्महोय
तौ अथवायवृषरै। औरजैसे गरहपरैतौ पित्तदोषहोय [illegible] होयकुरूप
औरजोवृषमें जन्महोयतौ आकाशदेवीतें दोषहोयज्वर होय। उलटाभया
नकस्वप्नहोइ॥ जोकर्कलग्नमें जन्महोयतौ। नेत्रमैपीडाकरै [illegible] मिथुनलग्नमें
जन्महोयतौ जोनिविद्यस्पर्शैतौ महामायाकादोषहोय ॥९॥ [illegible] ज्वरहोय:
जोकर्कलग्नमें जन्महोयतौ शाकिनीदोषतें हँसैरोवै। अरमीनलग्न [illegible]

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जो सिंहलग्नमेंजन्महोयतौ प्रेतकीपीडाहोय दिनमें ज्वरहोययात्राकों ॥ जो ह्
जो कंन्यामेंजन्महोयतौ देहदोषहोई ॥ देहमेंपीडा ॥ क्रोध स्त्रीसें कलही की
मथाहोई ॥ २१ ॥ जो तलामेंजन्महोयतौ देवपालतेपीडाकरें ॥ वृश्चिकमें
जन्महोयतौ सर्पतेभयहोई ॥ देहमेंपीडाजरनिउपजेकुदृष्टिहोय ॥ २२ ॥ ध
नलग्नमेंजन्महोयतौ देहदोषज्वरशोकपेटपीडाहोय ॥ मकरलग्नमेंजन्म
होयतौ चंडिकातेदोषहोई ॥ अंगभंगहोई अमलज्वरहोई ॥ कुंभलग्नमेंज
न्महोयतौ प्रेतदोषकरें ॥ मलीनशरीररहैपीडाकरै ॥ अरु मीनमेंजन्मह
यतौ योगनीतेदोषहोय महाज्वरहोय ॥ २२४ ॥ अरु जो इनस्थाननमें १२
९ ॥ ३ ॥ ६ ॥ पापग्रहहोयतौ विषपीकेमरेकी जलमेंडूमरेकी शस्त्रघातहो
ई याही कुलवालेसे ॥ २२५ ॥ जो इनहीस्थाननमें शनिहोयतौ जलमेंबडे
मंगलहोयतौ हथियारनसेंमरे ॥ अरु सूर्य होयतौ निजवंशवालेकेहाथ
कोमिविषसोंमरे ॥ अरु राहुहोयतौ उलटीप्रकृतीव्है बेडपजे चोरीअरु कु
माया अनेकनकरेंडूबाखेले ॥ जो शुभग्रहहोयतौ आसनकिपजाकरेतौ

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ही॰ग्र॰ संतानक्षयरीहोइ ॥ ११६ ॥ जोस्वदेत्री श्रारिष्टगहहोयतो घरके श्रथवा
गोत्रीजनतेदोषकरै ॥ जोपरायेदेवमैदूषितगहहोयतो परमनुष्यजनित
दोषकरै ॥ जोशत्रुदेत्रीगहहोयतो शत्रुजनजनितदोषहोई ॥ मित्रस्व
जनबांधवादिकनकौशत्रुकरिजाने ॥ १७ ॥ इतिदोषज्ञान ॥ मूल ॥ श्रा
दित्ये चाश्विनी हस्त मूलं पुष्योत्तरात्रयं ॥ सिद्धियोगो धनिष्ठा च तिथि पंच
मा सप्तमी तथा ॥ ११८ ॥ टीका ॥ रविवारकौ ॥ श्रि॰ह॰म॰पुष्य॰उ॰३ध॰इनन
क्षत्रनमैकोईहोयतो श्रोरसप्तमीतिथिहोयतौसिद्धियोगहोय ॥ उत्तमकार्य
कीजे ॥ इतिसिद्धियोग ॥ मूल ॥ सूर्येविशाखामूलश्चपूर्वस्वमघातथा
चतुर्दशी द्वादशी च वर्जनीया सप्तमी तिथौ ॥ ११९ ॥ इतिकु[illegible] ॥ [illegible] ॥ सोमे
पुष्यानुराधा च श्रवणो रोहिणी मृगः ॥ नवमी द्वादशी [illegible] सिद्धियोग
प्रकीर्तिताः ॥ इतिसिद्धियोग ॥ मूल ॥ चंद्रे चित्रा विशाखा च तत्राषाढद्वयं
बुधैः ॥ एकादशी तथा षष्ठी वर्जनीया त्रयोदशी ॥ १२१ ॥ टीका ॥ सोमकौ
चित्रा ॥ वि॰पू॰षा॰उ॰षा॰होयतौ श्रोर ॥ ११ ॥ ६ ॥ १३ होयतौकुयोगहोइ ॥ [illegible] ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इतिकुयोगः॥मूल॥सौमेमूलाश्विनी सर्प्पेमृगोश्चोत्तर भाद्रपात्॥ष्ट॥ता
ष्टमीतृतीयाचसप्तमीचत्रयोदशी॥१२३॥टीका॥सोमकोदिन मू॰अश्वि॰
श्ले॰मृ॰उ॰भा॰॥८॥७॥३॥१३॥यतिथैहोयतोसिद्धियोगः॥मूल॥नि॰शाशतभि
षाद्रीचधनिष्ठापूर्वेभाद्रपात्॥मघाचोत्तराषाढेचद्वितीयादशमीकुजे॥२३
टीका॥मंगलको॥श॰श्रा॰ध॰पू॰भा॰म॰उ॰षा॰॥२॥१०॥येनक्षत्रओरतिथि॰
होयतौकुयोगः॥१२३॥मूल॥बुधानुराधापुष्यश्चकृत्तिकारोहिणीमृगाः
द्वादशीसिद्धियोगोवद्वितीयाशप्तमीतिथिः॥१२४॥टीका॥बुधको॥ष्ट॥५
ष्य॰रो॰मृ॰॥१२॥२॥७॥यतिथैसिद्धियोगः॥१२४॥मूल॥बुधेमूलेधनिष्ठा
चरेवतीचाश्विनीमृगाः॥तृतीयानवमीचापिबर्जेयेत्प्रतिपत्तिथिः॥१२५॥टी
का॥बुधको॥मू॰ध॰अश्वि॰रे॰मृ॰॥३॥९॥१॥येतिथैहोयतोकुयोगहः॥२५॥मूल
इतिकुयोगाः॥गुरोचदशमीपंचपौर्णमास्यांविशेषतः॥पौष्याश्विन्यानुराधा
चोत्तरौपुष्येपुनर्वसुः॥१२६॥टीका॥जोवृहस्पतिकोपूर्णोतिथिहोयतौ॥५
१०॥१५॥नक्षत्र॥अश्वि॰५उ॰पुष्य॰रे॰पुन॰होयतौसिद्धियोगकोहैये॥१२६॥इतिसि

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शी॰टी॰ द्धियोगः॥ मूल॥ जीवे शतभिषा द्रौ च कृत्तिकोत्तरफाल्गुनी॥ विद्धेमषोऽष्टमी
षष्ठी चतुर्थी च विवर्जिताः॥ १२७॥ टीका॥ जो गुरुवारको शतभिषा॥ आ॰ कृ॰
उ॰फा॰ रो॰ म॰॥ ९॥ ८॥ ४॥ ये तिथि होय तो कुयोग है॥ १२७॥ इति कुयोगः॥ मूल
शुक्रे चित्रार्यमाषाढा श्रवणाश्वपुनर्वसुः॥ सिद्धा चैकादशी षष्ठी प्रतिपत्तृत्र
यो दशी॥ १२८॥ टीका॥ शुक्रवारको चित्रा म॰ उ॰फा॰ रे॰ श्र॰ ऽश्वि॰ पु॰॥ ११॥ ६
१॥ १३॥ ये तिथि होय तो सिद्धियोग है॥ १२८॥ इति सिद्धियोगः॥ भार्गवे रोहि॰
णीपुष्या ज्येष्ठाश्लेषा मघा तथा॥ द्वितीया सप्तमी चापि वर्जनीया सदा बुधैः
१२९॥ टीका॥ शुक्रको रो॰ पुन॰ ज्ये॰ श्ले॰ म॰॥ २॥ ७॥ ये तिथि होय तो कुयोग हैः
इति कुयोगः॥ मूल॥ शनौ च रोहिणी स्वाती श्रवणा पूर्वफाल्गुनी॥ मघा च न
वमी सिद्धा चतुर्थी च त्रयोदशी॥ १३०॥ टीका॥ शनिश्चरको रो॰ स्वा॰ श्र॰ पू॰फा॰
म॰॥ ९॥ ४॥ १३॥ ये तिथि होय तो सिद्धियोग कहिये॥ १३०॥ इति सिद्धियोगः॥
मूल॥ शनौ हस्तोत्तराषाढा चित्रा चोत्तरफाल्गुनी॥ रेवती च मघा वर्ज्या ति
थी षष्ठी च सप्तमी॥ १३१॥ टीका॥ शनिको ह॰ उ॰षा॰ चि॰ उ॰फा॰ रे॰ मघा॥ ६

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

७॥ येतिथि होय तौ कुयोग जानिये ॥ १३४ ॥ तामे शुभ कार्य नहीं कीजिये ॥ इति
नक्षत्रादितिथिवारशुभाशुभयोगाः ॥ मूल ॥ चरं चलं स्मृतं स्वाती पुनर्वसुः
श्रुतित्रयं ॥ क्रूरसंज्ञं मघापूर्वोत्तरतीयं भरणी तथा ॥ १३२ ॥ ध्रुवाख्यं स्थिरमिहेष्टं
रोहिणी चोत्तरात्रयं ॥ तीक्ष्णो दारुणो ज्येष्ठाश्लेषार्द्रा मूलमेव च ॥ लघुसंज्ञं
स्मृतं पुष्यो हस्तोऽश्विनमभिजित्स्मृतं ॥ मृदुमैत्रं स्मृतं चित्रानुराधा रेवती मृगः ॥
१३४ ॥ मिश्रं साधारणं प्रोक्तं विशाखा कृत्तिका तथा ॥ नक्षत्रे स्वे ध्रुवकर्माणि ना
मतुल्यानि कारयेत् ॥ १३५ ॥ टीका ॥ अब अठाईसों नक्षत्र की सात संज्ञा जानि
ये सो जुदी जुदी कहते है ॥ तामे प्रथम स्वा० पुन० श्र० ध० श० इनकी चर चलसं
ज्ञा है ॥ इनमा हु चर कार्य सब कीजिये १ ओर पूर्वा ३ म० भ० ये क्रूर उग्र संज्ञक है ॥
इनमे क्रूर कठिन कार्य कर्तव्य है ॥ ओर रो० उ० ३ ये ध्रुव स्थिर संज्ञक है ॥ इनमे
स्थिर कार्य कर्तव्य है ॥ ओर ज्ये० श्ले० आ० मू० ये तीक्ष्ण दारुण संज्ञक है ॥ इनमे ती
क्ष्ण कार्य करिये ४ ओर ह० पुष्य० अश्वि० अभि० ये लघु क्षिप्र संज्ञक है ॥ इनमे सी
घ्र खेल प्रयोजनीक कार्य कर्तव्य है ॥ ओर चि० अनु० मृ० रे० ये मृदु मैत्र संज्ञक है

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शी.टी. इनमैकोमलकार्यमित्रादिसंबंधकर्तव्यहै ६ औरवि.कृ.येमिश्रसाधारणसंज्ञकहै॥ इनमैंसाधारणसामान्यकार्यकरिये॥ औरयेसबसंज्ञाहीकमतेच

क्रमैंसमझलीजिये॥ जिसकाजैसानामहैतासमै
तैसोकार्यकीजिये॥ इतिनक्षत्रासंज्ञा॥१३२॥१३३॥
१३४॥ मूल॥
शनिचक्रेनराकारंलिखेद्यत्र शनिर्भवेत्॥ तन्नक्षत्रंमुखे
दत्वायावंन्नामनरस्यच॥१३५॥ तावद्विचार
येतत्रतेयंजनशुभाशुभम्॥ एकंमुखेचनक्ष

इतिनक्षत्राणिमध्यसंज्ञाचक्रम्				
स्वा.	पु.	श्र.	ध.	लघुक्षिप्र.५
मृ.	पूफा.	पूभा.	[illegible]	[illegible]चल.१
रो.	उफा.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
श्ले.	उषा.	[illegible]	[illegible]	क्रूरस्थिर.३
ह.	पुष्य.	[illegible]	[illegible]	तीक्ष्णदारुण.४
चि.	अनु.	[illegible]	मू.	[illegible]मैत्र.६
वि.	कृ.	[illegible]	०	[illegible]साधा.७

त्रेचत्वारिदक्षिणेकरे॥ त्रयंत्रयंपादयोश्चवामहस्ते[illegible]स्थं॥ [illegible]श्विहृदयेत
त्रेहृदिपंचगुह्यं॥ ३८॥ मैकैकदक्षिणेकुक्षौ१नक्ष[illegible]क्र.[illegible]च॥ हर्षि

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

खेदान्तिएहलैलाभेवामेचरोगयता ॥ ३९ ॥ हदिश्रीमल
र्ल ॥ नेत्रेसखंगुदेमृत्युःकुक्षौशोकविचिंतयेत् ॥ ४० ॥
ल्याणेजोयतेसदा ॥ अन्येष्वेवविचाराणिवाहनानिव
अवशनिचक्रकाविचारकहतेहैः ॥ नरकेसाआकारव
शनिहोय तानदात्रभैजन्मकेनदात्रलेगनौ ॥ फिरशनि
गमैसवनदात्रस्थापितकरै ॥ जहांजाकेजन्मकानदात्रपरै त
थै १ नदात्रमखमैधरै ४ दाहिनेहाथमैतीन ३ तीन ३ दोनो
थेहाथमैचार ४ ललाटमैतीन ३ दीदी २२ नेत्रतमै हदेमै
२ दाहिनेकूखमैएक क्रमपूर्वकधरियै जोमुखमैजन्म आवैतोहानकरै ॥
दाहिनेहाथमैपरैतौलाभहोय ॥ बायेहाथमैपरैतौ रोगीहोय हदेमैपरैतो
लक्ष्मीप्राप्तहोय माथेमैपरैतोराजपरिपालै ॥ पायमैपरैतौभ्रमवाफिरै ॥ ने
त्रमैपरैतौसखपावै गुदामैपरैतौमृत्युहोय कोषमैपरैतोशोकहोय ताकेनि
मित्तजपरजाब्रह्मभोजदानपीपरसींचाकरै ॥ जवकल्याणसखप्राप्तहोय औ

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रुअनेकविचारवाहमादिकनकेघोरहै॥तिनहीकाफलशुभाशुभहोतहै॥ १३६॥१३७॥१३८॥१३९॥१४०॥१४१॥इतिशनिचक्रनिर्णय॥मूल॥मेषेश नौगुर्जरेषुप्रनासेचार्बुदेवृषे॥मिथुनेजायतेपीडास्थलेमूलस्थलीषुच १४२॥कर्केकाश्मीरेवाथाशकप्रस्थेमगाधिपे॥शनैश्चरेचकन्यायांमाल वायांतिसंक्षयं॥१४३॥तलावश्चिकचापेषुयादिजातिशनैश्चरः॥नवर्षेति तदामेघाःपृथ्वीदुर्भिक्षपीडिता॥१४४॥दुर्भिक्षंमकरेकुंभेजायतेवङ्गघा शनौ॥मीनेचसर्वलोकानांदुर्भिक्षंलक्षयोभवेत्॥१४५॥टीका॥जबमेषरा सिकाशनिश्चरहोयगुजरातदेशमेंपीडाकरै॥वृषकाहोयतो [illegible] नेक्ष त्रअर्बुददेशकोपीडाहोय॥मिथुनकाहोयतोमूलस्थलीदे [illegible] कर्ककाकाश्मीरदेशमेंपीडाकरे॥सिंहकाहोयतोइंद्रप्र [illegible] रे॥कन्याकाहोयतोमालवदेशमेंपीडाकरै॥वृश्चिक [illegible] मेघपीडावरषे॥पृथ्वीदुर्भिक्षकरकेपीडितहोय॥जो [illegible] नवीसडंगाली अन्नसत्लाविके॥मीनकाहोयतोसर्वप्राणिपृथ्वीमेंकाल [illegible] १४६ग्रंथमुक्त पु

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लो ॥ १४२१ ॥ २५ ॥ इति शनि राशिफलम् ॥ मूल ॥ यत्र मा[illegible] सोमवार्श्चा
च सततं ॥ दुर्भिक्षं छत्रभंगं च तदा लं च भयं ध्रुवं ॥ १४६ ॥ टीका ॥ [illegible] कालकार्ये स
चर विवार परै छत्रभंग होय महाभय होय ॥ १४६ ॥ [illegible]
मूल ॥ सोमस्य पंच वारास्तु यत्र मासे निरंतरं ॥ धनधान्यसं[illegible]
मेदिनी ॥ १४७ ॥ टीका ॥ जो महीने में पांच सोमवार परै तो धन[illegible]
होय पृथ्वी आनंद करै ॥ १४७ ॥ इति पंच चंद्रवारफलं ॥ मूल ॥ य[illegible]सि मंग
लं च जायते पंच वासरा: ॥ रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्रभंगस्तदा भवेत् ॥ १४८
टीका ॥ जिस महीने में पांच मंगलवार होय लोहू से पृथ्वी भीजे और छत्र
भंग होय ॥ १४८ ॥ इति पंच भौमफलं ॥ मूल ॥ बुधश्च पंच वाराश्च जायते च नि
रंतरं ॥ प्रजानां सुखमुत्पन्नं दुर्भिक्षं च प्रजायते ॥ १५० ॥ जा मास मे पांच बुध
होय प्रजा सुखी होय ॥ १४९ ॥ इति बुध फलम् ॥ मूल ॥ यत्र वारे पंच वारा जा
यते च बृहस्पती ॥ विग्रहे पश्चिमे देशे पीडायुक्तं च जायते ॥ १५० ॥ इति ॥ टीका
जा मास में पांच गुरुवार होय तो पश्चिम दिशा में विग्रह होय व में पीडा युद्ध होय

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शी॰टी॰ १५०॥इतिपंचगुरुवारफलम्॥मूल॥शुक्रश्च पंचवाराश्च यत्र मासे भवंतिहि
प्रजावृद्धिसमिद्धं च सुभिक्षं तत्र प्रवर्त्तते॥१५१॥टीका॥जा मास मैं पांच शुक्रवा
र परै तौ प्रजा की वृद्धि होय अन्न उपजे॥१५२॥इतिपंचभृगुफलं॥मूल॥श
नौवारे यदा पंच पाताले कंपते फणी॥ईशानदेशे मंगाश्च वह्नि दाहो महर्घ
ता॥१५३॥टीका॥जा मास मैं पांच शनिवार परै तौ पाताल विषै शेषनाग कां
पैं ईशान देश मैं गा होय अग्नि दाह दाह होय अन्न मंहगा होय॥१५४॥इति
पंचशनिफलं॥इति एकमासपंचपंचवारफलानि॥मूल॥अंगुल्मो विंशतिसू
र्यै शंकु सोमे च षोडश॥कुजे पंचदशा गुल्मो बुधवारे त्रयोदश॥५३॥त्रयोद
श गुरौ वारे दश शुक्रे च शनौ मताः॥शंकु मलेय दा छाया मध्याह्ने च प्रजाय
ते॥५३॥तदा चाभिजित ख्याता घटिकैका स्मृता बुधैः॥ अनेक दोषाः सर्वे ना
सिद्धिर्योति कृतानि च॥१५६॥जातोभिजित राज्यस्य व्यापा...मूल
क्रूर वियोगेन सर्वे मंगल दायकः॥१५७॥टीका॥रविवार के दिन धीसउंगली
कीसीक नाप के डाढी कीजै॥सोमवार को सोलै अंगुल ... १५८॥मंगल गु

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धको १४ गुरुको १३ शुक्रको १२ शनि ११ जबपह [illegible] सोकहीं छाया
सीकके मूलमे तबग्रभिजित्म हूर्त घरी १ एकाहोत है [illegible] कार्य सि
द्धि होय ॥ जबकार्य आपाइकू एक मोदि ॥ १३ ॥ १५४ ॥ १५५ ॥ [illegible] जित्म हूर्त
मूल ॥ अर्घवृद्धिः फाल्गुण्यां चैत्रेषु धनसंपदा: ॥ वैशाखे [illegible] राजाडे
वोविग्रहभयसी ॥ १५६ ॥ आषाढे चोदिते शुक्रे जलं भवति दुर्लभं ॥ श्रावणे च प
शुपीडा भाद्रे धान्यस्य संक्षयः ॥ १५७ ॥ आश्विने सर्वसंपत्तिः शुभं कार्तिकमार्ग
यो: ॥ पौषमाघे दिते शुक्रे तत्रभंगो यन्नुदृतः स्मृतोस्तते: ॥ १५८ ॥ टीका ॥ जो शु
क्रकाउदय फाल्गुणमे होय तो अन्न सस्ता होय ॥ चैत्रमे होय तो मेघनीका बर
षै ॥ चोपायनका सुख होय धनसंपदा अधिक होय वैशाखमे होय तो राजान
मे विग्रह होय ॥ जेष्ठमे उदय होय तो वर्षा नीका होय आषाढमे वर्षा थोडी होय ॥
श्रावणमे होय तो पशुवनको पीडा होय ॥ भादोमे होय तो अन्न बहुत उपजे
१५८ ॥ आश्विनमे होय तो संसारमे संपतिकी वृद्धि होय ॥ कार्तिक मार्गशिरमे शु
भ है ॥ पोषमाघमे उदय होय तो तत्र भंग होय देशपतिको विध्वंस होय ॥ १५९

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शी॰टी॰ इति प्रश्नोदयफलं ॥ मूल ॥ पूर्ववायुर्होलिकायां प्रजाभूपालयोः सुखं ॥ प
लायनं च दुर्भिक्षं दक्षिणे जायते ध्रुवं ॥ २६० ॥ पश्चिमे तृणसंपत्तिः उत्तरे धान्य
संभवं ॥ यदि खे चाशिखा वायुः दुर्गराज्ञोपि संचयेत ॥ २६१ ॥ टीका ॥ जो होली के
दिन पूर्व की पवन चले तो दहन समै राजा प्रजा को सुख होय दक्षिण की चले
तो दुर्भिक्ष होय काल पडै ॥ २६० ॥ पश्चिम की चले तो तृण की न[illegible]द्धि होय ॥ उ चले
तो अन्न बहुत उपजे ॥ जो पवन नहि चले तो धूआ उडि के [illegible]पट सी धी आ
काश मे जाय तो राजा गढ कोट का आसरा लेकै बैठ रहै विग्र[illegible] होय ॥ इति मुहूर्ता
सनीय फलम् ॥ मूल ॥ एकादश्यां कार्तिकस्य यादि मेघसमीहते ॥ आषाढे चत
दा वृष्टिः जायते नात्र संशयः ॥ २६२ ॥ टीका ॥ जो कार्तिक की एकादशी कू बादर
होय तो मेघ थोडा बरसै ॥ तो आषाढ के महीने मे वर्षा अच्छी होय ॥ २६३ ॥ मूल ॥
कृष्णपक्षे दशम्यां च वृष्टिः पौषस्य जायते ॥ तदा भाद्रपदे मासे [illegible] मे चतिमय
सी ॥ २६४ ॥ टीका ॥ जो पौष की कृष्णपक्ष की दशमी को मेघ [illegible] भादो के मही
ने मे वर्षा अधिक होय ॥ २६५ ॥ मूल ॥ वृष्टिश्चैव माघ [illegible] श्मूलेन न [illegible]

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ते॥ नक्षत्रेवादिवाह्यस्तंतदान्नंप्रसीतेमही॥ २६४॥ टीका॥ [illegible] धकीमहल
कोवरषै औरज्येष्ठकेमूलनक्षत्रमेंवरषै॥ वर्षाकेनक्षत्रमें [illegible] पृथ्वीमेंरषै
अन्नउपजै॥ २६४॥ मूल॥ पंचम्यांप्रथमेपक्षेश्रावणेचय [illegible] पयोवाह
लदाधामेघराजाअन्नजलेरषि॥ २६५॥ मू॥ टीका॥ सावनकीप [illegible] मीपंचमी
कोमेघवरषैतौवरषाविशेषहोय अन्नविशेषहोय॥ २६५॥ [illegible]॥
य॥ मूल॥ आषाढपूर्णिमायांचयन्नक्षत्रंविचारयेत्॥ पूर्वाषाढेसुभिक्षंच
मूलेदुर्भिक्षमुच्यते॥ २६६॥ उत्राषाढकेक्षेमंपीडाकर[illegible]संग्रतिं॥ टीका॥
आषाढकीपूर्णिमाकोजोनक्षत्रहोयताकोविचारिये॥ [illegible]षाढहोयतौ
सुभिक्षहोय मूलहोयतौदुर्भिक्षहोय॥ औरजोउत्तराषाढ[illegible]यतौषोडनको
पीडाहोय॥ २६६॥ इत्याषाढपूर्णिमाफलं॥ मूल॥ ज्येष्ठस्यप्रथमेपक्षेप्रतिप
च्चयदाभवेत्॥ रवौवारस्तदावायुःवातवर्षातिकारकः॥ सर्पंतिवियहे भौमे
बुधेदुर्भिक्षमुच्यते॥ २६८॥ शनावप्रिशनैश्चरेजेलंकाविनह्यति॥ सोमश्च
क्रःसुरेज्यानांयदिवारप्रजायते॥ २६९॥ धनधान्यसकतोल्पनिःगेहेगेहेमहोत्स

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वे ॥ ९६९ ॥ टीका ॥ ज्येष्ठकीपहलीपरवाररविवारहोयतौ पवनवक्रुतचले व
नष्टहै भौमवारहोयतौविग्रहहोयदुर्भिक्षपरै ॥ शनिवारहोयतौमेघथोडाव
रषै जोसोमशुक्रगुरुवारहोयतौ धनधान्य उपजैसंतानकीवृद्धिहोय ॥ इति
ज्येष्ठप्रतिपदाफलं ॥ मूल ॥ पौषमासस्यसंक्रांतौ रविवारयदाभवेत ॥ धान्य
स्यद्विगुणंमौल्यंभौमवारेचतुर्गुणम् ॥ त्रिगुणंशनिवारेचबुधशुक्रेसमंभवेत
गुरुवारेचसोमेचमौल्यमर्द्धंसुनिश्चितं ॥ क्रूरेलाभंकृतौधान्यसौम्येहानिप्रदा
भवेत ॥ टीका ॥ जोपौषकीसंक्रांतरविवारहोयतौ अन्नदुगणोमोलविके ॥ भौ
मवारहोयतौचौगुणोमोलविकाय ॥ १७० ॥ बुधशुक्रवारीहोयतौ साधारण
भावविकाय ॥ शनिवारीहोयतौत्रिगुणोमोलविकाय ॥ १७१ ॥ गुरुसोमवारीप
रैतौ आधेदामहोय ॥ जोशुक्रवारपरैतौत्रिगुणमोलविकाय ॥ १७२ ॥ क्रूरवारी
होयतौनफाहोय ॥ १७२ ॥ इतिपौषमासफलं ॥ मूल ॥ मीनसंक्रांतौ ... सूर्ये ... र
वातसमीरणः ॥ भौमेपीडाप्रसूत्यां चदुर्भिक्षंचशनैश्चरे ॥ ... पातश्च ...
मिथ्यासंचरतेमही ॥ हिंसकायपरालोकाः यदिवृष्टिः ... ॥ १७४ ॥ ...

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तीयदा मीनश्च बुधेवारे प्रजायते ॥ तत्र भंगमहामारी [illegible] नं समं चिंतनं
२७५ ॥ संक्रांतौ रविवारेच प्रजानां परमं सुखं ॥ मानभौ [illegible] वारे धूपात बुधेम
हर्षेता ॥ २७६ ॥ टीका ॥ मीनकी संक्रांति रविवार होयतौ व[illegible] घन रवे
पवन चले ॥ भौमवारते पशूपीडा होय शनिवारते दुर्भिदापे[illegible] ॥ २७७ ॥ भौमनमें
संक्रांति होय तौ रक्तपात मिथ्यावाद हिंसाका माठरी आधिक होई ॥ २७४ ॥ बु
धवार होय तौ तत्र भंग होइ मरी परें शोक भय चिंता वडे ॥ २७४ ॥ सोमवार होय
तौ प्रजाकू आनंद होई ॥ रवि शनिवार होय तौ अत्र मे युद्ध होय ॥ २७५ ॥ २७६ ॥
इति मीनसंक्रांतिफलं ॥ मूल ॥ संक्रांत्या धरनक्षत्रादा[illegible]धिगएपते ॥
त्रिकं षट्कं त्रिकं षट्कं त्रिकं षट्कं पुनःपुनः ॥ २७७ ॥ पंथा भोगौ व्यथा वस्त्रं हानिश्च वि
पुलं धनं ॥ षड्भिर्भोगो फलं षट्कं मासि मासि विचारयेत् ॥ २७८ ॥ टीका ॥ संक्रांति
के समय के नक्षत्र ते जपनेन तत्र लो गनै ॥ तामे तीन लौ होई पंथा चलावै ३
१४ लौ भोग करावै १२ लौ व्यथा करै १८ लौ वस्त्र सुख करै फिर २१ लौ पंथी
होई २७ लौ भोग करै या प्रकार मास मास विचारै ॥ इति संक्रांतिदिन नक्षत्रफलं

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

४२

श्री·टी·

हीणी

मूल ॥ रोहिंचक्रंलिखेल्लारेमेषसंक्रांतिमादिकं ॥ अष्टाविंशतिकैस्तत्र लिखेन

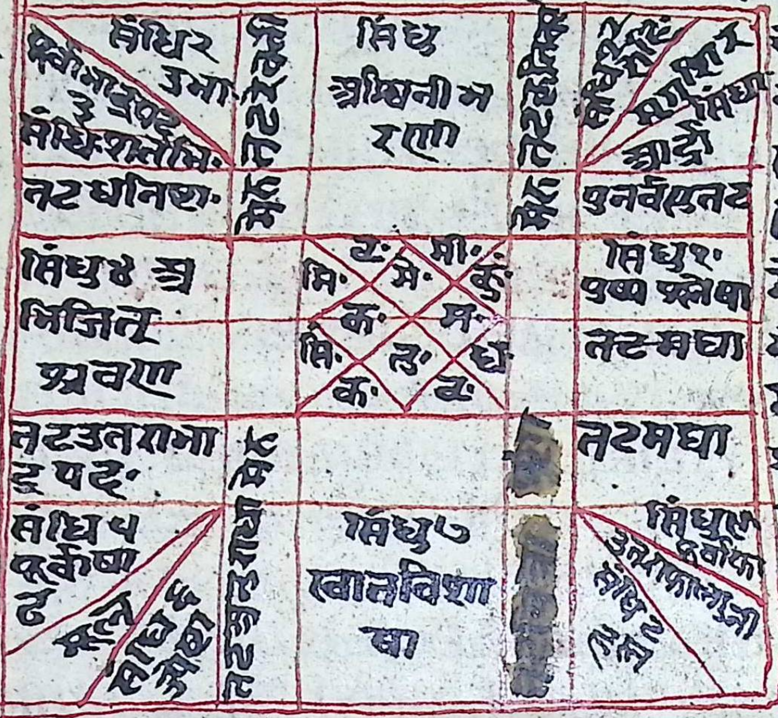

नक्षत्रसंकुलं ॥ १७॥ संधौ द्वयंद्वयं द
द्यात्मध्ये चैकैकमेव च ॥ चत्वारः सागरा
स्तत्र संधयश्चाष्टसंख्यया ॥ १८॥ शृणु
(ए)तत्र चत्वारः तटाः पृष्ठे स्थलानि च
रोहिणीपतिना [illegible] तत्र प्रशुभाशु
भं ॥ १९॥ जातेऽमयमेषा चंद्रस्य च वृ
मप्रिया ॥ समुद्रे शुभ [illegible] तटे च मि
श्र शोभने ॥ २२॥ प[illegible] मात्र [illegible]
डवप्रिश्च संधिषु ॥ टीका ॥ अ [illegible]
निर्णय विषम [illegible]
हिणीयतमथो [illegible] है [illegible]
दशावोठ [illegible] है लिखा [illegible]

जल

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गमेविषैलिखियेताकी आवर्तेविषैरोहिणीचक्र॥२८ [illegible] कोलि [illegible]
नत्रदुरदुरसमुद्रनमैधरिये॥एकएकनक्षत्रश्मशान [illegible]
धिनमैधरै तहांमेषकीसंक्रांतिजाननक्षत्रमेहोइतानक्षत्रते [illegible]
समुद्रकेनजोकपरैतौवर्षाअधिकहोई॥श्मशानमेपरैतौव [illegible]

आरसंधिनमेपरैतौकहांवर्षैक [illegible] विषै॥ अ
श्विनीकेआरसंक्रांतिधारिये॥ [illegible] ॥१२० ॥१२१
१२२॥इतिरोहिणीनिर्णयः॥मल॥ [illegible] राकारंलिखे
चक्रंसूर्ययत्रअवस्थितः॥तन्न [illegible] र्कं कृत्वात्र
योदद्याच्चमस्तके॥१२३॥मुखेत्रयं स्कंधयोश्चद
द्यादेकैकमेवच॥बाहुद्वयंतथैकैकं पाणौरेकै
कमेवच॥हृदयेपंचगुह्येचैकं नाभौचैकंप्रदाप
येत्॥जंघयोरेकमेकंच षड्जानु पादयोर्द्वयोः॥
पादे॥ ॥ मस्तकेपट्टबंधस्यान्मुखेमिष्टान्नभोजनं॥१२४॥स्कंधयो

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शी॰टी॰ ऊर्द्ध्वगामी स्याद्बाहुस्थाने च्युतो भवेत् ॥ पाणौ च जायते चौरो हृदये भीश्वरो
नरः ॥ १८७ ॥ स्वल्पतोपि भवेन्नाभौ परदाररतो गुदे ॥ जंघयोः परदेशी स्या
त्स्वल्पायुश्च पदद्वयं ॥ १८८ ॥ नरचक्रे सूर्यनक्षत्राज्जन्मभावाधिपास्थिते ॥ टी
का ॥ अब नरचक्र कहते हैं ॥ ताकी गणना चक्र मैं समझ लीजिये ॥ और जो
सूर्यके नक्षत्रते और जन्मनक्षत्र लो गनिये ॥ जहां जो अंगमैं नरचक्र
के जन्मनक्षत्र परै ताको फल कहते है ॥ जो माथे मै जन्म [illegible] नक्षत्र परै तो ॥
निजकुटुंबनायक होय ॥ और जो मुखमैं परै तो मीठे अन्नादिक विशेष भो
जन करै ॥ कांधेन मैं परै तो कुटुंबका मुखिया अग्रगामी होय ॥ और जो बा
हुनमै परै तो जन्मभूमि छुटि जाय ॥ जो हाथिन मै परै तो चोरी करै ॥ जो
हृदयमै परै तो ठाकुर होय ॥ ऐश्वर्य अधिक होय कोई [illegible] सन्मान
होय ॥ औ जो नाभी मै जन्मनक्षत्र परै तो थोड़े मो जनसे [illegible] ॥ जो गु
दामै आन परै तौ पराई स्त्री सैं रमै ॥ जंघान मै परै तो परदेशी होय ॥ और जो पग
न मै परै तो थोरी आर्बल जियै ॥ इति नरकारचक्रे नक्षत्र [illegible] स्थानस्य शुभाशुभफलम् ॥
रा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

मूल॥ ग्रामेयत्रभवेदृक्षंतदाग्रामस्यमस्तके॥ पृष्ठेमध्ये शीर्षपादस्थो भ
स्तारकाः॥ मस्तकेचधनीमानंपृष्ठेहानिश्चनिर्धनं॥ २८॥ हृदयेऽर्थं
पतिःपादेपर्यटनंसदा॥ टीका॥ जिसग्राममेंवसाचाहैतिसगामकीराशिके
नक्षत्रतेजोवसाचाहैताकेनक्षत्रलोगानियै॥ तामेतेग्रामकेनक्षत्रआ
दिदैकेसात ७ नक्षत्रग्रामकेमाथेपरदीजे औरसात ७ नक्षत्रपीठपरदी
जैऔर ७ पायनमेंदीजे॥ जोगावकेमाथेपरवसे याकोनक्षत्रपरैतोधन
मानहोई॥ औरगाउकेधनीसन्मानअधिककरै औरजोपीठकेनक्षत्र
मेपरैतोहानिहोय॥ जोहृदयकेनक्षत्रमेपरैतोसबवेप्रीतिकरै॥ और
जोपायनमेपरैतोभटकतफिरैग्राममेरहनेनहिपावै॥ २८९॥ २९०॥
इतिग्रामवासफलम्॥ मूल॥ मूलेशेमूलवक्षस्यघटिकापरिकीर्तिताः॥ लं
भस्तुघटिकात्वचेचैकादशस्मृताः॥ २९१॥ शाखायांचनवप्रोक्ताःपत्रे
ष्ठेकाचतुर्दश॥ पुष्पेपंचफलेवेदाःशिखायांचत्रयस्मृतं॥ मूलनाशो
हिमूलस्थंभेहानिर्धनक्षयः॥ २९३॥ त्वचेभ्रातृविशीर्षशाखायंशाखायांभा

ना

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शी·टी· तपीडनं॥ परिवारक्षयेपत्रेपुष्पेमंत्रीचभूपते॥ १५८॥ फलेराज्यंशिखायां
स्यादल्पजीवीचबालकं॥ १५९॥ टीका॥ संतकनक्षत्रमेबालकहोय॥ ता

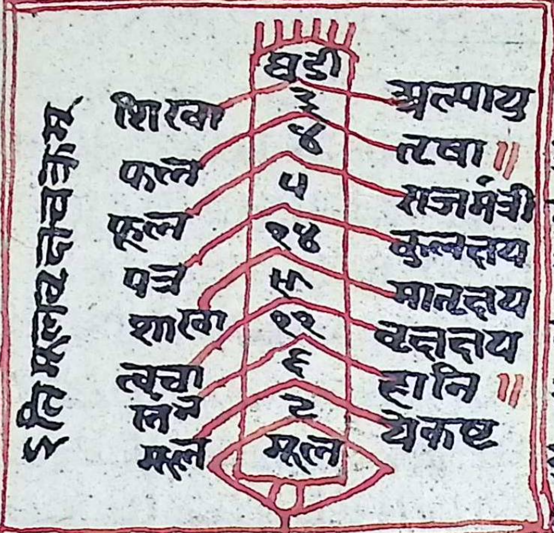

कोविचारकहतेहे॥ मूलवृक्षबनायेओरघटी घ
रजडमेधरिये॥ औसेकामसेमचचोमेसमफली
जे॥ जोजडमेपरेतोमूलनाशकरै॥ औरजहाते
डारचलतीहै तिन३घरीनमेजन्महोयतोहा
निहोय औरजोजडानकी १२ नाघरीनमेज
न्महोयतो माईकोविनाशकरै यापीडाहोय॥
औरशाखीकीपांचघरीमेजन्महोयतोम[illegible]पी
डाकरै औरपत्रनकी१४घरीन[illegible]
नयहोय॥ अथवाअपनेकुल[illegible]
की३तीनघडीमेहोयतोआर्वेलथोडी होय॥ १५९॥ १६०[illegible]
लग्न॥ मूल॥ रेवत्यादिमृगांतेचयावतिष्ठतिचंद्रमा॥ ता[illegible]बुधाः

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विदद्विणेशुभः॥ १९५॥ टीका॥ रेवतीनक्षत्रतेमघाशि[illegible]वातातें [illegible] वे
षकार्यंचद्रमारहै॥ तहांलौशुभकर्म्मधारहै सोतामेसन्क[illegible]
हीशुभहै॥ १९५॥ इतिशुक्रनिर्दोषविचारः॥ मूल॥ प्रा[illegible]त्रिः
पंचसप्तदिनंशिशुः॥ १९६॥ विपरीतंतुवृद्धत्वंतद्वेवगुरो[illegible]॥ १९८॥ ज
वशुक्रकाउदयहोयपूर्वेपश्चिमतव ५ औरा ७ दिनमानिये पूर्वे [illegible]
दिनमानियेवालकपूर्वे औरदिन ७ पश्चिमशुभकार्य[illegible]क्रमसे
हीगुरुकोजवबालहोय तवदिन ५ मात ७ पश्चिमपूर्वे पा[illegible] ७ सात पूर्वो
वामातिवृहस्पतिकौउदयअस्तवृद्धत्वमानियें॥ १९६॥ इति[illegible]कोदयास्तव
लग्न॥ मूल॥ तृतीयेदशमेषष्ठेसदाक्षयेशुभावह॥ प्रथमेदशमेषष्ठेतृतीये
सप्तमेशशि॥ शुक्लपक्षेद्वितीयाल्लपंचमेनवमेशुभः॥ १९९॥ ताराशुभप्रदासर्वे
त्रिपंचसप्तवर्जिताः॥ तृतीयेनवमेषष्ठेसदाक्षयेशुभावहः॥ १९९॥ प्रथमे
दशमेषष्ठेतृतीयेकादशेशशी॥ यदिस्यात्सवलःश्रुद्धल्ला[illegible]शयिनी
२००॥ तृतीयेपंचमेतारासप्तमेचनराणांभवेत॥ जन्मभाऊणएयेभीमानुक्रम

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शी॰टी॰ ष्टम्च निमावधिः॥२॥नव मिष्टमहरेच्छागं कषं तारावि निर्दिशेत्॥जन्मसंपद्विप
त्क्षेमप्रत्यरिःसाधकोवधः॥२२२॥मैत्रातिमैत्रतारास्युःक्रियाल्पानचैव
हि॥त्रिषष्ठे दशमेभौमेराहुःकेतौ शनिशुभः॥२०३॥षष्ठेष्टमे द्वितीयेवा चतुर्थे
दशमेबुधः॥ द्वितीये पंचमेजीवे सप्तमेनवमेशुभः॥२०४॥एकादशेग्रहासर्वे
सर्वकार्येषुशोभनाः॥ग्रहाणांगोचरं ह्येयं फलंविद्येशुभाशुभं॥२०५॥टीका
शुक्लपक्षमे ३।५।७।तारा अशुभहै सकलकार्यनको और ३।५।७।वर्जितहै और
२।४।६।८।९।सर्व होयतौ जन्मकालशुभहै॥और २।४।६।८।९।बलमालली होयतौ
शुभहै तारा क्लेशकौकरौ और ३।५।७।तारा होयतौ ३।५।७।होयतौ कलेशनाः
होय॥तातेबधजनजोहैपंडित तेताराकाविचारकरतेहै नक्षत्रनके
दिनकेनक्षत्रलौ गनिये तामेनवकौ भागदीजिये जोशेष शेष
जन्मकालविषे आपारललघी विपत्तिवाधकमे विचारै हैं स्मृति
तीन मित्रताराइनकौ ३ आवर्तविचारतेहै ३।५।७।माहिंरे ... ॥
होयतौ शुभहै और २।४।६।८।९।इनस्थानविषे होयतौ बुधः

Kirtikant Sharma Collection; Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुरु ॥ ३ ॥ ५ ॥ ७ ॥ शुभहै औरग्यारहै स्थानसर्वग्रहशुभफलकेदाताहै [illegible] ले
कार्यनके विषैगोचरग्रहणकोफलशुभाशुभयाप्रकार [illegible]
२०५ ॥ इतिगोचरग्रहाणांफलानि ॥ मूल ॥ दशम्यावधिमा [illegible] दि [illegible] चि
द्रमाः ॥ ततःपरःक्षीणचंद्रशुभकार्येविवर्जितः ॥ २०६ ॥ टी [illegible] ॥ शु [illegible] १० [illegible] की
दशमीते ॥ औरपक्षकीदशमीपर्यंतचंद्रमापूर्णवलीसक [illegible] कार्यनमें उत्तम
है औरकृष्ण ॥ १० ॥ तेशुक्लदशमीपर्यंतक्षीणचंद्रमाजानिये सोशुभकार्यन
मेवर्जितहै ॥ २०६ ॥ इतिपूर्णक्षीणचंद्रनिर्णयः ॥ मूल ॥ पुनर्वसुमृदयंज्ञोरश्रुतिय
मंकरद्वयं ॥ रेवताश्विनीयंज्येष्ठामृगशीर्षेचागरहते ॥ २०७ ॥ दी [illegible] प्राणहरेसाजा
मघामेत्रंचरोहिणी ॥ उत्तराकृत्तिकावाराःभानुभौमशनिश्चरे ॥ २०८ ॥ रिक्तापष्ठाष्ट
मीहैया दोरचंद्रदतयोनिशिः ॥ संध्याविधिश्च गंडांतेभोजनांतेचगोरहे ॥ २
ए ॥ टीका ॥ इननक्षत्रनमैवालनाहिवनवाइये म·मं·रो·कृ· रवि·भौम·श
नि·येवार ॥ ४ ॥ ए ॥ १४ ॥ ष ॥ य ॥ ३० ॥ येतिथैवर्जितहै ॥ रात्रिऔरसंध्याकेसमय
औरगंडांतमूलनमैमद्धनमैऔरभोजनकरेपर औरगोसालामैवाल

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शी॰टी॰ वनवावनेवर्जितहै॥इतिनिक्षत्रक्षौरं॥२०७॥२०८॥२०९॥मूल॥रेवतीपुष्यमृगर्क्ष॰
पुष्पो रोहिणीमृगमैत्रयोः॥श्रवणेन रःशक्रेषु राज्ञोपि दृष्टाभिषेचनं॥२१०॥टी
का॥रे॰श्वि॰पुष्य॰रोहिणी॰मृ॰स्व॰श्र॰उ॰३॰जे॰इननक्षत्रनमेराजाकाजोअभि
षेचनहैतिलक॥सोकरिके राज्यबैठाइये॥२१०॥इतिराजाभिषेचनं॥मूल॥
रेवतीयुग्मलंजेष्ठामैत्रहस्तत्रयेमृगः॥पुनर्वसुपुष्य विज्ञेयागणतीयैश्च बुधैः
२११॥वस्त्रारोपं चवानिज्यं सर्वे शिल्पकंकारयेत॥वाहनानिचयंत्राणि गमनंच
विधीयते॥२१२॥टीका॥रे॰अश्वि॰जे॰पुन॰स्व॰ह॰चि॰स्वा॰मृ॰इननक्षत्रनकेतिल
केमुख्यहै॥२११॥इनमेंवस्त्रलगाइये औरवानिज्यरेवतीवाहनहाथीघोडा॰
औररथयंत्रसहटवाजेनगारे॥आदिकवनावनेउत्तमहै औरविदेशका॰
चलना येवातेइननक्षत्रमेसिद्धिहोय॥२२॥मूल॥पूर्वोत्रयं मघाम्ले ... ॥
खाकृतिकायमः॥मूलंचाश्लेषामुखेत्रयंनक्षत्रयंगणोत्... मृका ...
येच क्षेनतंविवरस्यच॥युर्कंचाधोमुखं ... नत्कार्यकारयेत्तु ...॥२१३॥
येनक्षत्रऊंधेमुखहै॥पूर्वा३म॰श्ले॰वि॰कृ॰भ॰मू॰इनमेखातेकायेरांमेहै

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ऋमियामादिसंबंधकार्ये औरशत्रुसंघात आदिक उत्तमकर्ममेंजोंहै॥ [illegible]
गुफा वावडी तडागवोना आदिजो खोदनाकेकर्ममेंहै तोसबसिद्धहै॥ १
मूल॥ उत्तरात्रितीयंपुष्योरोहिण्याद्रोश्रुतित्रयं॥ ऊर्ध्वव [illegible] येपूर्वोहि
तोमघोषिणः॥ २५॥ प्रासादद्वेत्रगोहानिप्राकारध्वजतोरण॥ नान [illegible]
[illegible] मण्यंचकुर्यादूर्ध्वमखोगुणेः॥ २६॥ टीका॥ येन द [illegible] ऊर्ध्वम [illegible] हैं: उ
३ मृ. री. आर्द्रा. श्र. ध. श. इनमेंऊर्ध्वमखकार्यकीजे शिरोपाउपहिरै दावध
रै घरखनावे ध्वजपताका चमर वंधनवार वागलालकाविवाह अभिषेक
घोडेकीसवारी येकार्यसिद्धिहोय॥ २६॥ इतिऊर्ध्वमुखनक्षत्र [illegible]
मूल॥ पुनर्वसुद्वयंचित्राम्रगाश्वीचकरत्रयं॥ मूलश्रुतित्रयं मेत्रं मिषकुकर्मा
णात्रहते॥ २७॥ सोमसुक्रसुरेज्यानांवाराः शकुनमुत्तमं॥ लग्नेवृषचापमीने
वृषवत्राबोलालाधरः॥ २८॥ टीका॥ औसेसदादिमें औषधकरियेवे चतुलार
ये औषधवनवाइये औरखाइये पुनः पुष्य रे. उ. श्र. म. ह. चि. स्वा. मृ. श्र. श.
इन.॥ २७॥ सोमसुक्रयेवार धन मीन वृष तुला उत्तमसगुणहोयतो औषधि

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शी·टी· वनाइये श्रीरघवाइये॥२१८॥ इतिमैषत्नकर्म॥मूल॥ स्रमावास्याष्टमीत्याज्या
पर्णिमा च चतुर्दशी॥ रविवारे वर्जनीयो गोप्रसूतां च निर्गमः॥२१९॥ चित्रोत
रा रोहिणी च श्रवणोपि विवर्जयेत्॥ एते पुष्पप्रसूतानां भमिश्रर्मनिर्गमं भवेत्
२२०॥टीका॥इतिपशुनिर्गमः॥मूल॥ उत्तरा च विशाखायां रोहिणी च पुनर्व
सुः॥ नवम्यां च चतुर्दश्यां अष्टम्यां नानयेत्पशुः॥२२१॥ पूर्वा मैत्रद्वयं मूलं वा
सवरेवती करः॥ पुनर्वसुद्वयं याह्यं पशूनां क्रयविक्रये॥२२२॥टीका॥ उ३
चि·रो·॥ ५॥९॥८॥ येती निति थिनक्षत्रनमै पशूनालीजिये॥ ९२॥ शौर पूर्वा
३ ऽनु·ज्ये·म·ध·रे·ह·पुन·पुष्य·इनमै पशूनालीजिये॥ २२॥मूल॥ एकोना
द्वपदा युग्मं स्वाति श्रवणे रेवती॥ हस्तो तरा मृगो मैत्रनक्षत्राणि [illegible] रेवती॥२
२३॥ या स्यानि मानि वैतानि क्रयविक्रयणे बुधैः॥ चंद्र [illegible] चजी [illegible] तारा
शाकुनमन्तर्म॥२२४॥टीका॥ पुष्य·पू·मा·उ·मा·वो·श्र·[illegible]·ह·उ·३·[illegible]·ऽ
नु·रे·श्ले·येनक्षत्र शौर चंद्रन्व·श्रु·येवा रक्रयविक्रयको श्रुमहै उत्तमश
कुनलेके॥२३॥२२४॥इतिक्रयविक्रय॥मूल॥ नंदातिथिश्च [illegible] मादौ परीणां

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चतथांत्यके॥ घटिकैकाशुभेत्याज्यातिथिगंडेघटीद्वयं॥२२५॥ टीका॥ नंदाति
थिकी आदिकी घटी १ पूर्णाके अंतकी घडी १ अशुभ है॥२५॥ इतितिथिगंडांत[illegible]
मूल॥ ज्येष्ठाश्लेषारेवतीचनामंते घटिकाद्वयं॥ आद्यं [illegible]
डघटिकाद्वयं॥ २२६॥ टीका॥ ज्ये० श्ले० रे० इनकी अंतकी घडी २ [illegible]
आदिकी घडी २ अशुभ है शुभकार्यमें वर्जित है॥ २२६॥ इ[illegible]॥ मू
ल॥ मी[illegible]वृश्चिककर्कांते घटिकार्द्धं परित्यजेत॥ आदौ [illegible]
घटिकार्द्धकं॥ २२७॥ टीका॥ मीन वृश्चिक कर्क इन[illegible]की आधी घडी
और मेष धन सिंह इनको आदिकी आधी घडी में शुभ कार्य [illegible]ना कीजियेः॥
२२७॥ इतिलग्नगांडांत॥ मूल॥ तिथिगंडे भगंडे च लग्नगंडे [illegible] जातकं॥ नजीव
तियदा जातो जीवतेच धनी भवेत॥ २२८॥ टीका॥ तिथिगंड नक्षत्रगांड लग्न
गांडकी जो घडी कही है॥ इनमें जो मनुष्यका जन्म होय तो जीवे नही जो कदा
चित्जीवे तो धनी होय॥ २२८॥ इतिगांडांतफलं॥ मूलं॥ सप्तम्यांच रवेर्वारोव
धस्य तृतिपा द्विने॥ भवतो व्यस्तदा योगो वर्जित स्मासदा बुधैः॥ २२९॥ टीका॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

सप्तमी रविवार औ रपड़वा बुधवार की होय तो ताकों संवर्त्त नाम योग कहते हैं ॥
सो शुभकार्य कों वर्जे है ॥२२९॥ मूल ॥ इति संवर्त्तनामयोग ॥ ॥ शुक्रे नंदा बुधे भद्रा
शनौ रिक्ता कुजे जया ॥ गुरौ पूर्णेति तिथयो ज्ञेया सिद्धियोगाः सदा स्मृताः ॥२३०॥ टीका ॥ जो
शुक्रवार की नंदा तिथि होय औ रबुधवार कों भद्रा होय शनिवार कों रिक्ता होय मं
गल कों जया तिथि: गुरुवार कों पूर्णा तिथि: इन वारन कों औ इन तिथन के मेल
सैं सिद्धियोग कहिये ॥ तामें जो कार्य करे सिद्धि होय ॥२३१॥ इति सिद्धियोग ॥ मूल
विष्कुंभ प्रीति रायुष्मान् सौभाग्य शोभन स्तथा ॥ अतिगंड सुकर्मा च धृति शूल
स्तथैव च ॥२३१॥ गंडो वृद्धि ध्रुवश्चैव व्याघातो हर्षणस्तथा ॥ वज्र सिद्धि व्यतीपातो
वरीयान परिघः शिवः ॥२३२॥ सिद्धिः साध्यः शुभः शुक्लो ब्रह्मा ऐंद्रोऽथ वैधृतिः ॥ सप्तवि
शति राख्याता नामतुल्यानि कारयेत् ॥२३३॥ टीका ॥ विष्कुंभ १ प्रीति २ आयुष्मा
न ३ सौभाग्य ४ शोभन ५ अतिगंड ६ सुकर्मा ७ धृति ८ शूल ९ गंड १० वृद्धि ११ ध्रुव
१२ व्याघात १३ हर्षण १४ वज्र १५ सिद्धि १६ व्यतिपात १७ वरीयान १८ परिघ १९
शिव २० सिद्धि २१ साध्य २२ शुभ २३ शुक्ल २४ ब्रह्म २५ ऐंद्र २६ वैधृति २७ योना

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मत्स्यफलकहतेहैं॥२३३॥इतिसप्तविंशतियोगाः॥ अथकरणानि॥ [illegible]
गुणंहृत्वाहीनमेकैककारयेत्॥सप्तभिस्तुहरेद्भागं[illegible]
ले॥२३४॥टीका॥शुक्लप्रतिपदातेजोतिथेगतभईहै[illegible]
तिसमेतकोद्विगुणोकरकेतामेएकघटाइयेफिर[illegible]
शेषअंककववेसोकरणजानिये॥अवकरणकेनामकहतहैं॥मूल॥बव
श्चबालवश्चैवकौलवस्तैतलस्तथा॥गरश्चवणिजो[illegible]समेतेकर
णानिच॥२३५॥कृष्णपक्षेचतुर्दश्यांशकुनिःपश्चिमे[illegible]॥चतुष्पद
श्चनागश्चअमावस्यांदलेद्वये॥२३६॥टीका॥बव१बा[illegible]२कौलव३
तैतल४गार५वणिजविष्टि७येकरणचरसंज्ञाकहिये॥२३५॥कृष्ण
पक्षकीचतुर्दशीकोपश्चिमदलकाहिये अंतकीआधीतिथिमेंशकु
नीनामकरणहोतहै॥तिसकाहाथीकास्वरूपहै॥औरअमावस्याकेए
कईकाहियेपहले॥आधीतिथिलौचतुष्पदनामकर्णहोतहै॥औरपराईअंतकीआधीतिथिमेंनागनामकरणहोतहै॥२३६॥मूल॥ध्रु

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शी.टी. क्षप्रतिपदांतेचबवाख्येकरणंभवेत् ॥ एकादशाश्चविज्ञेयाचरास्थिर
विभागशः ॥ २३८ ॥ टीका ॥ शुक्लपक्षकीपड्वाकीउतरती ३० घडीमेंब
वनामकरण होतहै । ताकेनिकासवेकौप्रकारएवैहीकेश्लोककीरीत
सैंसमझलीजियै ॥ जातिथिकोगणतसोंजोकरणआवैसोतिथिकेउतर
ती ३० घरीमैंसमुझियै औरपर्वदलमैंआधीतिथिपर्यंतउसकोपिछा
रीवालाकरणजानियै ॥ याक्रमसोंविष्टीनामकरण [illegible] आईकी
मद्दतामैंसातौचरकरणपरैहैंकेफिरमद्दाकेउतीर्ण [illegible] मेंबवकरण
होतहै ॥ औरयामैंशुक्लपक्षकीपरवातेकृष्णपक्षकी [illegible] ति
थैछिगुणाकरकैपर्वान्तचरकरणजानिवेकोप्रकारहै [illegible] कर्ण
निर्णयः ॥ मूल ॥ रसोयमानलोधाताचंद्रोनद्रोदिति [illegible]
पितरोभगोर्यमादिवाकरः ॥ २३९ ॥ त्वष्टावायुशक्र [illegible]
प्रतिः ॥ जलविश्वेविधिर्विष्णुःवासवोवरुणाएव [illegible]
हिर्बुध्न्यपूषेतिकथितावुधैः ॥ अष्टाविंशतिमेक [illegible]

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ष्वरा:॥२४९॥टीका॥ अब अठाईसनक्षत्रोके स्वामी दे[illegible]॥मनेश्वर॥ नां[illegible]

व क्रमेसुअश्विन्यादि रेवती पर्यंत क्रमपूर्वक लिखते[illegible]

न मे देवताकी पूजन प्रतिष्ठादिक करै सो तावेन[illegible]

४०॥२४९॥इति नक्षत्राधिपतिः॥ इति श्री काशीनाथकृते[illegible]

कालितलके नक्षत्रप्रकरणं द्वितीयं॥२॥मूल॥ शिरीमुखेव[illegible]

कृतिजनः॥ सर्वणीधन धान्य लाभ तत्पन संशयः॥[illegible] टीका॥[illegible]

ईश्वर[illegible]पक्कव अपना हाथ माथपे मुखपे कान[illegible] धावै है॥ [illegible] यमदेवता

रे.उ.पू.शा.घ.श्र.उ.पू.म.ज्ये.स्व.वि.स्वा.चि.ह.उ.पू.म.पु.[illegible] शा.मू.रोक[illegible] यमदेवता

[illegible]

वतौ धन धान्य लाभ होय कार्यसिद्धि होय यामे संशय नी है॥२॥मूल

कंधयावा कंठ हस्त [illegible]शीला मौहि दुःखिताः॥ कुचना भिसमालाजोम

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शा॰टी॰ ह्यपानादिसिद्धति ॥२॥ टीका ॥ जो प्रश्न पूछनके समय अपनी कांधे याकं
ठ याहाथसे हाथमले तो लाभ होई कष्टसे और को लेअथवा नाभिमे हाथ
छुवायके तो साधारण लाभ होय ॥२॥ मूल ॥ जंघालिंगकटिस्पर्शे कन्या
लाभस्तो ध्रुवः ॥ जानुगुल्फपदस्पर्शे महाक्लेशप्रजायते ॥३॥ टीका ॥ जो
जांघ लिंग कटि छूयके पूछै तो कन्या पुत्रादिक संतानकी उत्पत्ति होय ॥
और खोटे अथवा वाई छूयके पूछै तो अथवा गुल्फ छूवे [illegible] महाक्लेश
होय ॥३॥ मूल ॥ केशस्पर्शे भवेन्मृत्युः फलस्पर्शे शुभं भवे[illegible]
कसंस्पर्शे कार्यसिद्धिर्नजायते ॥४॥ टीका ॥ जो केश छुवै [illegible]
और जो फल छुवै तो शुभ होय अतिनकाव [illegible]
होय ॥४॥ मूल ॥ काष्ठपंकपदस्पर्शे ग्रहपीडा भयं भवे[illegible]
डादिस्पर्शे सिद्धिप्रजायते ॥५॥ टीका ॥ लकडीकों की [illegible]
ग्रहपीडा होय भय होय और हाथ धका मचकी [illegible]
मसिद्धि होय ॥५॥ मूल ॥ अस्मालये श्मशाने च शुष्का काष्ठे [illegible]

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

त्समभस्मोधनस्थानेप्रश्नेक्लेशश्चजायते॥६॥टीका॥सतेघर[illegible]नां[illegible]
परमसायनभूमिमैघायलकेघरगुल्मलताछ[illegible]
पापस्थानविषै॥इतनीचोरवैठकेप्रश्नपर्छैतोमहा[illegible]
देवाहेनदातारैदस्थानेशुभंभवेत्॥सर्वेदिश्चैव[illegible]॥[illegible]
नजायते॥७॥टीका॥देवस्थानमैनदीकेतीर॥उत्तम[illegible]
केपर्छैप्रश्नतौशुभहै॥औरचारौकोनशुद्धदिशानके[illegible]
श्रेष्ठहै॥औरवेदिशामैहोकेपर्छैतौनेष्टहै॥८॥मूल॥[illegible]शेनादि
प्रश्न॥तिस्रोमीनेचमेषेचघट्यः पंचश्रुतिपलं॥चतुः[illegible]वृषेकुंभेप
लाश्चैलाश्चषोडशः॥टी॥मकरेमिथुनेपंचघटिकाविंशरवापलं॥पंच
कर्कैचचापेचशशिवेदापलास्मृताः॥९॥कंन्यापंचतुलेपंचपलाश्च
तुलथाग्नयः॥घटिकापंचासिंहेलोष्वयेवेदापलास्मृताः॥१०॥एवंलग्न
प्रमाणंस्यात्कार्यंतत्पर्वसूरिभिः॥टीका॥अबलग्नकेघटीपलकहते
हैसोसमझलीजिये॥इतिलग्नप्रमाणं॥मूल॥सर्वेषेनश्चतामश्वगो

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मे॰	वृ॰	मि	क॰	सिं॰	कं॰	तु॰	वृ॰	ध॰	म॰	कुं॰	मी॰	[illegible]
३०	४	५	५	५	५	५	५	५	३	४	३	
२५	१२	५	४१	४२	४५	४५	४२	४१	५	१६	४५	

गोधूमारक्तचंदनं॥
चंद्रे शंखं चंदनं च व
स्त्रं च सितं तंदुलाः॥ कु
जे वस्त्रप्रदानं चार
क्तवस्त्रं गुडोदनं॥ बुधे कर्पूरमुद्गाश्च हरित्वस्त्रं हरिन्मणिः॥ पीतवस्त्रं द
यं जीवे हरिद्रा तत्र एव कांचनं च॥ २३॥ श्वेतवस्त्रं शुक्रे सितो देयाः [illegible] धान्यानि
धान्यानि च॥ शनौ तैलं तिलं देयाः कृष्णगोदानमुत्तमं॥ राहौ [illegible] छा
गो माषकृष्ण तिलसर्षपाः॥ अजमेषौ च दातव्यौ केतौ चा[illegible]॥ २४
वर्णगो विप्रपूजाभिः सर्वे शांतिरुत्तमाः॥ टीका॥ सू[illegible]के[illegible]क
हते है सूर्य को लाल गाई तांबा गेहूं रक्तचंदन॥ १॥ चं[illegible]
दन स्वेतवस्त्र चावल॥ २॥ मंगल लाल बैल लालव[illegible]
कपरा मूंग हरावस्त्र हरी मणि पन्नादिक हरे[illegible]
वस्त्र दाल चने की सुवर्ण॥ ३॥ शुक्र को दान स्वेत श्वेत[illegible]

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शनिकोतेल कालीगऊ कालावस्त्र तिल लोहा भैं[illegible] थार॥ ना[illegible]
कोसतनजा भैंस छेरी कोयला मछरी उडद तिल [illegible]॥ [illegible]
कोसतनजा मेढा हथियार सवर्ण स्यामवस्त्रदीजे॥ [illegible] ही
नादियेतेसकलग्रह शांत होते है॥ इतिग्रहदानम्॥ [illegible]॥ [illegible] मि
तंचसर्वाष्टिश्च सुखीनरः॥ पद्य॥ वृषेगुरौसल्पवृष्टिः [illegible] पीडा [illegible]
[illegible]॥ सुनावृष्टिप्रजानाशोरौरवंमिथुनेगुरौ॥ १८॥ कर्के [illegible] महर्घ [illegible]
[illegible] गोमहर्घता॥ सिंहेगुरौसुभिक्षंचसुवृष्टिश्चप्रजासुख॥ १९॥ [illegible]
रोगपीडासुभिक्षंसम्पजन्मच॥ तुलेगुरौशस्यनाश [illegible] प्रजा
यते॥ १९॥ अलोजीवेचदुर्भिक्षंराजचौरोरगाद्भयं॥ चापेगुरौशुभावृष्टिः
शुभंशस्यमहर्घता॥ २०॥ दुर्भिक्षंमकरेजीवेराजयुद्धंपशुक्षयं॥ कुंभेगु
रौचदुर्भिक्षंधातुमूलमहर्घता॥ २१॥ दुर्भिक्षंदक्षिणेदेशेऊषजीवेन
चान्यगे॥ टीका॥ जबमेषपेवृहस्पतिआवेतौसुभिक्षहोई वर्षाअच्छीहो
य मनुष्यसुषितरहै १६ वृषकेगुरुहोयतौ वर्षाथोडीहोय प्रजापीडा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

होय विग्रह होय ॥ मिथुन गुरु होय तो वृष्टि बहुत थोड़ी होय प्रजा बहुत
क्लेश पावै ॥ १७ ॥ और कर्क के उच्च के बृहस्पति होय तो बड़ा वर्षा होय
और देश मंगल होय अन्न महंगो होइ सिंह के बृहस्पति होय तो सुभिक्ष हो
य वर्षा अधिक होय प्रजा सुखी रहै ॥ १८ ॥ कंन्या के गुरु होय तो रोग पीड़ा
होइ सुभिक्ष होय अन्न बहुत होय ॥ तुला के बृहस्पति होय तो [illegible] का
नास होय दूध बहुत होय ॥ १९ ॥ वृश्चिक के गुरु होय [illegible] नै तपड़ै औ
र चोर भय विशेष होय धन की बृहस्पति सो मेघ दरखवा [illegible] तो बहुत
फलै ॥ रस महंगा होई ॥ २० ॥ मकर के बृहस्पति होय तो म[illegible] और
र देशपति राजन सौं युद्ध होय कुंभ के बृहस्पति होय [illegible] वर्ष [illegible] औ
र धान महंगो होय ॥ २१ ॥ और जो बृहस्पति मीन राशि मे [illegible] त्तकी [illegible]
की दिशा में दुर्भिक्ष परै और दिशा मैं नहीं ॥ २२ ॥ इति वा[illegible]
गुरु शुभाशुभ यथा फलं ॥ अथ संक्रांति तो चोष्टपरा [illegible]
मफलम् ॥ मूल ॥ मार्ग कार्तिक संक्रांती वृषे शेव वेति [illegible]

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नएां सौख्ये समप्रलौव सुधरा ॥ चैत्र फाल्गुनो वैशाख [illegible] ॥ नां [illegible]
घन: ॥ यादृक्षेति सर्वत्र सुभिक्षं च प्रजा सुखं ॥ आषाढे [illegible] ॥ [illegible] मल ॥
श्रावणे सुखं ॥ भाद्रे च बहु वौरेणा सुखं सर्वत्र चाश्विने ॥ [illegible]
ती च षट्स्त्रापि स्तुभाय्युमें ॥ २५ ॥ टीका ॥ जो अगहन और [illegible] नाशोज [illegible] औ
तजो ने इन लगैना हो दिन वर्षो होय औरी का अधिक [illegible] कीप [illegible] मे
मध्यम वर्षा होय और समामघ्य महोय ॥ २५ ॥ और प [illegible] को महीं
नेन के मास तथा वैशाख के महीने की संक्रांतिन को [illegible] वृष्टि हो
यतो सर्वत्र सुभिक्ष रहे ॥ और अन्नादिक सकल पदार्थ [illegible] प्रजा आ
ग्यता पूर्वक सुखी रहे और पाट कृटकी संक्रांतिन को मेघ वर्षे तो प्रजा
सुखी रहै ॥ और अन्नादिक सकल उत्पत्ति अधिक होय और चैत्र के म
हीना और फाल्गुण ॥ २३ ॥ और आषाढ की संक्रांति के दिन जल वृष्टि हो
यतो प्रजा को रोगन की अधिकता होय ॥ और जो संक्रांतिन के दिन को व
ष्टि होयतो सष्टि को अधिक सुख होय ॥ २४ ॥ और माहा की संक्रांति को व

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शी॰टी॰ छ होयतो अनेकरोगहोई॥ औरकुवारकीसंक्रांतिकोवर्षेतोसुवहीकोवर्षे
सवहीकोआनंदहोय॥ याप्रकारसोइनवारहसंक्रांतिनकोशुभाशुभफल
कहियै॥ औरइनमेंकछुराशिमासकासंवंधनाहीहै वारहतिसराशिकेसूर्यआ
वेकेवलमासिकफलहै॥२५॥इतिद्वादशसंक्रांतिवृष्टिशुभाशुभफलं॥ अ॰
थमासेमासेपचमावायुसंवंधफलं॥मूल॥चैत्रमेशुक्लपंचम्यांपूर्वेवायुप्र
नागमं॥आट्टगुणत्रयंमौल्यंरससर्पांजायतेतदा॥२६॥ जेष्ठ... पंचम्यांव
हेपश्चिममारुत॥तदाचतुर्गुणंमौल्यंधान्यानांकीर्तिकेभवे... ॥श्रावणे
शुक्लपंचम्यांवृष्टिवींतेदिनत्रयं॥दक्षिणेपश्चिमेशेर्यदुर्भिक्षं... संततयं॥२८
टीका॥ चैत्रशुक्लपक्षकीपंचमीकोजोपूर्वकोपवनचलेअ... वर्षे॥ तोभादों
मैतिगुणोमोलविकायरसगोरसघीव॥२६॥ औरजेष्ठशु... क्षकीपंचमीकी
जोपवनचलेतोमेघवर्षे॥ तोकातिकमैचौगुणोमोलअन्न... ॥ तोसा
वनकीशुक्लपक्षकीपंचमीकोतीनदिनपवनचलेमेघ...
दिशामैधान्यकीक्षयहोय॥२८॥इतिशुक्लपंचमीफल॥ ...

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ष्णाख्यायां श्रावणे चैव वर्षेति ॥ सर्वं रत्नपरित्यज्य [illegible] ॥ [illegible]
२८ ॥ इति ॥ टीका ॥ चि. खा. वि. येन नक्षत्र चैत्र श्रावणे [illegible]
कू छाडि के अन्न का संग्रह करिये ॥ २९ ॥ इति नक्षत्र [illegible] मूल ॥ आ
षाढ पूर्णिमायां चन्द्र नैऋत्यजाति नैऋत्यतः ॥ अन्नावृष्टि [illegible] नाशो जलकू
पेन दृश्यते ॥ ३० ॥ टीका ॥ आषाढी पौर्णमासी को जो नैऋत्य [illegible] की पवन चले
तो लोक विषे वर्षा थोडा होय ॥ और सकल अन्नादिक धान्य [illegible] थोड उत्पत्ति है
य ॥ सब रस का सोस माई जायत एक थोडा उपजे जलकू [illegible] दीखे ॥ ३०
मूल ॥ आषाढ पूर्णिमायां तु वायव्ये यदि मारुतः ॥ धर्म [illegible] दा लोके
धन धान्य परिग्रहे ॥ ३१ ॥ टीका ॥ आषाढ की पूर्णमासी को वायव्य दिशा की
पवन चले तो लोक विशेष शीलधर्म होई ॥ ३१ ॥ मूल ॥ आषाढ पौर्णमायां तु
ईशाने यदि मारुतः ॥ सुखिनो हि तदा लोकाः गीतवाद्य परायणाः ॥ ३२ ॥ वन्हि
कोणे वन्हि भीतिः पश्चिमे च जलाद्भयं ॥ अन्य यदि वायुः स्यात् भिन्न जाय
ते तदा ॥ ३३ ॥ टीका ॥ आषाढ की पूर्णमासी को ईशान दिशा का पवन चले तो

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विशेषसुखहोय सबमनुष्य आनंदकरै ॥३२॥ औरजोअग्निकोणकोपवनचले
तौजलकोभयहोय ॥३३॥ मूल ॥ सर्वमासेषुपौर्णिमायांभूमिकंपोयदाभवेत् ॥ उ
ल्कातारावज्रपातःसूर्य्यःशशिसूर्यकोः ॥३४॥ धूमकेतुःचक्रचापःग्रहणोव-
हुधातथा ॥ तदाचसर्वववस्तूनांजायतेचमहर्घता ॥३५॥ टीका ॥ किसीमहीने
कीपूर्णिमाकोभूमिकंपहोय ॥ अथवाबादिनमेतारा टूटैक्या उल्कातारावज्र
पातगाजपरैतौ क्याचंद्रसूर्यकाग्रहणपरै क्याधूमकेतुउ [illegible] आवैतमाइ
ङ्र धनुष ऊगै ॥ बहुतग्रहणपरैतौसकलवस्तमहगीहोई ॥३५॥ [illegible] अथ [illegible]
उत्पातफलं ॥ मूल ॥ आषाढेशुक्लपक्षेचप्रतिपदि द्वितीयायांचवर्षे [illegible] वर्षे भेषस्तः
दाव [illegible] जायतेश्रावणेध्रुवं ॥३६॥ टीका ॥ आषाढशुदि पडवा [illegible] जकीजैतौश्रा
वणमेंवर्षाहोय ॥३६॥ मूल ॥ तृतीयायांपूर्वेवायुःपूर्वेजाति [illegible] ॥ यदि
श्रीमत्तदामाद्वेवर्षतिविपुलंजलं ॥३७॥ टीका ॥ आषाढ [illegible] वैसे
वर्षैतौभादौजादेवर्षै ॥३७॥ मूल ॥ चतुर्थ्यांदादिणोवायुः [illegible]
श्विनेचयदामासेवहिमेवतिनिश्चितं ॥३८॥ टीका ॥ अ [illegible]

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

एकीवायु पूर्वकोजायतीआश्विनमेव हूतवर्षाहोय [illegible] घर।। संग्रह।।
३८।।मूल।। पंचम्यामस्तरवायुः हश्यतेचयदाबुधैः।।त [illegible] फल [illegible]
मेवतिमयसी।।३९।।टीका।। आषाढशुदि ५ कोउतरकीप [illegible] मूल [illegible] तके
मेवहूतवर्षाहोय।।३९।।मूल।। चतुर्थ्येवादवसेयदिवर्षा [illegible] नाशो आतव
स्याचदुर्भिक्षंजायतेनात्रसंशयः।।४०।।टीका।। आषाढकी।। [illegible] कीप कोमेघ
वर्षेतोअतिवर्षाहोई अन्नथोरेहोयदुर्भिक्षपरै।।४०।।मूल [illegible] थोडयग्रहाजा
तोवातदक्षिणपश्चिमे।।तदानश्यंतिधान्यानिदुर्भिक्षंचप्र [illegible]।।४१।।टीका
आषाढशुदि।।२।।३।।पवनदक्षिणतेपश्चिमकोजायतोधान्य [illegible] होय।।४१।।
मूल।।तृतीयायांचपंचम्यांवायुपूर्वोतरोयदि।।तदाधान्यानिजायंतेसर्वेकृत
युगोयथा।।४२।।टीका।। आषाढशुदि।।३।।५।।कोपरवाइके उतरहरीचलेतोव
हुतअन्नहोयसतयुगकेसा।।४२।।मूल।।इत्याषाढशुक्लद्वितीयादिदिन [illegible]
फलं।। पौषमूलमरएयातंचंद्रचारेणगर्जति।। आर्द्रादितोविशाखायांसर्वेस्व
देनवर्षति।।४३।।टीका।। जोपौषमासमेंमीनिनिसकेचांद्रकनक्षत्रतेमरणालौ

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शी॰टी॰ इनमें ११वाद्रनाहोयतो औरईनमेंविशाखोलो ११ सर्येनक्षत्रनावरषैजो
इनमेंबादरहोयतोवेवरषै॥४३॥मूल॥यदितिहति भौमस्य देवकोपिग्रह
तदा॥ष्टमासंलघधान्यानांजायतेचमहर्घता॥४४॥टीका॥जोभौमकेदे
वकोउग्रहहोयतो ६ मासलौहलकाजोनाजनमहगारहे॥४४॥मूल॥शु
क दैवेकुजेमासद्वयंअन्नंमहर्घता॥चंद्रंचदिननाथेचसर्वेरोगप्रकुर्वंतदा॥४५
टीका॥शुक्रकेलदेवत्रीभौममें ६ मासमहंगारहै जोरविचंद्र [illegible] देवमेकुज
होयतोरोगहोई॥४५॥मूल॥शनौराहौसर्वधान्यंमहर्घराजविग्रहः॥बुधेदे
वेरवौचंद्रेविरोधंसर्वेभूभुजां॥४६॥टीका॥जोशुक्रलदेवे [illegible] य औरशनि
राहुजायमिलेतोसकलअन्नमहगोहोय॥४६॥औरराज [illegible] मेंविरोधहोय
औरजोबुधकन्यामिथुनमेंहोय तिनमेंसूर्यचंद्रमादोनो [illegible] मिलैतोजोरा
केराशिकेहोयजायतोहूराजराजनमेंवडाविग्रहहोय [illegible] कुलति
लवधान्यानांपंचमासप्रजायते॥सभिंदंचमहर्घ्यं स्फटिकःपद्मनं रत्न [illegible]
४७॥टीका॥औरपक्षीतलहोयोतोसो ५ मासपर्यंतअन्नकीउत्पत्तिकोल [illegible]

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कालहोयरहैचौपायनकोचारावहुत्तहोय ॥ ४८ ॥ मूल ॥ शुक्रक्षेत्रेमेवं[illegible] ॥
चंद्रक्षेत्रेभगोसुतः ॥ पाषंडानांभवेद्वृद्धिःधान्यानांचमह[illegible] ॥ [illegible]
जोशुक्रकीराशिकेवुधचंद्रमाहोय औरचंद्रमाकीरा[illegible]
डकीवृद्धिहोय ॥ ४८ ॥ मूल ॥ वुधेक्षेत्रेशनौचंद्रेतप्तधान्य[illegible]महर्घता ॥ शुक्रक्षे
त्रेगुरौभौमेकर्पासादिमहर्घता ॥ ४९ ॥ टीका ॥ वुधक्षेत्रमे[illegible]निचंद्रमाहोय
एकत्रअन्नमहगोहोय सातोअन्नघाटविके ॥ औरशुक्र[illegible]त्रमेगुरुभौम
होयतोकपासआदिकजेपटरसहैतेमहगोहोय ॥ मूल ॥ [illegible]क्षेत्रेशनौ
राहौताम्रादीनांमहर्घता ॥ शनिक्षेत्रेशनौराहौसमर्भे[illegible]भास्करे ॥ ५०
टीका ॥ जोभौमकेघरमेशनिराहुएकत्रहोयतो तोवेकूआदिलेके आ॰
ठौंधातमहगोहोयनिश्चैहोय ॥ औरशनिकीराशिमेंशनिराहुएकत्रहोय
तौ जोचंद्रमासूर्येजायमिलेतोसमर्घ्यहोय ॥ ५० ॥ मूल ॥ पशुनाशोधा
न्यवृद्धिर्गुडादीनांमहर्घता ॥ गुरुक्षेत्रेशनौराहौरत्नवृद्धिलक्षणतयं ॥ ५१ ॥
टीका ॥ गुरुकीराशिमेंशनिराहुहोयतो पशुनकोनाशहोय अलक्षणदि

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

५६

वा॰टी॰ कनकीनयहोय ॥५१॥ मूल ॥ भौमेराज्ञांविरोधस्त्वबुधेवृष्टिश्चभूयसी ॥ तत्रवृष्टिः
पशूनांचसौख्यंधान्यबहुनिच ॥५२॥ टीका ॥ जोगुरुक्षेत्रभौमहोयतोराजानमें
विरोधहोय ॥ औरजोगुरुकेक्षेत्रमेंबुधहोयतो वर्षाअधिकहोयतत्रपादिकवि
शेषहोय पशूनकोसुखकोयधान्यबहुतपैदाहोय ॥५२॥ मूल ॥ भौमक्षेत्रेयदा
संतिराहुभौमार्किभार्गवः ॥ धान्यमांसगुडसर्पोसघृतक्षारमहर्घता ॥५२॥ टीका
जोमंगलकेक्षेत्रमेराहुहोयतो अथवाभौमशुक्रहोयतो [illegible] भौमशुक्रहो
यकासमयेहोयतो महीनेलींगुडकपासघृतदूधमहंगाहोय ॥ [illegible] मूल ॥ मंद
क्षेत्रेयदासंति मंदराहुबुधस्तथा ॥ चतुष्पदानांनाशश्च विप[illegible]यते ॥५४
टीका ॥ शनिक्षेत्रमेशनिराहुबुधहोयतो चतुष्पदकोनाशहो[illegible]मविरो[illegible]परजो
मनुष्यहै तिनकानाशहोय ॥५४॥ मूल ॥ भौमक्षेत्रेयदासंति[illegible]मिले[illegible]करे
तदामक्तापशूनांचशंखुसुवमहर्घता ॥५५॥ टीका ॥ जोभौ[illegible]
चंद्रमाहोयतोपशूनकोनासहोय औरशंखमहंगोहोय [illegible]
नागवसधान्यानांचमहर्घता ॥ शनिक्षेत्रेरविश्चंद्रेवक्षाणांवृत्तिउत्पत्ति,को[illegible]

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

का॥ भौमके क्षेत्रमे शुक्र जायतो अन्नमहगो होय॥ श्रीरस्त॥ शुक्र क्षेत्रमे बुध॥
वस्त्रमहगो होई तामें विशेषकरि ब्राह्मणपीतवर्णकेवस्त्रवि[illegible]॥ ५ [illegible]
मूल॥ शुक्र क्षेत्रे गुरौ भौमे प्रजापीडा च जायते॥ ग्रहराशि[illegible]
कीर्तिताः॥ ५७॥ टीका॥ जो शुक्र क्षेत्रमे भौम गुरु योग करे [illegible] पीडा
होय॥ ऐसे ग्रहको श्रीर राशिनको योग आनि परे तो ऐसे फल[illegible] नि चंद्र शुभ॥ ५
मूल॥ चंद्रोदये कुज क्षेत्रे लषधान्य स्य वर्द्धये॥ चंद्रोदये [illegible] वृद्धि
कर्णाणये॥ ५८॥ टीका॥ भौमके क्षेत्र चंद्रमाका उदय होय [illegible] भौम मिले तो
धान्यकी वृद्धि होय॥ ५८॥ मूल॥ प्रजापीडा बुध क्षेत्रे सोम[illegible] यो भवेत॥
रवि क्षेत्रे तुलावृद्धि शनि सोम समोदयः॥ ५९॥ टीका॥ बुधके क्षेत्रमे चंद्र शुक्र
का उदय होय तो प्रजाको पीडा होय॥ श्री सूर्यकी राशिमे शुक्रका उदय हो-
य तो तुला जो है डांडी तिसकी वृद्धि होय अन्नसस्ता विके॥ ५९॥ मूल॥ चंद्र क्षेत्रे
शुक्र चंद्र बुधेनाम उदयो भवेत॥ षण्मासस्याभ्यन्तरे दुर्भिक्षं मानवाः क्लिष्टजायते॥
६०॥ टीका॥ जो चंद्र क्षेत्रमे शुक्र चंद्र बुधके उदय होय तो ६ मास पर्यंत लो दुर्भि

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दोहोय महगो रहै वर्षोंमें अधिक होय ॥ ६० ॥ मूल ॥ उदितौ च बुधे देवे यदा रा
हुशनैश्चरे ॥ पशुदाय प्रजापीडाः धान्यानां च महर्घता ॥ ६१ ॥ टीका ॥ बुधके
देवमें राहु शनिका उदय होय तो पशुकी दाय प्रजापीडा होय अन्न महगो हो
य ॥ ६१ ॥ मूल ॥ शुक्र देवे सोम्यसूर्यै सूर्यपुत्रोदयो यदा ॥ उदयात् महापीडा
जायते च महर्घता ॥ ६२ ॥ टीका ॥ जो शुक्रके देवमें चंद्र सूर्य शनिका उदय
होय तो सूर्यके उदयते मास पर्यंत पीडा होय अन्न महगो है [illegible] ॥ मूल ॥ य
दोदय शनिदेवे भौम भास्करयो भवेत् ॥ घृतानां च तदा व[illegible] नां च मह
र्घता ॥ ६२ ॥ मूल ॥ जो शनि देवमें सूर्यका उदय होय तो घृ[illegible] होय ॥ जो
र स्त्रवस्त्र सस्ता होय सो भाग्य भाषित पदार्थ सब सस्ते है ॥ [illegible] नि देवमें
भौम होय तो हू सर्वोक्त फल होय ॥ ६३ ॥ मूल ॥ यदा सौम [illegible] देवे
शनैश्चरः ॥ तदा सौ तृणकाष्टानां लोहानां च महर्घता [illegible] है
जो शनिमें तृणकाष्ट होय वे महगो होय ॥ ६४ ॥ इतिय [illegible]
गुरुर्यदा विशोवायांते दाधान्य महर्घता ६ मंगलव [illegible]

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मंगलम् ॥ ६५ ॥ टीका ॥ जो विशाखाके गुरु होय तो अन्न [illegible]
लौ सर्वमंगल विनोद रहै ॥ ६५ ॥ मूल ॥ चार्द्रायां लय र [illegible]
न्नवेत् ॥ बुधे माद्रे च ल भिक्षं सुभिक्षं महाभयं दले ॥ ६६ ॥ टी [illegible]
ल होय अथवा शनि होय तो दुर्भिक्ष होय ॥ और पूर्वा भाद्रपद [illegible] [illegible]
दुर्भिक्ष परै ॥ ६६ ॥ शुक्र होय तो सुभिक्ष परै ॥ मूल ॥ सुभिक्षं च [illegible] [illegible]
कोपि ग्रहो भवेत ॥ कल्याणं च सुभिक्षं च दस्ले षायाम्स्थि [illegible] टीका ॥
जो श्रवण धनिष्ठा कोई ग्रह होय तो सुभिक्ष होय ॥ और जो श्लेषा [illegible] [illegible] तो प्र
जा का कल्याण होय सुभिक्ष होय ॥ ६७ ॥ मूल ॥ [illegible] सव ह [illegible] ते मकर्के
ट पीडनं ॥ बुधे तला श्च माषा श्च महर्घे वर्षकालतः ॥ ६८ ॥ सूर्य [illegible] धा
न्यानि महर्घानि भवंति च ॥ शुक्रे च महती वर्षा सस्यानि सकलानि च ॥ ६९ ॥
टीका ॥ जो श्लेषाके मंगल होय तो कपास सस्ती होय और फौज नमें पीडा हो
य ॥ जो बुध श्लेषाके होय तो तिल उर्द वर्ष दिन लौ महगे रहै ॥ ६८ ॥ और जो
श्लेषाके सूर्य होय तो अन्न महगो होय श्लेषाके शुक्र होय तो वर्षा वहुत हो

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शी॰टी॰ य अन्नसववक्रूत होय॥ ६९॥ मूल॥ मूले गुरौ कुलत्थानां मुद्गाश्च वक्रधामवे
त॥ भौमे मुद्गस्य नाशस्स्यु बुधे च सर्वत्र संपदा॥ ७०॥ टीका॥ जो मूलके गुरु होय तो
कुथी मूंग बहुत पैदा होय॥ और जो भौम हो य तो मूंग नाश होय और बुधके हो
य तो सर्व संपदा होय॥ ७०॥ मूल॥ पूर्वाषाढगते भौमे पीडा च पश्चदक्षिणं॥ केतौ
महर्घता मंदे जायते च महर्घता॥ ७१॥ टीका॥ जो पूर्वाषाढके भौम हो [illegible] प
श्चिम दक्षिणकों पीडा होय अधिक॥ और केतु होय तो सकल [illegible] होय
७१॥ मूल॥ उत्तराषाढके जीवे गुडानां च महर्घता॥ भौमे च [illegible] जाय
ते च महर्घता॥ ७२॥ अभिजि न्नाम नक्षत्रे यदा हाया [illegible] सर्वमणि
जायंते भूमिर्दं च कुजे तथा॥ ७३॥ टीका॥ जो उत्तराषाढके [illegible] होय तो
गुड महंगो होय॥ और जो भौम होय तो चौपाये महंगो होय॥ [illegible] अभि
जित नक्षत्रके शनि होय तो सर्व अन्न उपजै सुभिक्ष होय [illegible]
यदा जीवे तदा स्युः सर्वसंपदा॥ बुधे राजसुतत्रासो [illegible]
७४॥ कृतिकायां च रोहिण्यां यदा जीवो हि तिष्ठति॥ मध्यम [illegible]

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

दाव छिक्ष्वम घ्यमाः ।।७५।। टीका ।। जोश्रवणकेवृहस्प [illegible]
य वुधहोयतौ राजपुत्रनकोपीडाहोय औरजोशनि [illegible]
तउपजे ।।७४।। जोकृतिकारोहिणीकेगुरु होयतो अ [illegible]
मध्यमहोय ।।७५।। मूल ।। आर्द्रायांमृगशीर्षेचयदावास्[illegible]
दंस्यादनावृष्टीप्रजानांचसदाशिवं ।।७६।। टीका ।। जोआ [illegible] गशिरके
गुरुहोयतौ दुर्भिक्षहोयवर्षाथोडीहोय ।। अनेकप्रकारप्र [illegible]
औरपीडाहोय ।।७६।। मूल ।। फाल्गुणीद्वयहस्तेषु मघा [illegible]
सुभिक्षं चसुवृष्टिश्चप्रजानांस्यादरोगता ।।७७।। टीका ।। म [illegible] होहस्तउत
राइनकेगुरुहोयतो सुभिक्षहोय ।। अन्नउपजेवर्षाभली होय रोगनाशहोय
७७ ।। चित्रास्वातिकेगुरुहोयतो विचित्रमेघवर्षे ।। औरकहूंकहूंविचित्रफल
फूलेअन्नअधिकउपजे ।। मूल ।। विशाखामैत्रयोजीवेधान्यंवर्षेचमध्यम
ज्येष्ठामूलेमासयुग्मंवृष्टिर्मासद्वयोनच ।।७८।। टीका ।। विशाखाअनुरा
धाकेगुरुहोयतौवर्षे१दिनलोअन्नमध्यमरहे ज्येष्ठामूलकेगुरुहोयतो

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शी॰टी॰ मास २ पर्यंत वर्षा होय ॥ ७९ ॥ मूल ॥ पूर्वाषाढोत्तराषाढोस्थितोयदि बृहस्प
ति ॥ तदारोग्यम सुभिक्षं च सुवृष्टिश्च जायते ॥ ८० ॥ टीका ॥ पूर्वाषाढा उत्तराषा
ढ के गुरु होय तौ ॥ १ जारोग्य रहै वर्षा नीकी होय ॥ ८१ ॥ मूल ॥ अनावृष्टि
श्च दुर्भिक्षं रेवत्यां संस्थिते गुरौ ॥ धनिष्ठायां च शुक्रो पि पीडा भवति हस्तिनां
८२ ॥ टीका ॥ जौ रेवती के गुरु होय तौ वर्षा थोरी होय अन्न महंगो होय [illegible]
निष्ठा के शुक्र होय तौ हाथियन को पीडा होय ॥ ८२ ॥ इतिन[illegible]
इति श्रीकाशीनाथकृतौ शीघ्रबोधे सनामि वार्तिक तिल[illegible] प्रकर
णं तृतीयम् ॥ ३ ॥ अथ होडाचक्र लिख्यते ॥ नक्षत्र [illegible]
एक नक्षत्र के चार चरण होत हैं ॥ जौन चरण को जन्म हो[illegible]
नाम धरियै ॥ चू चे चो ला अश्विनी १ ली लू ले लो भरणी २ [illegible]
ओ वा वि वु रोहिणी ४ वे वो क कि मृगशिर ५ कु घ ङ छ [illegible]
पुनर्वसु ७ हू हे हो डा पुष्य ८ डि डु डे डो आश्लेषा ९ म मि मु मे [illegible]
पूर्वाफाल्गुनी ११ टे टो प पि उत्तराफाल्गुनी १२ पू षा ण ठ हस्त [illegible]

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१४ रूरेरोता स्वाति ॥ १५ तितूतेतो विशाखा १६ ननिनुने [illegible]
ज्येष्ठा १८ जेजोभभि मूल १९ भधाफाढा पूर्वाषाढ २० [illegible]
२१ जुजेजोषा ऽभिजित् २२ खिखुखेखो श्रवण २३ गा [illegible]
गोशाशिशु शत भिषा २५ शेशोदादि पूर्वाभाद्रपद २६ दुथ [illegible] प
द २० देदोचाचि रेवती २८ ॥ इति होडाचक्र ॥ अथ सपादरु [illegible] राशि
क्रमः ॥ अश्विनी भरणी कृत्तिकापाय मेष १ ॥ कृत्तिकानां त्रयो [illegible]
गशिरार्द्धं वृष २ ॥ मृगशिरार्द्धं आर्द्रा पुनर्वसुपादत्रयं मिथुन [illegible] पादमे
र्क पुष्यश्लेषांते कर्क ४ ॥ मघा च पूर्वाफाल्गुनी उत्तरापादे [illegible] राफा
ल्गुनी त्रयोपाद हस्त चित्रार्द्धं कन्या ६ ॥ चित्रार्द्धं स्वाति विशाखापा [illegible] ॥ ७
विशाखापादमेकं अनुराधा ज्येष्ठांते वृश्चिक ८ ॥ मूलं च पूर्वाषाढ उत्तरापाये
धन ९ ॥ उत्तराणां त्रयोपादा अभिजित् श्रवण धनिष्ठार्द्धं मकर १० ॥ धनिष्ठार्द्धं
शतभिषा पूर्वाभाद्रपद पादत्रयं कुंभ ११ ॥ पूर्वाभाद्रपद पादमेकं उत्तराभाद्रप
द रेवत्यंते मीन १२ ॥ अथ लग्नांक राशिः ॥ अला मेष १ उवा वृष २ काका मि

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शी॰टी॰ थुन ३ टाह कर्क ४ माठा सिंह ५ पाठा कन्या ६ राता तुल ७ नोया वृश्चिक ८॥
मा धा धन ९ षा गा मकर १० गो शा कुंभ ११ दा चा मीन १२॥ इति लघु राशि॥
मूल॥ तनु १ धनं २ भ्रात ३ चै ४ व सुहृत्सुत ५ फल त्रिका ६ मरणं धर्म कर्मा य
व्ययका द्वादशाशयः॥ सप्तविंशति भानां च नवभिर्नव भिः पदैः॥ २॥ अश्विनी
प्रमुखानां च मेषाद्या राशयस्मृताः॥ १॥ अथ तन्वादि भाव [illegible] मानां बला
बलाबल निर्णय वशात् शुभाशुभ फलज्ञानार्थे ग्रहाणां [illegible] का व्याक
माह दृष्टि निर्णयः॥ मूल॥ तृतीये दशमे पंच नव पंचमयो [illegible] पंचाष्ट
मे तुर्ये सप्तमे विंशति स्तथा॥ ४॥ विश्वाख्य ग्रह दृष्टीनां मेष [illegible] च्यते॥
पंचविंशोपकं श्री तं पादमेकं क्रमोच्यते॥ ५॥ आये व्यये [illegible] षेष्टो
न दृष्ट्यः॥ ३॥ टीका॥ पांच विश्वा दृष्टि कौ एक चरण १ क [illegible]॥
२० विश्वा को चार चरण जानिये आय का ह्यै ११ व्यय [illegible]
लग्न कहै १ षष्ठ कहै ६ इन स्थानो मै वा ग्रह की दृष्टि [illegible]
मूल॥ तृतीये दशमे मंदो नवमे पंचमे गुरुः॥ विंशते वीक्ष [illegible]

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मेकुजः॥ ४॥ टीका॥ तीसरे ३ दशमे स्थान शनिश्च म [illegible]
हस्पति और चौथे ४ आठवे ८ स्थान मंगल या प्रका [illegible]
सो २० विश्वा संपूर्ण दृष्टि जहां परे होत हां देषत है॥ [illegible]
कर्मविशोपकदृष्टिः॥ मूल॥ रविवारे ए संयुक्ता यदा स [illegible]
यो:॥ अमायां तत दा पृथ्वी नंड मंडं च जायते॥ ५॥ टीका॥ म [illegible]
की अमावस्या जो रविवारी होय तो पृथ्वी में नंड मंड होय॥ [illegible] अथ मा
त्रिगुणा मासा एक पंचाशत युताः॥ दलिता घटिका [illegible]
वासराः॥ ६॥ टीका॥ मकर की अयन जो न दिन लगी होय [illegible] दिन सेवते
मान दिन लौ जे महीने परे वीत चुके हो तेई त्रिगुणो करते [illegible]॥ पर रवा
वन और जोर कै सो अंक आधे कारे जो रहै तितनी घरी जानिये॥ और म
हीनन ते अधिका जे ई दिन वढे होय॥ तिनको त्रि ३ गुनी कर के जो अंक हो
य तितने पल उनघरिन जोरकार ते ही दिन को प्रमाण स्पष्ट या प्रकार
जानिये॥ और कर्क को अयन के दिन ते गनिके या ही गनित सो रात्रि प्रमान

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शी॰टी॰

जानियै॥ परंतु उत्तरायणमें सूर्यविषै दिनवढत है तहां दिनवनाइयै॥ औरदः क्षिणायनमें रात्रिवढत है तहां रात्रिप्रमाणवनाइयै॥ ६॥ मूल॥ एकपदेयदा जातः तिथयश्चत्रयोदशः॥ त्रयतेन्न तयंयांतिवाजिनोमनुजागजाः॥ ७॥ टीका॥ जोएकपाषमें १३ तिथहोयतो मनुष्यघोडाहाथिनकोनाशकरै॥ ७ मूल॥ सूर्यपुत्रश्चवनतत्रादिनमंचत्रयंत्रयं॥ आदित्याश्चबु॰ श्चशुक्राः शनिश्चं द्रकुजतथा॥ ८॥ जीवोराहुश्चकेतुश्च होमंक्रूरान्नशोमने [illegible] चमवे॰

सू॰	बु॰	शु॰	श॰	चं॰	मं॰	व॰	रा॰	के॰
॰२	॰२	॰२	॰२	॰२	॰२	॰२	॰२	॰२
क्रू॰	शु॰	शु॰	क्रू॰	शु॰	क्रू॰	शु॰	क्रू॰	क्रू॰
नेष्ट॰	श्रे॰	श्रे॰	ने॰	श्रे॰	ने॰	श्रे॰	ने॰	नेष्ट
सू॰	बु॰	शु॰	श॰	चं॰	मं॰	व॰	रा॰	के॰

क्षोकवधे संपतिरत [illegible]॥ शुक्रेचे वधनंप्राप्तः शनौपी [illegible] न्तापत॥ चंद्रे भवतिलाभश्चभौमे [illegible] ग्रमवा [illegible] गुरौश्चपमेकल्याणं [illegible] दाः॥ केतौश्चप्रा [illegible] दाहतं॥ ९॥ टीका [illegible] होय तानतत्रतेतीनतीनतत्रसूर्यादियहकोवा [illegible]

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

केनक्षत्र लोगानिये ॥ जो इह ग्रहके भागमे शनिपरै तो [illegible]
होय तो शोक होय बुधके भागमे उतम संपति होय शुक्र [illegible] तो
कलाम होय शनिते पीड़ा होय चंद्रते पीड़ा होय भौमते [illegible]
१० ॥ गुरुते विशेष कल्याण होय ॥ राहुते सर्वे हानि होय केतु [illegible]
होय ॥ या क्रमसे वन्हिचक्र कहा है होमके विचारकौ शुभ [illegible]
मिले तव हानकरै तो कल्याका दाता है ॥ इति हवनके मे [illegible] मिनक्ष
त्राणि शुभाशुभं ॥ मूल ॥ सैका तिथिर्वारयुता युनाम्ना शेषे गुण [illegible] न्विवातः
सौख्याय होमे शशियुग्म शेषे प्राणार्थनाशौ दिवि भूतले च [illegible] ॥ ति
थिवार जोड एकत्र कीजे तामे एक और मिलावौ फिर तीनको भाग दीजै जो ती
न सून्य भाग बचे तो पृथिवीमे जानिये सो सुखको करै एक बचे तो स्वर्गमे विषै
जानिये सो प्राणको संदेह करै ॥ जो रव बचे तो पाताल मे जानिये सो लक्ष्मीको
नाश करै ॥ इति त्रिलोक अग्निवास फलं ॥ मूल ॥ प्रभवो विभवः शुक्लः प्रमोदः
प्रजापतिः ॥ अंगिरा श्रीमुखो भावो युवा धाता तथेश्वरः ॥ १३ ॥ बहुधान्य

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

 प्रमाथी च विक्रमो वृषभस्तथा ॥ चित्रभानुसुभानुश्च तारकः पार्थिवो व्ययः
ब्रह्मविंशतिइत्येते सृष्टिरत्र प्रजायते ॥ टीका ॥ अव ३० संवत्सर कहते हैं प्रभ
व १ विभव २ शुक्ल ३ प्रवोध ४ प्रजापतिः ५ अंगिरा ६ श्रीमुख ७ भाव ८ जुवा
९ धाता १० ईश्वरः ११ वहुधान्य १२ प्रमाथी १३ विक्रम १४ वृषभ १५ चि
त्रभानु १६ सुभानु १७ तारण १८ पार्थिव १९ व्यय २० ये २० वीस संवत्सर ब्र
ह्माकी वीसी के हैं इनमें सृष्टि रचत है ॥ इति विंशतिः ॥ ब्रह्मा[illegible]त्या ॥ सर्वे
जित्सर्वधारी च विरोधी विक्रमस्तथा ॥ खरो नंदननामा च [illegible] जयो
पर ॥ मन्मथो दुर्मुखश्चैव हेमलंबविलंबको ॥ १६ ॥ विकारी [illegible]पलवश्च
शुभकृत्तथा ॥ शोभनश्च तथा क्रोधी विश्वावसुस्तथा पराः [illegible]भवा को
ह्यपरो विष्णोरित्येव विंशतिः ॥ टीका ॥ अव विष्णुकी वीसी [illegible]
त् १ सर्वधारी २ विरोधी ३ विक्रमः ४ खर ५ नंदन ६ वि[illegible]
९ दुर्मुख १० हेमलंब ११ विलंब १२ विकारी १३ सर्वरी [illegible]
१६ शोभन १७ क्रोधी १८ विश्वावसु १९ पराभव २० ॥ इ[illegible]

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मूल॥ प्लवंगकीलकः सौम्यस्तथा साधारणोपरः॥ विरो[illegible]
परभावी प्रमाथी दः॥ आनंदो राक्षसश्चाथ नलश्चापिंग[illegible]
धिरोद्गारी रक्ताक्षो क्रोधनस्तथा॥२०॥ क्षयकस्य रतश्चा[illegible]
शतिः॥ वत्सरः षष्टिराख्याता नामतुल्य फलप्रदाः॥२१॥[illegible]
वीसौ कहते हैं॥ प्लवंग १ कीलक २ सौम्य ३ साधारण ४ [illegible] परः
धावी ६ प्रमाथ ७ आनंद ८ राक्षस ९ नल १० पिंगल ११ [illegible] प्रमाथ
१३ रौद्र १४ दुर्मुख १५ दुंदुभी १६ रुधिरोद्गारी १७ रक्ताक्ष १[illegible] क्रोधन १९ क्ष
यकृत् २० ॥ इति षष्टिसंवत्सरनामानि॥ मूल॥ मेषस्य वृश्चिक[illegible] शुक्रो वृष
तुलाधिपः॥ बुधः कन्यामिथुनयोः कर्कस्य पतिश्चंद्रमा॥२१॥ स्वामी मीनधन
जीवः शनिर्मकरकुंभयोः॥ सिंहस्याधिपतिः सूर्यः कथितो गणकोत्तमैः॥
२२॥ टीका॥ मेषराशि औ वृश्चिक राशिके स्वामी भौम॥ वृष तुला शुक्र क
न्या मिथुनके बुध कर्कके चंद्रमा मीन धनके गुरु मकर कुंभके शनि सिंह
के स्वामी सूर्य जानिये॥२२॥ मूल॥ कन्याराशिगतः हंसो तुंगे केतोश्च मिथुने स्मृता

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शी॰टी॰ ॥टीका॥ कंन्याकेपतिराऊ मिथुनकाकेतु ॥इतिराशिस्वरः॥मूल॥ कार्त्तिका
द्विगुणामासागतास्त्वतिथिभिर्युताः॥सप्तविंशतिभिर्न्नं विनताद्वेकसंयुताः
२४॥टीका॥ कातिककेगतमासद्विगुणोकीजे पखवातेलैकै तिथिजोरे॥
२८ तामेकोभागकीजे शेषअंकमे १ श्रोरजोरे ऋष्विनीसेगनिनद्दत्रजाने
२४॥मूल॥ राहुनीच धनष्टैव वकेतुस्तम्माच्च सप्तकः॥२५॥[illegible]॥ धनका
राहुनीचताकेसप्तमकेतु॥मूल॥ वारेरूपतिथौरुद्रा घटी[illegible] शैवच॥
एकत्रिंशत्पलंदद्यात्सूर्यसंक्रमणोभवेत्॥२५॥टीका॥ जो [illegible] निकलायो
चाहेतोपिछलेसालकी चाहियेोकिसी संक्रांतिके वारके [illegible] अंकचार
कोश्रौरतिथिमे ११ तिथबढावे श्रोरघरिनमे १५ घरी[illegible] पलनमे:
३१ पलमिलायकै भागपूर्वकशुद्धकरले इतोश्रोही सं[illegible]
य॥२५॥मूल॥ माघो ष्टमी सर्पूवलिनु उदितोयस्मा[illegible]
सूर्यमंगलेचततोवसेत्॥२६॥ उदितःपश्चिमेभागेन[illegible]
शाहसूर्येमध्येतुततःचालमितोभवेत्॥२७॥एकत्र[illegible]

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जविग्रहे॥ तीर्थयात्राविवाहेच शुक्रदोषोनविद्यते॥ [illegible]
हीनेमेंशुक्रपूर्वदिशामेंउदयहोताहै फिरढाई२॥मही[illegible]जाते
नहै फिरपूर्वदिशाउदयहोतहै॥२८॥जोएकगांउमेंवस[illegible]में
वनामानिये अथवामदुर्भिक्षमें राजविग्रहमेंविवाहतोवि[illegible]
त्राकेविषेमें शुक्रकादोषसन्मुखदाहिनेकामानिये॥२८॥[illegible] दोष
निर्णयः॥ मूल॥ दशार्द्राद्याश्वयत्तारा विशाखाद्यानपुंस[illegible]लतश्च
मूलाद्याःपुरुषाश्चतुर्दश॥२९॥ टीका॥ आर्द्रासे१०न[illegible]कीसंज्ञाहै
विशाखाआदि३नक्षत्रकीनपुंसकसंज्ञाहै मूलआदिदे[illegible]नक्षत्रकीपुरु
षसंज्ञाहै॥२९॥ मूल॥ स्त्रीपुंसयोर्महावृष्टिः स्त्रीनपुंसकयोःघ[illegible]॥ स्त्रीस्त्री
योःशीतलच्छायायोगापुरुषयोनच॥३०॥ टीका॥ आर्द्राआदिदे ९नक्षत्रये
वर्षाकेहै सोजोस्त्रीपुरुषयोगमेंलगेतोवर्षाअधिकहोय॥ औरस्त्रीनपुंस
कयोगमेंलगेतोथोडीहोय काहूंनवर्षे॥ औरजोस्त्रीस्त्रीकेयोगमेंलगेतोव
र्षाअधिकहोय बादरकीछांईबनीरहै॥३०॥ मूल॥ उदयास्तगतेशुक्रेवृ

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शी॰टी॰ घश्चवृष्टिकारकः॥ जलराशिस्थिते चंद्रे पदांते संक्रमेतथा॥३१॥ टीका॥
जनशुक्र उदयअस्त होय तो वर्षा अधिक होय॥ औरजो जलराशि का चंद्रमा
होय औरपदनके अंतमें संक्रांति परै तौ हूं मेघ वरषै॥३१॥ मूल॥ चलसंगार
कोवृष्टिर्निर्घातवृष्टिशनैश्चरे॥ वारिपूर्णा मही हत्वा पश्चात्संचरते गुरुः॥३४
ग टीका॥ जब मंगल की चाल हो तब मेघ वर्षै औरशनि का [illegible] उदय अस्त
होय तौ जहांतहां वर्षा होय औरतिनके पाछे गुरु हो [illegible] पूर्णपृथ्वी
के विषै महावृष्टि होय॥३२॥ मूल॥ वुधशुक्र समीपस्थः [illegible] का र्णवी
मही॥ तयोरंतर्गतं भानुः समुद्रमपि शोषयेत्॥३३॥ टीका [illegible] शुक्र [illegible]
क राशि के होय तौ संपूर्णपृथ्वी के विषै जल वहुत होइ [illegible] पशि
के वीचमें सूर्य परै तौ समुद्रहूको शोषै फिर वर्षा कहा [illegible]
भानोरग्रे भूमिपुत्रो जलशोषणकृज्जायते॥ भानोपश्चा [illegible]
भयम्॥३४॥ टीका॥ जो सूर्य के आगे मंगल होय तौ [illegible]
सो सब शोष लेत है औरसूर्य के पाछे होय तौ वर्षा [illegible]

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तिवर्षानन्दनं ॥ भेदाविग्रहचारफलं ॥ मूल ॥ कर्के [illegible]
चाद्दिवाकरे ॥ पूर्वेवापश्चिमेवापिद्वारंकुर्याच्छुभेश्म [illegible] ते
कुंभ सिंह मकर इनराशिनकेसूर्यहोयतो जो घर व [illegible] के
[illegible] वापश्चिमद्दिशाकीजियेतोसोश्रेष्ठ है ॥ ३५ ॥ मूल [illegible] ३७ ॥
केवललेचापियदाखि: ॥ गृहद्वारंतदाकुर्या इन संक्रा [illegible] त्तरदाक्षि
टीका ॥ जबकर्ककुंभमकरराशिनकेसूर्यहोयतो घर [illegible] वयदिमा
ण दिशाकीजै सोश्रेष्ठ है ॥ मूल ॥ धनमिथुनके [illegible] धनमि
नमान ॥ नकर्तव्यंतदागेहंकृतेदुःखमवाप्नुयात ॥ ३८ [illegible] ३८ ॥ इति
थुनकंन्यामीन इनराशिनकेसूर्यमेघ रवनावैतोदुःखहोय ॥ ३८ ॥ शश
ग्रहणारम्भफलं ॥ मूल ॥ यदैकमासेग्रहणंजायतेशशिसूर्ययोः ॥
तोपद्रवं येयांनितदाभयपरस्परं ॥ ३८ ॥ टीका ॥ जोएकमासविषेचंद्रसू
र्यका ग्रहणपरेतोओधतेराजाजालरिमेरे: ॥ ३८ ॥ मूल ॥ यस्तोदितो
चय तोचधान्यंपालनाशको ॥ सर्वेयस्तोचंद्रसूर्यौ दुर्भिक्षमरणप्रदौ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३९ ॥टीका॥ सूर्यचंद्रराहुकेतुकरिग्रहणहै ॥ फिरउग्रहहोनलगो पिश्चमसे
तौ धान्यकाअरुराजाकानाशकरै ॥ औरसर्वग्रस्तहोयमनुष्यनकोमृत्यु
भयहोय ॥३९॥ मूल ॥ उपरागोयदामेषेपीड्यंतेवह्वोजनाः ॥ कांबोजाश्च
किराताश्चपांचालाश्चकलिंगका ॥४०॥ टीका ॥ मेषराशिपैग्रहणहो
यतौ कांबोजदेशअरुकिरातदेशपांचालदेशके कलिं[illegible]केमनु
ष्यकोपीडाहोय ॥४०॥ मूल ॥ वृषेचग्रहणेपीडापशव[illegible]जनाः ॥
महांतोमनुजाश्चैववर्त्तपीड्यंतिचसर्वदा ॥४१॥ टीका ॥ [illegible]कोग्रह
णपरैतौपशुनकोपीडाहोय औरपथिनकोपीडाहो[illegible]मनुष्यन·
कोपीडा ॥४१॥ मूल ॥ रविचंद्रमसौग्रस्तौमिथुनेचव[illegible]वा·
न्हिकामत्स्याजमुनातटवासिनः ॥४२॥ टीका ॥ मिथु[illegible]
ग्रहणपरैतौ देवांगनाजोहै तिनकोपीडाहोय औ[illegible]
शोककोप्राप्तहोवै ॥ औरजोवान्हिकेदेशमत्स्यदेश[illegible]
जनोंकोपीडाहोय ॥४२॥ मूल ॥ कर्कटेग्रहणेपीड[illegible]

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ते॥ श्वेतरवर्वराणां च तद्राजत्पानिवासिनः॥ ४२॥ टी[illegible]
ए पर्‍ैतो श्वेतरवे र्ह्के औरसरवारदेश औरवमह्य दे[illegible] [illegible]तो
य॥ ४२॥ मूल॥ सिंहे च ग्रहणे पीडा सर्वेषां वनवासिना[illegible]
नां मनुजानां च जायते॥ ४४॥ टीका॥ जो सिंह राशी का ग्र[illegible] [illegible]
सिन को और राज औरराजपतल्प मनुष्यन को पीडा करे[illegible]
ल॥ कंन्यायां ग्रहणे पीडा त्रिपुराणां च शालिनां॥ कवी[illegible] [illegible] च जाय
ते पीडनं तदा॥ ४५॥ टीका॥ जो कंन्या राशि का ग्रहण परे[illegible] [illegible]पुकर देश
और थानन को और कवियन को और लेखन को पीडा हो[illegible] ॥ मूल॥
तुलायाम् सपरागे च नश्यंते चक्रकाकवीः॥ कोकनं च परा[illegible] च[illegible] [illegible]साधव
श्चयोः॥ ४६॥ टीका॥ जो तुला राशपर ग्रहण परैतो पश्चिण को काट चकादि
क और कोकन देश और कायथन को साधन को सत्यवादिन को पीडा है
य॥ मूल॥ वृश्चिके ग्रहणे पीडा सर्वजातश्च जायते॥ और ईद्र रस्प मद स्पचे
ल ज्ञो धेयकास्पच॥ ४७॥ टीका॥ वृश्चिक राशि पै ग्रहण परै तो सर्व जातिन

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शी॰टी॰ को॥ औदुंबरदेश औरचौल देशकेमनुष्यनकोपीडाहोय॥ ४७॥मूल॥ य
दापरागोचापेचलदामत्स्याचवाजिनः॥ विदेहमल्लपांचालपीड्यंतेभिषक्को
विदः॥ ४८॥टीका॥ धनराशिपरग्रहणपरेतो मत्स्यदेशको घोडनको॥
विदेहदेश मल्लदेश पांचालदेशकेवासिनको वैद्यपंडितनको पीडाहोय
अनभयहोय विदेहदेशजनकपुर॥ ४८॥मूल॥ मकरेग्रु [illegible] डानीचा
नांमंत्रवादिनां॥ स्थावरंजंगमानांच चित्रकूटस्थ मंत्र [illegible] ॥टीका॥
जोमकरराशिपरग्रहणपरे नीचलोगमंत्रवादी औरस्था [illegible] जोहै व
नादिकजंगमजोहै पशुनकोपीडाहोय॥ अनचित्रकूटके [illegible] कुंपीडा
होय॥ ४९॥मूल॥ कुंभेचैवोपरागेच पाश्चिमस्थेच लव्कै [illegible]
भेतःपीड्यंतेवक्रुधाभिदाः॥ ५०॥टीका॥ जोकुंभराशिन [illegible]
वैन औरपश्चिमदेशकेमनुष्यनकोपीडाहोय औरखे [illegible]
औरबर्बुरदेशकेमनुष्यनकोनानाप्रकारकाकष्टहोय [illegible]
है॥ ५१॥मूल॥ मीनेपरागेपीड्यंतेजलद्रव्याणिसाग [illegible]

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लोकापि चपद्यापुति हय: ॥ ५१ ॥ टीका ॥ मीनराशि [illegible]
जीव श्रीरजलाशय उपार्जित दिव्यते जिनकी सजी [illegible] आते
जननकोपीडाहोय ॥ ५२ ॥ अतियहणफलं ॥ मूलं ॥ द [illegible] ॥
नीहारेचभयंकर: ॥ विद्युत्पातेग्निदाहे चपरिवेषश्च [illegible] मेघो
रधाहोग्निभयंकुर्यान्निर्घातेनृपभीतिद: ॥ कुंडाकार [illegible] लाते
भीतिप्रदायके ॥ ५३ ॥ ग्रहयुद्धं राजयुद्धं केतोर्दृष्टे तथैव [illegible] ॥ गलाते
महावृष्टि: सर्वदोषविनाशिनी ॥ ५४ ॥ टीका ॥ अब देख [illegible] कहत है
जो आकाशतें घरविषैं विनावायुके योग मेघ [illegible] मनुष्यन
की क्षयहोय राजनकोभयहोय ॥ औरविनावारविजली [illegible] तो अ
ग्निकाभयहोय औरपरिवेषकहैं सूर्यकेमंडलऊपर [illegible] आसचक्र
सोदीखैतो अग्निभयहोय रोगहोय ॥ ५५ ॥ जोदिग्दाहहोयतो जोदिशा
नविषे किंचितरात्रगये पर्यंत आग्निलागी कैसी अरुणताईषाइतो ॥
अयवाता रवज्र सा ऊगैतो अग्निभयहोय औरनिर्घातकहै सकावा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शी॰टी॰ दरगाजैंतौ राजानकाभयहोय॥ औरजंझावायु चलेमहाप्रचंडशब्दजा सोंवनादिकटूटैंतौ चोरनकाभयहोय॥५४॥इतिधूलिवर्षो उत्पातफ लं॥मूल॥ अश्विन्यामाद्र्दितेकेतौ अश्माप्यालकपालकं॥भरण्यांचकिरा तेशकृत्तिकायांकलिंगकं॥५५॥टीका॥ जोअश्विनीपैकेतहोयतौ [illegible]का केराजाकोपीडाकरै भरणीपैउदयहोयतौ किरातदेशके[illegible]कोपी डाकरै॥कृत्तिकापैहोयतौ कलिंगदेशकेराजाकोपीडा[illegible]॥मूल रोहिण्यांसूरसेनेसौ म्यौकाशीनराधिपं॥आर्द्राजल[illegible]समेके सौपुनर्वसौ॥५६॥टीका॥ रोहिणीपैकेतहोयतौसूरसेन[illegible]कोपीडा करै मृगशिरकेहोयतौ काशीकेराजाकोपीडाकरे॥[illegible]होयतौ- जलकेजीवनकोपीडै॥५६॥मूल॥पुष्येचमगधाधी[illegible] काधिपं॥मघायांवंगनाथंचपूर्वायांपांडुनायकं॥प[illegible] यतौमगधदेशकोपीडै॥अश्लेषाकेहोयतौकाशीकेरा[illegible] होयतौवंगदेशकेराजाकोपीडै॥पूर्वाकेहोयतौपां[illegible]

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पीडै ॥ ५७ ॥ मूल ॥ उत्तुयिमांनस्पंहंतिद्ववनराफाल्गु [illegible]
पतेहस्ताचित्रायांकुलभूमजां ॥ ५८ ॥ टीका ॥ उत्तरा [illegible] तो
राजाकोपीडै ॥ हस्तमेंदंडवनकेराजाकोपीडै चित्रा [illegible]
कोपीडै ॥ ५८ ॥ मूल ॥ स्वात्यांकाश्मीरकांबोजभूपतीना [illegible]
त्वाकुकुरदेशानां विशाखायां विनाशकः ॥ ५९ ॥ टीका [illegible] किहे
यतो काश्मीरकंबोजदेशपतिकाविनाशकरै जो [illegible] यतो के
इक्ष्वाकदेशकोरवदेशकेराजानकोनाशकरै ॥ ५९ [illegible] यो
स्वनाशं च साधेभौमतथेदके ॥ ध्वंधमद्रकनाथं च मूल [illegible] मनिष्टि
तं ॥ ६० ॥ टीका ॥ अनुराधातेउग्रदेशकेराजानकोनाशकरै [illegible] शकेहो
यतो सर्वपृथ्वीकेपतिकोपीडै ॥ मूलके होयतो ध्वंधमद्रकदेशकेराजा
कोपीडै ॥ ६० ॥ मूल ॥ पूर्वाषाढेकाशिराजउत्तराषाढकेतथा ॥ पौंड्रयशैव
वैदेशाश्रवणोकेनाशेपचरं ॥ ६१ ॥ टीका ॥ पूर्वाषाढके होयतो काशीकेरा-
जाकोपीडै उत्तराषाढके होयतो पौंड्रदेशशैवदेश ओरजनकपुरकेरा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शी॰टी॰

जाकोपीडाकरे॥ श्रावणके होयतौ कैकयदेशके राजाकोपीडाकरै॥ मू
ल॥ वसौ पंचनतथाधीशंवनतौ सिंहले ष्वरौ॥ पूर्वाभाद्रपदा वंगा नैमिषे श
तयोत्तरं॥ टीका॥ धनिष्ठाके होयतौ पंचनद देशके राजाकोपीडै॥ श
तभिषाके होयतौ नैमिषारण्यके राजाकोपीडाकरै॥ तथा श्रीरलहउत्तरदिशा
के देशपतिनकोपीडाकरै॥ मूल॥ रेवत्या मुदितो केतौ किं [illegible] ॥ तिवे
घात॥ धूम्राकारः सपुच्छस्तवे तौ विघ्नस्य पीडकः॥ ६३ [illegible] ॥ श
तीकेकेतउदयहोयतौ किरातदेशके राजाकोपीडै॥ श्री [illegible] ॥ ६२॥ टी
धूम्राकाराकारपूंछसी होय ताकोपूछरता राकह [illegible] तौ प्रह
पमेउदयकरैतौ समस्तविघ्नकोपीडाकरै॥ इतिकेतुद [illegible] भव
मानभौमार्किवारेषु कार्तिके द्युतयो भवेत्॥ आयुष्मान
नाशोपमृत्युनय॥ ६४॥ टीका॥ कार्तिककी जो अमावा [illegible]
वारहोय औरवातिनतनआयुष्मानजोगहोयतौ [illegible]
पमृत्युद्रक उत्पात अधिक होय औरपगुनकादायहो [illegible]

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गोचमेषाद्याश्चत्वारःस्मृतानिशाकराः ॥ तेविनामिथु [illegible] ातो
घेः ॥ ६५ ॥ टीका ॥ धनमकरमेषवृषमिथुनकर्कए [illegible]
है ॥ ६५ ॥ मूल ॥ शीर्षोदयाश्चचत्वारःसिंहाद्याःकुं [illegible]
मीनलग्नवलीरात्रौतथादिने ॥ तदर्द्धंद्विगुणंकृत्वाराम [illegible]
मनिमिश्र्यहरेज्जांशेशेषांकेचलभतेफलं ॥ ६७ ॥ टीका ॥ [illegible] ॥ [illegible] ही
रकै ४ राशि जो कुंभइनकी शीर्षोदयसंज्ञाहै ॥ मीन [illegible] मे रह
वानहै ॥ ६६ ॥ जे हीलगनमे जोनदा [illegible] लगो तिसको [illegible] शिपी [illegible]
३ घटायकेफिर ७ कोभागहरिये जोशेषबचेतोफल [illegible]
मूल ॥ चंद्रवेद्रचन्द्रभिंनंतुमिंनंतुपंचवाणयोः ॥ रामेरसेच [illegible] सूक्ष्म
सूक्ष्मप्रकीर्तिता ॥ ६८ ॥ टीका ॥ जो १ ॥ ४ ॥ शेषबचेतोदुर्भिंनकाहिये और
२ ॥ ५ ॥ वचेतोसुभिंक्षहोय और ॥ ३ ॥ ६ ॥ बचेतोसाधारणमानरहे और
जोशून्यमे ० बचेतोबजारनमेसकलवस्तुकोतारहे औरमंदनीकमसूक्ष्म
वे ॥ ६८ ॥ इतिमयूख [illegible] ॥ मूल ॥ [illegible]तीचारेगतेसोम्यक्रूरेवक्रत्वमागते ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शी॰टी॰ हाहाभूतं जगत्सर्वं रुंडमुंडं च जायते ॥ ६९ ॥ टीका ॥ जो सौम्यग्रह स्वाती
वारमें होय और पापग्रह वक्री होय तौ सर्व संसार में हाहाकार होय और
युद्ध तें रुंडमुंड गिरैं ॥ ६९ ॥ इति स्वाती चारफलम् ॥ मूल ॥ मेघसंभ
कारणं चैत्रे व दुःखफलं प्रदा। वैशाखे रत्नलाभश्च ज्येष्ठे च मरणं ध्रु
वं ॥ ७० ॥ टीका ॥ जो चैत्रमें दीत्ता लेय तौ बहुत दुःख होय वैशा[खमें]
रत्नलाभ होय ज्येष्ठमें मरण होय ॥ ७० ॥ मूल ॥ आषाढे [illegible] श्रा[वणे] [illegible]
श्रावणे च शुभावहं ॥ प्रजाहानिर्भाद्रपदे सर्वत्र सु[खम्] [illegible] ॥ ७१ ॥ टी
का ॥ आषाढमें दीत्ता लेय तौ भ्राताका नाश करै। श्रावण[में] [illegible] तौ श्रेष्ठ
है भादौमें दीत्ता लेय तौ प्रजाका नाश होय ॥ आश्विन[में] [illegible]
की सुख होय ॥ ७२ ॥ मूल ॥ कार्तिके धनवृद्धिः स्यान्मा[र्गशीर्षे] [illegible]
पौषे तु ज्ञानहानिः स्यान्माघे मेधाविवर्धनं ॥ ७२ [illegible]
[दी]त्ता लेय तौ धनकी वृद्धि होय ॥ अगहनमें मंत्र सुने [illegible]
सुने तौ ज्ञान होय ॥ माघमें सुने तौ ज्ञानकी वृद्धि हो[य] [illegible]

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

णेष्वखौ भाग्यं सर्वेत्र परिकीर्तिता ॥ दीक्षाकर्म फ [illegible]
मास्तुभं ॥ ७३ ॥ टीका ॥ फाल्गुणमे दीक्षालेयतो [illegible]
७३ ॥ मूल ॥ मासं शुक्रबुधादित्याः सार्द्धं चंद्रद्वि [illegible]
पक्षजीवब्दं सार्द्धं वर्षद्वयं शनि ॥ राहुकेतू सदा भ [illegible]
७५ ॥ टीका ॥ शुक्र बुध सूर्य ये ग्रह १ मास एक राशि [illegible] ॥ [illegible]
द्रमा २॥ दिन एक राशिपै वर्षद्वयं शनि रहत है और [illegible] मा रह
ना एक राशिपै ठहरते है और बृहस्पति १ वर्ष [illegible] राशिपै रह
तहै शनिश्चर २॥ वर्ष एक राशिपै रहत है राहु [illegible] वर्ष [illegible]
तहै ॥ इति ग्रह राशी [illegible] फलम् ॥ मूल ॥ मये [illegible] [illegible] पनो
[illegible] मत्युदं ४ वाही नाम [illegible] ॥ ४ ॥ [illegible] जा [illegible]
शायेत ॥ [illegible] २ [illegible] २ [illegible] ॥ चु
[illegible] विचारण्णो [illegible] ॥ १ ॥ इति श्री काशी
नाथ [illegible] शी [illegible] भाषा टीका [illegible] नाम [illegible] चतुर्थ प्रक [illegible] ॥ संव

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शी॰टी॰ तु॥ ९९॥ २०॥ लिखितंवैस्नवमंगलदासजी॥ कारणदोवलुनाम
ब्राह्मणनेलिखोया॥ शुभमस्तु॥ राम॥ राम॥ राम॥ राम॥ राम॥ राम॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ॐ॥ सवस्तकमध्येत्र स्तीस्ताकसंभव:
सर्वेनस्थतीस्ती॥ नस्तीसवस्थते॥१॥
चतुर्थेदशरागं च॥ अष्ट राग चर्पचमे॥ षष्ठे
चतुर्दश च ४ अरागं चसप्तमे॥ अष्टमे
कन्तु॥ नवमे ग्रहराद्धयं॥ दश
यात्र७ सप्तस्नानकर्म॥ श्रा.गा
सुललिते; नामे; सुधामध्येते; दी
नारु विप्रले; दजे; पंचमे ने; सर्वे
रकातया ज्ञानसमालवित्त इत्यं॥
जगतिसस्मारना गाहुर्य ७ श्राद्धुल

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ओं श्री गणेशाय नमः विमल
स्प ह्र तनु मनुं लोभ पव रस्य नारी
जो जो भावे स्वाम दृष्टि जिती
स्प त स्पता स्याधवि धी पपे रव
स्प हानी ॥२॥ मेष र व ज्ञ के भावे ... दम:
वणा तुला मकरौ मिथुन कन्या ... शवि ... ध
कर्क स्प पती चंद्रमा ॥८॥ स्प मान भाव जौ
कौ सनमकर कं मयो १२ संघ स्पोत पती
स्येक यंते गणको तमेषा ३ स्मौ कारमम

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

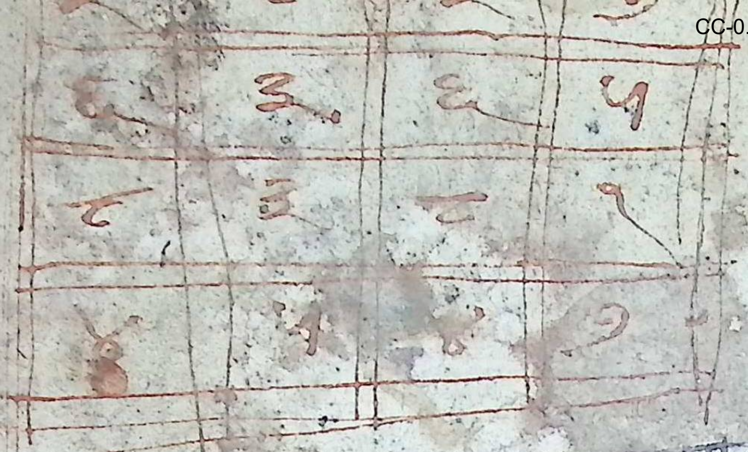

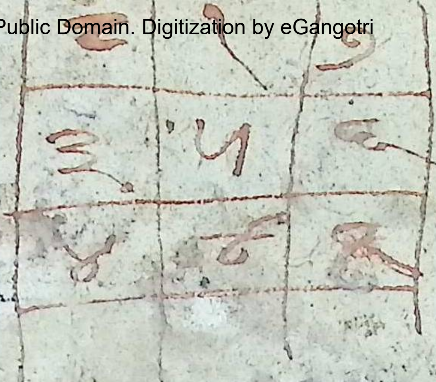

सप्तनयागिकोषतंद्रौजौनवे [illegible]प
तुर्तवादति।रसश्चवेदाघटिकद्व
वेश्रबूंदूयजकार्यसिद्धिः१ः२।

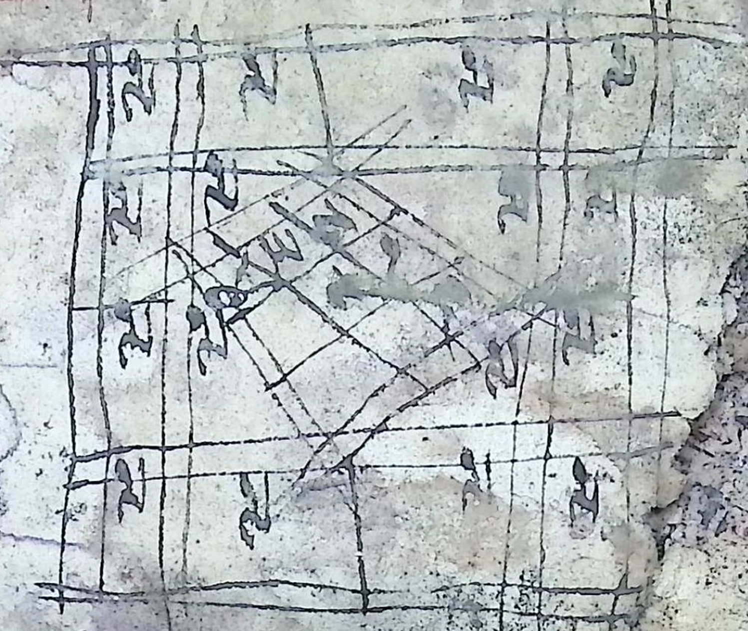

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

जन्मेर ... [illegible] ॥ ... पातो ... चनवमर ... पच ॥ श्री ... [illegible] पादं
पादयु ॥ चतुर्थ ... लोहापादोद दो ॥ र ॥ ... नापि ... [illegible]
तलदानीविनश्यति ; चौरनाग ... [illegible] ... ॥
... तीथा ... नामा ... [illegible]
... पाते ... चलन्ति ... ॥ राम ... [illegible]
... [illegible] ॥ ता ... [illegible]
... [illegible] ॥ ... [illegible]

...स्वलिगतेपा...रसैसंयुतं श्रीमेघुमरशिवपदहनं
...गाहिस्वावेदथुस्स्फुरद्दिद्दसुपात्सुसंग्रामसंग्रामभीमपात्रो
...कष्टादीसंस्थापनेत्रःस्वर्धनन्तेगीणनादीनन
...रनीरमधेपयुस्तपसी पूर्वीयुष्मभः दक्षाणुनिर
...मः ... वाधिष्टमस्तम

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

SCANNED

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh